

# THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

[WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC](http://WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC)

## FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

**If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.**

**-The TFIC Team.**



श्रीमान् दानवीर, तीर्थभक्त-शिरोमणि, रा. ब., रा. भूषण, रावराजा,  
राज्यरत्न, जैन-दिवाकर, दि. जैन समाज के अनभिषिक्त  
सम्राट् श्रीमन्त सेठ सर हुकमचन्दजी साहब के पौत्र,—

श्रीमन्त सेठ मशीरबहादुर जैनरत्न राजकुमारसिंहजी साहब  
M A, LL B., F. R. E. S, के सुपुत्र

स्वर्गीय वीरेन्द्रकुमारसिंहजी

की

पवित्र स्मृति में

भातलीस श्रुति-सर्वांग केंद्र  
ज य पु ह





# — ( सिद्ध चक्र ) हौं मंडल विधान ) —

भारतीय श्रुति-दर्शन केन्द्र  
जयपुर

प्राक्कथन.

श्रावक के अनेक धार्मिक कृत्यों में से पूजा और दान को आगम मे मुख्य बताया है । इसके लिये आचार्यप्रवर श्री कुन्दकुन्दस्वामीने रयणसार में कहा है कि:—

दायां पूजा मुखं सावयधम्मे वा सावया तेण विणा ।  
भाणाज्भयगां मुखं जइधम्मं वा तं विणा तहा सोवि ॥१६॥

अर्थात्—श्रावक धर्म में दान और पूजा मुख्य हैं, इनके बिना वह श्रावक नहीं है । यति धर्म में ध्यान और अध्ययन प्रधान है । इनके बिना वह यति नहीं है ।

श्री सोमदेवसूरी कहते हैं कि:—

देवपूजामनिर्माय मुनीननुपचर्य च  
यो भुञ्जीत गृहस्थः सन् स भुञ्जीत परं तमः ॥ यश. आ. ८

भारतीय श्रुति-दर्शन केन्द्र  
पुस्तक सं. 1086  
मूल्य :  
जयपुर

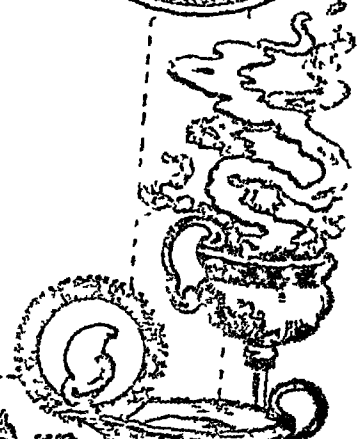
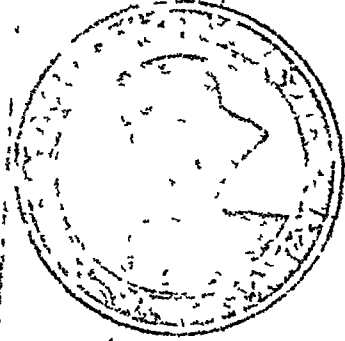
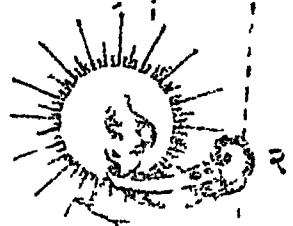


भावार्थः— जो गृहस्थ होकर बिना देवपूजा किये और मुनियों को दान दिये बिना ही यदि भोजन करते तो वह घोर अन्धकार का भागी होता है ।

भगवान् जिनमेन स्वामीने भी देवपूजा को आर्यपट्टक मे गिनाकर वह आर्योंका मुख्य एवं आवश्यक कार्य बताया है ।

प्रसन्नता की बात है कि स्व एव परका यह परम मंगलकारक कार्य सदा से अब तक बराबर चला आ रहा है । यद्यपि यह सत्य है कि ज्यों ज्यों समाज का दास होता गया है और उसके वैभव मे अन्तर पड़ना गया है त्यों त्यों उसके अन्य धार्मिक कार्यों के साथ २ इस विषय मे भी पर्याप्त न्यूनता आगई है, फिर भी हि. जैन समाज मे यह अभी तक चला आरहा है और प्रायः सर्वत्र ही न्यूनाधिक रूप मे पाया जाता है यह अत्यन्त हर्ष का विषय है ।

प्रायः भारत के सभी भागो मे विखरी पडो या पाई जाने वालो मूर्तियों आदि ऐतिहासिक एव पुरातत्त्व सम्बन्धी सामग्रो का सन्तुलितिक के द्वारा पर्याप्त पर्यवेक्षण करने पर यह विदित हुए बिना नही रह सकता कि हि. जैन धर्म का यह देव पूजन से सम्बन्ध रखने वाला विषय प्राचीनतम होने के सिवाय भारत में बहुत कालतक व्यापक रूप से सम्मान्य रह चुका है जिसकी कि तथ्यता को अच्छी तरह सिद्ध कर सकने वाले प्रमाणो का देव दुर्विपाक अथवा तद्विषयक रुचिमान् श्रीमानो और धीमानो

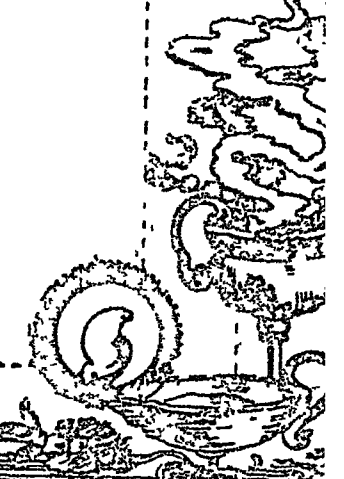
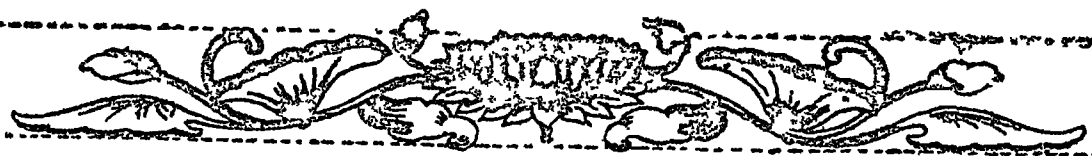
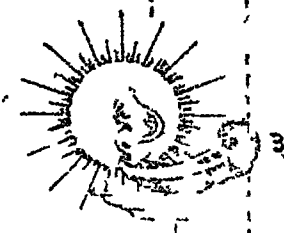
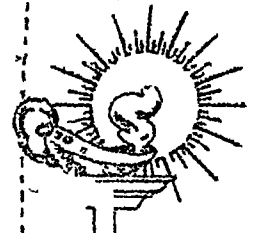


की विरलता के कारण भूगर्भ से बाहर दृश्य जगत् में आना भी असंभव नहीं तो असंभव सरीखा अवश्य दिखाई दे रहा है; फिर भी जो कुछ दिखाई में आ चुका है या आ रहा है उससे यह स्पष्ट हुए बिना नहीं रहता कि जिन भक्ति और पूजा का मार्ग सदा चला जाय इसके लिये अनेकों श्रीमानों और भूपतियों ने प्राचीन समय में अपरिमित व्यय करके उसके आयतनों—मूर्तियों और मन्दिरों का निर्माण किया था।

वास्तव में जिनेन्द्र भगवान् की पूजा, भक्ति, आराधना या उपासना ऐसी ही वस्तु है जो कि परिणामों में वीतरागता के साथ २ परम शान्ति का प्रदान तो करती ही है साथ ही विशिष्ट पुण्यबन्ध के द्वारा इस भव तथा पर भव में महान् कल्याणों एवं अभ्युदयों का भी प्रसव किया करती है।

शास्त्रों में पूजन के पांच भेद बताये गये हैं:—नित्य, आष्टाहिक, चतुर्मुख, कल्पद्रुम, और इन्द्रध्वज। प्रस्तुत “सिद्ध चक्र मङ्गल विधान” नित्य पूजा के ही एक प्रकार से सम्बन्ध रखता है।

यद्यपि यह विधान प्रायः आष्टाहिक पर्व के दिनों में ही किया जाता है किन्तु इसका विषय—सम्बन्ध आष्टाहिक पूजा के विषय भूत नन्दाश्वर द्वीप सम्बन्धी ५२ चैत्यालयों से सर्वथा भिन्न सिद्ध भगवान् के गुणों से है जो कि नित्य पूजा से सम्बन्धित है। आष्टाहिक पर्व के दिनों में कालकृत पवित्रता के सिवाय इसके किये जाने का संभवतः कारण यह भी है कि मैनासुन्दरी ने इन्हीं दिनों में इस विधान को करके महान् फल प्राप्त किया था।



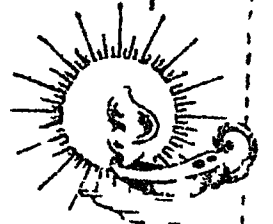
— सिद्ध चक्र

हीं

मंडल विधान —

प्रायः भारत वर्ष में इस विधान का सर्वत्र जैन समाज में प्रचार पाया जाता है। भालवा तथा खासकर इन्दौर में तो प्रतिवर्ष ही प्रायः यह होता रहता है और कभी २ तो बहुत ही उच्च समारोह के साथ हुआ करता है। इसी वर्ष के आषाढ मास में दि. जैन समाज के अनभिषिक्त सम्राट् श्रीमन्त सेठ दा. वी. ती. शि. रा. व. रा. भू. रा. रा. रा. र. जैन दिवाकर श्रीमान् सर सेठ हुकमचन्द्रजी सा. की तरफ से कितने बड़े और सुन्दर समारोह के साथ यह विधान मनाया गया था उसकी महत्ता का अनुभव प्रत्यक्ष दृष्टा ही कर सकते हैं जिसको कि देखने के लिये बाहर की भी जनता करीब १५ हजार की सख्या में उपस्थित हुई थी और जब कि उपस्थित समाज के सिवाय दि. जैन समाज की सभी भोजनशालाओं तथा स्थानीय जैन अजैन सभी भोजनालयों में आप की तरफ से भोजन कराया गया था। यह तो एक असाधारण समारोह था परन्तु अन्य श्रीमानों के द्वारा भी बहुत कुछ समारोह पूर्वक यहां यह विधान होता ही रहता है। ऐसे अवसरों पर इस विधान की शुद्ध मुद्रित प्रतियों की आवश्यकता का अनेक बार अनुभव किया गया है। अतएव इस को मुद्रित कराकर प्रकाशित किया जा रहा है।

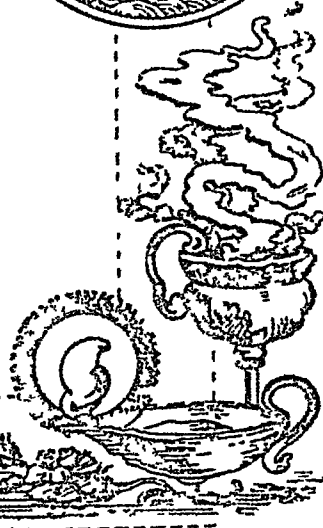
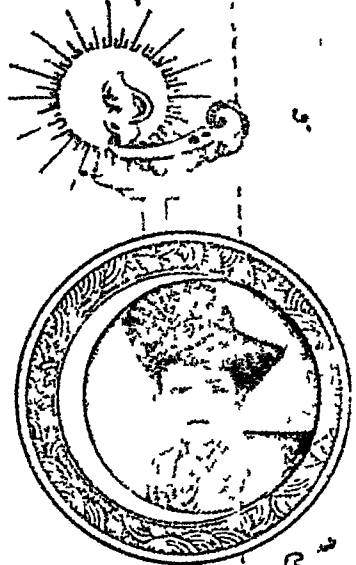
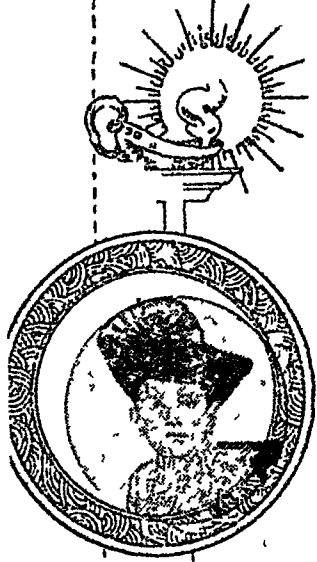
यद्यपि कुछ वर्ष पहले सूरत से स्व. कविवर सतलालजी कृत एक सिद्ध चक्र मंडल विधान छप कर प्रकाशित हो चुका है। परन्तु वह संस्कृत नहीं, हिन्दी है। संस्कृत का यह विधान जहां तक हम समझते हैं अभी तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुआ है।



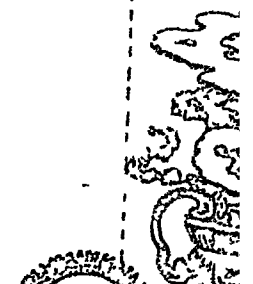
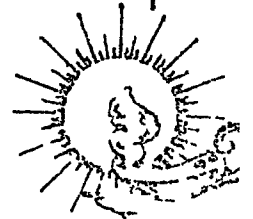
# सिद्ध चक्र ही मंडलविधान

यह विधान उपर्युक्त अनेकोपाधि विभूषित रावराजा सर श्रीमन्त सेठ हुकमचन्दजी सा. वं. पौत्र एव मशीर बहादुर जैनरत्न श्रीमन्त सेठ राजकुमारसिंहजी सा M. A., L. D. B के पुत्र स्व वीरेन्द्रकुमारसिंहजी की स्मृति में उनके माता-पिता द्वारा प्रकाशित हो रहा है. जोकि इस विषय के खास रुचिमान् है। क्योंकि श्रीमान् भैया सा ( राजकुमारसिंहजी सा. ) पूजन के खास प्रेमी है; इतनाही नहीं बल्कि आपका यह नियम है कि किसी खास प्रतिबन्ध के बिना इन्दौर में रहते हुए बिना पूजन किये कभी भोजन नहीं करते। आपने अपने गृह चैत्यालय में अपनी रुचि के अनुसार विशालकाय एव अत्यन्त मनोहर श्री १००८ चन्द्रप्रभु भगवान् की तथा एक सिद्ध भगवान् की प्रतिमा भी विराजमान करवाई है। और आप वहां नित्य ही पूजन किया करते है। आपके ही समान आपकी धर्मपत्नी [ लाडी सा. ] श्रीमती साहित्य-विशारदा सौ. प्रेमकुमारीजी सा भी सभी गृहस्थी के कार्यों में कुशल एव बुद्धिमती होने के सिवाय धर्म-रोचिष्णु है। आप दोनों ही की रुचि और इच्छा के अनुसार यह विधान प्रकाशित हो रहा है।

स्व. चि. वीरेन्द्रकुमारसिंहजी का जन्म श्रावण कृ. ४ स. १९९१ ता ३०-७-३४ और स्वर्गवास आषाढ शु. २ सं. १९९८ को हुआ। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आपका इलाज अच्छे से अच्छा और अपरिमित व्यय करके जो कुछ भी हो सकता था किया गया, किन्तु अत्यन्त दुःख के साथ कहना पड़ता है कि वैद्यों, हकीमों और डॉक्टरों के सभी उपाय चिर प्रयत्न करने पर भी व्यर्थ ही गये और आपने सबके



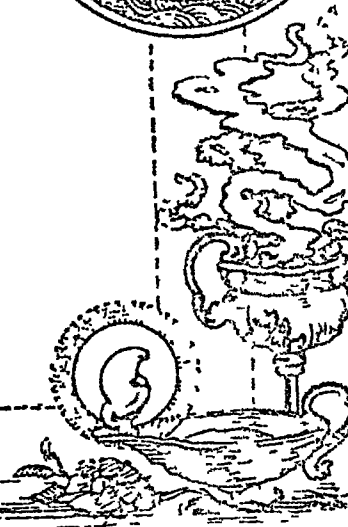
सामने देखते २ ता. २६-६-४१ की काल रात्रि में इन्द्रभवन को सदाके लिये सूना कर दिया। दादी रोती रह गई, बाबा हताश होकर हा हा करते ही रह गये, माता कुछ क्षण तक निश्चेष्ट और स्तब्ध रही और उसके बाद मूर्छित होकर गिरगई, पिता दहाड मारकर गिरगये और गुणों को याद कर २ के रोते ही रह गये, भाई वन्धु और दूसरे सभी स्नेही किकर्तव्य विमूढ हो गये। मतलब यह कि यह मर्त्यलोक का इन्द्रभवन क्षणभर में शोक का सागर बन गया और हाहाकार से सर्वत्र लुब्ध होगया। परन्तु क्या किया जा सकता था। बाल युवा वृद्ध. सारोग नीरोग, राजा रक, सज्जन दुर्जन आदि सभी को समान दृष्टि से देखने वाले अर्थतः विषमदृष्टि किन्तु नाम से समदृष्टि—यमराज की वक्र दृष्टि में रच मात्र भी अंतर डाल सकने वाला उपाय, क्या अनन्तबल के धारक, सम्पूर्ण नरों सुरों और असुरों के द्वारा वन्द्य, त्रिलोकी पति तीर्थकर भगवान् भी प्राप्त कर सके है ? नहीं। अतएव इस अवसरपर भी सबको हाथ मलते ही रह जाना पड़ा और वह इन्द्रभवन की कली असमय—अत्यल्प काल में ही सदा के लिये मुरझा गई। जिनको जिस तरह भी मालुम हुआ उन सभीने तार चिट्ठी या समाचार पत्रों के द्वारा कुटुम्बियोंके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए स्वर्गीय आत्मा की सद्गति के लिये सद्भावना प्रकट की। बहुत से सज्जनोने प्रत्यक्ष उपस्थित होकर और बहुतसोंने परोक्षरूप से तारों या चिट्ठियों के द्वारा शोकाश्रुओं को प्रवाहित किया। परन्तु इससे क्या हो सकता था। घटित दुर्घटना का विघटन तो असभव ही था।



स्व. वीरेन्द्रकुमार बालक होने पर भी सभी भाइयों में बुद्धिमान स्नेही सरलपरिणामी मृदुभाषी अत्यन्त सुन्दर उदारहृदय भाग्यशाली और होनहार थे। उनकी स्मृति के लिये ही यह पूजनग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है जो कि स्वयं मंगलरूप है और इसके अनुसार पूजन में प्रवृत्ति करने वालों के अनन्त पापका विध्वंस एवं पुण्यराशि का संचय करने वाला है।

प्रस्तुत विधान की प्रेस कापी एक ही प्रति पर संकीर्ण है जो कि इन्दौर के दि. जैन उदासीनाश्रम में स्थित अमर ग्रन्थालय से हमको प्राप्त हो सकी थी। इन्दौर के अन्य मन्दिरों में भी इसकी प्रतियाँ हैं परन्तु वे सब अमर ग्रन्थालय की पुस्तक पर से ही लिखी गई है। जिमपर से हमने प्रेस कापी की है, यद्यपि वह जगह २ शुद्ध भी की गई है, फिर भी पर्याप्त अशुद्ध है। हमसे जहाँतक भी हो सका है उसको शुद्ध करके ही प्रेस कापी करने का प्रयत्न किया है फिर भी इसमें जो कुछ अशुद्धियाँ रह गई हैं या हमसे ठीक नहीं हो सकी है हम उनके लिये पाठकों से क्षमा चाहते हैं; और विद्वानों से प्रार्थना करते हैं कि वे उनको शुद्ध एवं ठीक कर लेने की कृपा करें।

पाठक महानुभाव विधान को पढ़कर स्वयं समझ सकेंगे कि वह किसी एक विद्वान् की सम्पूर्ण कृति न होकर एक संग्रहीत पाठ है; जिसके कि कर्ता भद्वरक श्री शुभचन्द्रजी है।



सिद्ध चक्र

हैं

मंडल विधान

प्रस्तुत पाठ में एक ही जयमाला दो पूजनों में पाई जाती थी हमने वैसा न करके श्री १०८ आचार्य प्रवर पूज्यपाद स्वामी कृत सिद्धस्तोत्र को उस जयमाला की जगह रख दिया है। और उसका हिन्दी आशय भी अन्य जयमालाओंकी तरह हमने नहीं लिखा है। उसकी जगह हमने उक्त सिद्धस्तोत्र का वा. जुगलकिशोरजी सा. मुस्तार कृत पद्यानुवाद ही रखदिया है जो कि प्रायः सुन्दर है। इसके लिये हम मुस्तार सा. के आभारी हैं।

आठवीं पूजा के जितने मंत्र हैं वे सब महापरिडत आशाधरजी कृत सहस्रनाम के आधार पर ही हैं। इन नामों का अर्थ समझने में प्रायः विद्वानों को भी कठिनता प्रतीत होती थी, अतएव बम्बई के श्री १०५ ऐलक पन्नालाल दि. जैन सरस्वती भवन से प्राप्त श्री श्रुतसागर सूत्रेकृत प्राचीन संस्कृत टीका के आधार पर हमने ऐसे शब्दों की निरुक्ति और अर्थ देदिया है। कुछ महानुभावों की इच्छा थी कि आठवीं पूजा के मंत्रों को भगवज्जिनसेनाचार्यकृत सहस्रनाम के द्वारा परिवर्तित करदेना चाहिये। उनके सतोष के लिये भ. जिनसेनाचार्य के सहस्रनामगर्भित मंत्र भी अन्त में देदिये गये हैं। अतएव इस पाठ में आठवीं पूजा का मंत्र भाग दुहरा हो गया है। पूजन करने वाले सज्जनों को इनमें से यथारुचि किसी भी एक पाठ का उपयोग करलेना चाहिये।

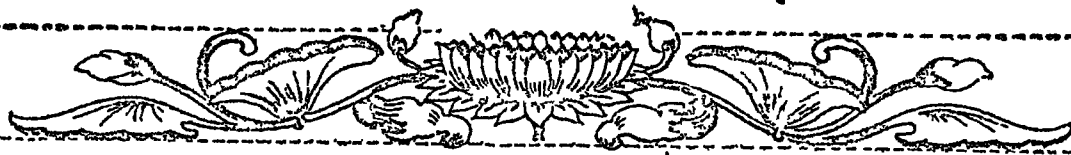
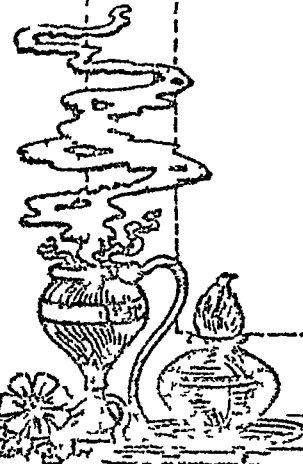
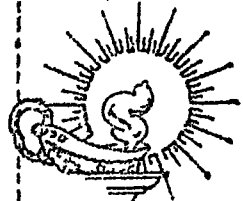




यद्यपि संशोधन करने में हमने पूरी सावधानी रखी है फिर भी कहीं-से हमने सदेहवश जैसा का तैसा भी पाठ छोड़ दिया है। इसके सिवाय हमारे अज्ञान, प्रमाद, अथवा दृष्टिदोष से भी जो अशुद्धियां रह गई हों या गलतियां हो गई हों उनके लिये पाठकों से हम पुनः क्षमा मागते हैं और विद्वानों से नम्रतापूर्वक उनका संशोधन कर लेने की प्रार्थना भी करते हैं।

प्रकृत पाठ के सम्पादन में ऊपर लिखे अनुसार बम्बई के श्री. १०५ ए. प. दि. जैन सरस्वती भवन के सिवाय इन्दौर के उदासीनाश्रम के अमर ग्रन्थालय तथा श्री सेठ माणिकचन्द्र मगनीरामजी को गोट के श्री १००८ शान्तिनाथ चैत्यालय दीतवारा के ग्रन्थभंडार से भी हमको यथावश्यक ग्रन्थसामग्री प्राप्त हुई है। अतएव हम उन ग्रन्थभंडारों और उनके अधिकारियों के अत्यन्त आभारी हैं।

पूजन का कुछ भाग बम्बई में भी छपा है वहांपर प्रेस की सुव्यवस्था करानेमें श्रीयुत पं. नाथूरामजी प्रेमी से हमको बहुत सहायता प्राप्त हुई तथा श्रीयुत पं. रामप्रसादजी शास्त्री से हमको पूजन के कुछ अन्तिम भाग के संशोधन आदि के लिये सहयोग प्राप्त हुआ है—क्योंकि हमारे बम्बई से इन्दौर चले आने पर उस भाग का संशोधन आपने ही किया है, अतएव दोनों सज्जनों के भी हम अत्यन्त आभारी हैं।



शिद्ध चक्र

हैं

मंडल विधान

मंडल की रचना के सम्बन्ध में इतना कह देना ही पर्याप्त है कि इन्दौर में अनेक प्रकार से इसकी रचना हुआ करती है, उनमेंसे यहांपर स्थानीय मारवाड़ी मन्दिर के अधिकारियों के सांजन्य से प्राप्त चित्र के आधार पर एक शिखराकार रचना का व्लाक तयार कराकर चित्र दिया जा रहा है. फिर भी जो सज्जन परिमंडल—गोल आकार में चाहें उन्हें वैसा बना लेना चाहिये और यथाविधि पूजन करना चाहिये ।

पूजन की सामग्री में एक व्यक्ति के लिये कम से कम लगभग तोस सेर अक्षत और करीब २ उतने ही पुष्प तथा दो हजार चालीस श्रोफल लगते हैं. दूसरी सामग्री भी इसी अनुमान से समझ लेनी चाहिये ।

हम यहांपर प्रकाशक महोदय की उस तीव्र पुण्यानुबन्धिनी सद्भावना की हार्दिक सराहना करते हैं जिसके कि कारण आजकल कागज की असाधारण महंगाई ही नहीं दुर्मिलता के होते हुए भी यह प्रकाशित हो रहा है । हम आशा करते हैं कि धर्मात्मा भव्य पुरुष इससे यथेष्ट लाभ लेकर प्रकाशक महोदय की भावना को सफल करते हुए अनन्त पुण्य का सचय करेंगे ।

—स्वचन्द्र जैन.

सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान

श्रीशुभचन्द्राचार्यकृतम्. श्रीसिद्धचक्रसहस्रगुणीपूजामंडलविधानम् ।

प्रणम्य श्रीजिनाधीशं लाब्धिसाम्राज्यसंयुतम् ।  
श्रीसिद्धचक्रयंत्रस्यार्चा सहस्रगुणां ब्रुवे ॥ १ ॥

अथ यजमानलक्षणम्.

विनीतो बुद्धिमान् प्रीतो, न्यायोपात्तधनो महान् ।  
शीलादिगुणसम्पन्नो, यष्टा सोऽत्र प्रशस्यते ॥ २ ॥

अर्थ—विनयशील, बुद्धिमान्, प्रीतियुक्त, न्याय से धन उपार्जन करने वाला, शील आदि गुणों से सयुक्त, महान् पुरुष ही जिनागम में विधान करने वाला यजमान प्रशसायोग्य कहा गया है ।

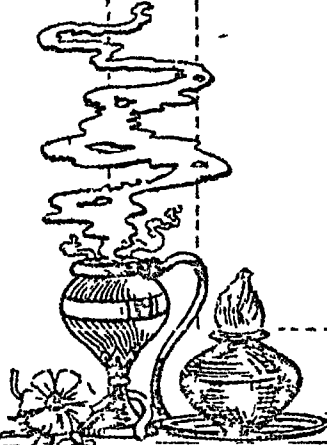
अथ याजकलक्षणम्,

देशकालादिभावज्ञो, निर्मलो बुद्धिमान् वरः ।  
सद्वाण्यादिगुणोपेतो, याजकोऽत्र प्रशस्यते ॥ ३ ॥

अर्थ—देश काल आदि के भावको जाननेवाला, निर्मल, बुद्धिमान्, श्रेष्ठ, समीचीन वाणी आदि गुणों से युक्त याजक जिन शास्त्र में प्रशंसा योग्य माना गया है ।

१ मूलप्रति में 'निर्मलो बुद्धिमान्' का निर्मल बुद्धिवाला अर्थ किया गया है ।  
इसा अर्थ किया गया है । वह भी ठीक है ।

२ मूलप्रति में 'सत्य वचन बोलना',



अथ आचार्यलक्षणम्,

दर्शनज्ञानचाग्निर्मयुतो ममतातिगः ।

प्राज्ञःप्रश्नमंहरचात्र गुरुः स्यान् चांतिनिष्ठितः ॥ ४ ॥

अर्थ—जो सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक् चाग्नि में युक्त, ममता में रहित, विद्वान्, प्रश्न को महन करने वाला-प्रश्न सुनकर बचपाने वाला नहीं है, जमा युक्त क्रोध रहित है, वह जिन शब्द में गुरु-आचार्य माना गया है ।

अथ मंडललक्षणम्,

निर्मलं पृथुलं घंटानाग्निकान्तोर्णान्वितम् ।

प्रलंबपुष्पमालाढ्यं चतुर्द्राकुंभमयुतम् ॥ ५ ॥

भेरीपटहकंमालतालमार्दननिम्बनैः ।

श्रीकुलीनस्त्रीगीताढ्यं मंडपं कारयेद् बुधः ॥ ६ ॥

अर्थ—मंडल जिस में मांडा जाय वह मंडप विद्वान् पुरुष को ऐसा बनवाना चाहिये जो निर्मल-स्वच्छ हो, संकुचित न हो-पर्याप्त बड़ा हो, घटा पनाका तोंरणोंमें युक्त हो, बडी २ पुष्प मालाओं से पूर्ण

१ मूलप्रति में इसका अर्थ 'प्रश्न रहित उधर के जानने वाला' ऐसा किया गया है । २ इसका अर्थ 'निर्मल चंदोवा' में युक्त किया गया है । यहाँ पर चंदोवा का वास्तव कोई अर्थ नहीं है । किन्तु मंडल पर चंदोवा होना आवश्यक है ।

हो, तथा जिसके चारो कोणों में कुम्भ रखे गये हों, एवं भेरी पट्ट कँसाल भाभ मजीरा के शब्दों के साथ २ सुंदर कुलीन स्त्रियों के गीतों से जो परिपूर्ण है।

अथ सामग्रीलक्षणम् ।

स्वभावोत्कर्षणी पूजा नेत्रमानसहारिणी ।

सामग्री शस्यते सद्भिर्निरिवलानंदकारिणी ॥ ७ ॥

अर्थ—पूजा अपने भावो-परिणामोंको बढ़ानेवाली-उनमें उत्कर्ष लानेवाली है। अतएव सत्पुरुषोंके द्वारा उसकी सामग्री वही प्रशंसनीय मानी जाती है जो हर्ष में उत्कर्ष करनेवाली हो, नेत्र और मन को हरण करनेवाली हो, सभी को आनन्द के देने वाली अथवा सम्पूर्ण आनन्द का प्रदान करने वाली हो।

अथ यंत्रोद्धारः ।

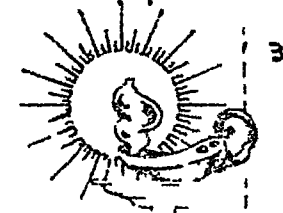
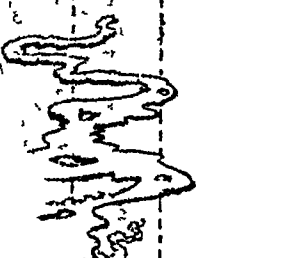
ऊर्ध्वाधोरयुतं सविन्दुं सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम्,

वर्गापूरितदिग्गताभ्युजदलं तत्संधितच्वान्वितम् ।

अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं हींकारसंवेष्टितम्,

देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ ८ ॥

अर्थ—इस विधि के अनुसार सिद्ध यंत्र का उद्धार करे। उसकी रचना करे अथवा किसी बने हुए यंत्र की स्थापना करे।



सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान

अथ प्रथमपरिधौ कर्णिकाकारयंत्रैः सहाष्टकोष्टकपूजा ।

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।

वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।

संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर सवौषट्

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठ ठ

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

हलां चयो विना यैस्तु सुप्रभित्वोऽर्धमातृकः ।

तैः स्वरैः महितं पूर्वादिश्यनाहतमर्चये ॥ १ ॥

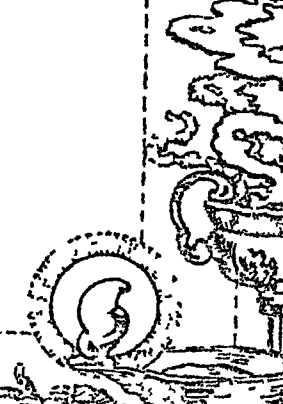
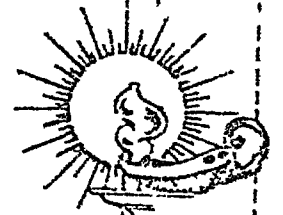
ॐ ह्रीं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ए ऐ ओ औ अ अ

अनाहतविद्यायै नमः पूर्वादिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहाः

आग्नेय्यां कादिसद्वैर्णरूपेतानाहतं यजे ।

सुगन्धैः सुभंगैरुद्वैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ २ ॥

१—मूल्य प्रति में “सुभंगै” की जगह सर्वत्र “सुरभै” तथा “उद्वैः” की जगह “उच्चै” पाठ है । एक जगह “द्रव्यैः” ऐसा संशोधित पाठ भी है । “सुभंगै ” की जगह “सुरसे ” भी ठीक मालुम होता है ।



सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडलविधान

ॐ ह्रीं क ख ग घ ङ अनाहतविद्यायै नमः अग्निदिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दक्षिणस्यां चवर्गेण युतानाहतमर्चये ।

सुगन्धैः सुभगैरुद्वैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं च छ ज झ ञ अनाहतविद्यायै नमः दक्षिणदिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दक्षिणोत्तरकोणे वा टवर्गाद्यमनाहतम् ।

सुगन्धैः सुभगैरुद्वैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं ट ठ ड ढ ण अनाहतविद्यायै नमः नैऋतदिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनाहतं च वारुण्यां तवर्गोपेतमर्चये ।

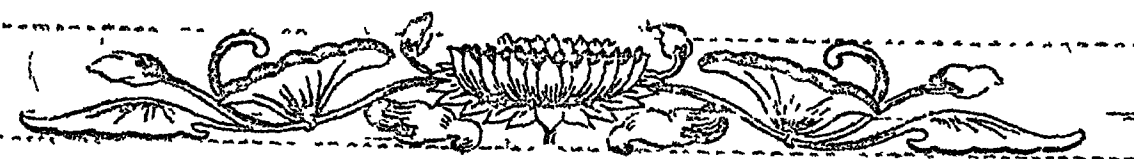
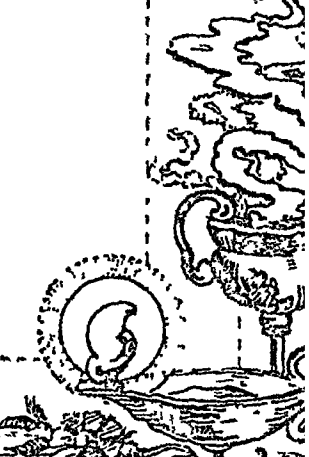
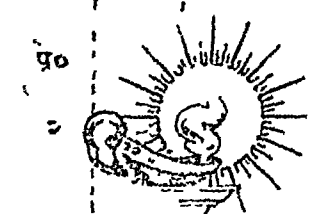
सुगन्धैः सुभगैरुद्वैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं त थ द ध न अनाहतविद्यायै नमः पश्चिमदिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पवर्गोपेतमर्हामि वायव्यायामनाहतम् ।

सुगन्धैः सुभगैरुद्वैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं प फ ब भ म अनाहतविद्यायै नमः वायव्यदिशि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।



शिव चक्र

ह्रीं

मंडलविधानम्

यजे यरलवोपेतं कौवेर्यां दिश्यनाहतम् ।

सुगन्धैः सुभगैरुद्वैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं य र ल व अनाहतविधायै नमः उत्तरदिश्यर्धं निर्वपामीति स्वाहा ।

यजेऽनाहतमैशान्यां युतं शषसहाक्षरैः ।

सुगन्धैः सुभगैरुद्वैर्जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श प स ह अनाहतविधायै नमः पेशानदिशि अर्धं निर्वपामीति स्वाहा ।

अत्र, “ ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः ” इति मंत्रस्याष्टोत्तर शतं जाप्यं देयम् ।

अथाष्टकोष्टकपूजा ।

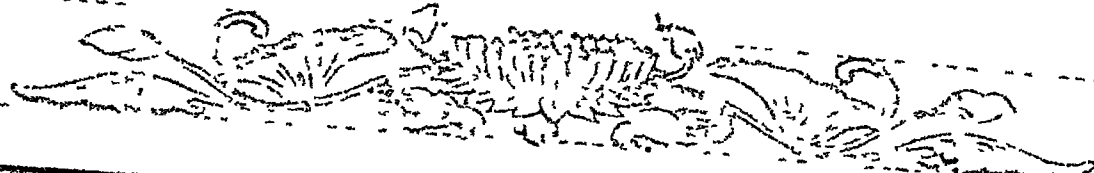
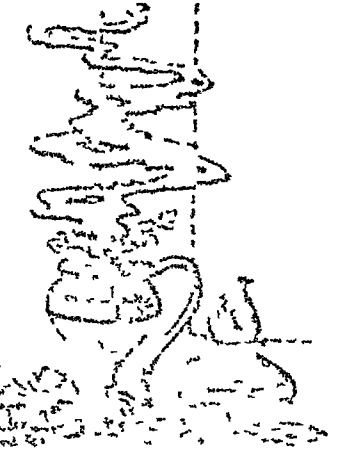
ऊर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।

वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम् ॥

अन्तः पत्रतटेष्वाहताहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम् ।

देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकरणीरवः ॥

इतिपाठित्वा कोष्टकानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।





अथ स्थापना ।

निरस्तकर्ममन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।  
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥  
सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।  
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेधौघम् ॥

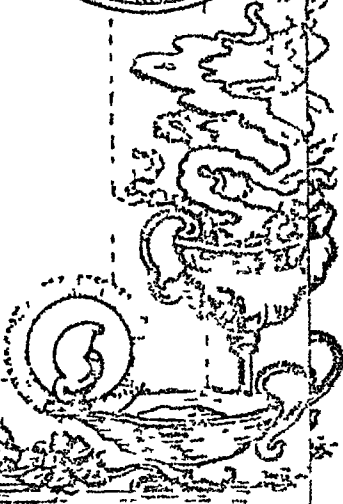
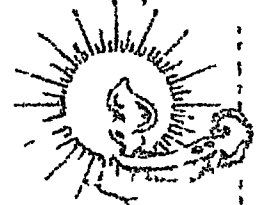
ॐ ह्रीं एमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्, ॐ ह्रीं एमो सिद्धाणं सिद्धपर-  
मेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठ. ठः, ॐ ह्रीं एमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् ।

अथाष्टकम् ।

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्मगम्यम् ।  
हीनादिभावरहितं भववीतकायम् ॥  
रेवापगावरसरोयमुनोद्भवानाम् ।  
नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

१ ॐ ह्रीं सम्यक्गुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जल नि. स्वाहा ।

२ ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः जलं नि. स्वाहा ।



- ३ ॐ ह्रीं दर्शनगुणमहितानाहनपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नम जलं नि. स्वाहा ।  
 ४ ॐ ह्रीं वीर्यगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नम. जल नि. स्वाहा ।  
 ५ ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणसहितानाहनपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तमिद्धाधिपतये नमः जल नि. स्वाहा ।  
 ६ ॐ ह्रीं अवगाहनगुणसहितानाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तमिद्धाधिपतये नम जल नि. स्वाहा ।  
 ७ ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणसहितानाहनपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तमिद्धाधिपतये नम जल नि. स्वाहा ।  
 ८ ॐ ह्रीं अत्र्यावाधगुणमहितानाहनपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तमिद्धाधिपतये नम जल नि स्वाहा ।

( आगे चन्दनादिक भी इन्हीं आठ मंत्रों को बोलकर आठ २ बार चढ़ाना चाहिये । केवल "जल" की जगह "चन्दन, अक्षतान्, पुष्पाणि " आदि शब्द बदल देना चाहिये । )

आनन्दकन्दजनकं धनकर्ममुक्तम् ।  
 मभ्यन्कशर्मगरिमं जननातिवीतम् ॥  
 मौरभ्यवासितभुवं हरिचन्दनाद्यै ।—  
 गन्धैर्यजे परिमलैर्वरमिद्धचक्रम् ॥ २ ॥ चन्दनम्

सिद्ध चक्र

ह्रीं

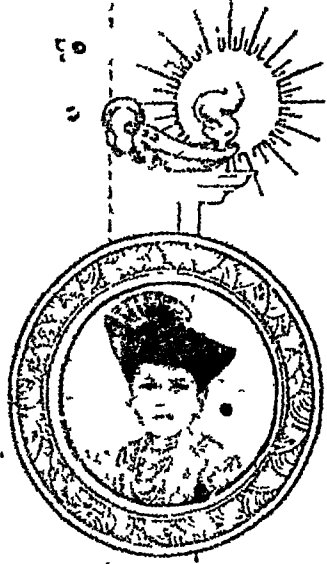
मंडल विधान

सर्वावगाहनगुणं स्वममाधिनिष्ठम् ।  
सिद्धस्वरूपनिपुणं कमलं विशालम् ॥  
सौगन्ध्यशालिवनशालिवराक्षतानाम् ।  
पुंजैर्यजे शशिनिभैर्वरमिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥ अक्षतान

नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञम् ।  
द्रव्यानपेचममृतं मरणव्यतीतम् ॥  
मन्दारकुन्दकमलादिवनस्पतीनाम् ।  
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरमिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि

ऊर्ध्वस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं ।  
ब्रह्मादिवीजसहितं गगनावभासम् ॥  
क्षीरान्नमाज्यवटकै रसपूर्णगमैः ।  
नित्यं यजे चरुवरैर्वरमिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम्

आतंकशोकभयरोगमदप्रशान्तं ।  
निर्द्वन्द्वभावधरणं महिमानिवेशम् ॥



कर्पूरवर्तिवहुमिः कनकावदातै ।—  
दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥ दीपम्

पश्यन् समस्तभुवनं युगपन्नितान्तम् ।  
त्रैकाल्यवस्तुत्रिपये निविडप्रदीपम् ॥  
सद्द्रव्यगंधघनसारत्रिमिश्रितानां ।  
धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥ धूपम्

सिद्धामुराधिपतियत्नरेन्द्रचक्रै ।—  
ध्वैर्यं शिवं सकलभव्यजनैरच वन्द्यम् ॥  
नारंगपूगकदलीफलमातुलिङ्गैः ।  
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥ फलम्  
गंधाढ्यं सुपयोमधुव्रतगणैः संगं वरं चन्दनम् ।  
पुष्पौघं विमलं सदत्तचयं रम्यं चरुं दीपकम् ॥

१—कहाँ ? "नारिकेलै." ऐसा भी पाठ है ।

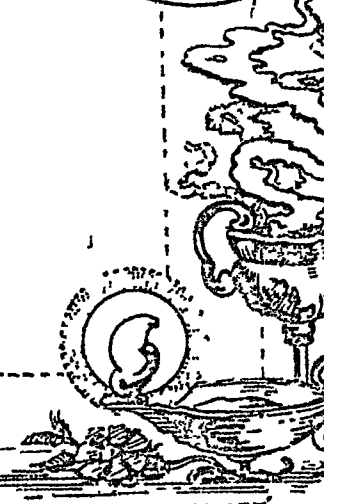
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये ।  
सिद्धानां युगपत्क्रमाय त्रिमलं सेनोतरं वाञ्छितम् ॥ ९ ॥ अर्घम्

ज्ञानोपयोगत्रिमलं त्रिशदात्मरूपम् ।  
सूक्ष्मस्वभावपरमं यदनन्तवीर्यम् ॥  
कर्मौघकक्षदहनं सुरवशस्यबीजम् ।  
वन्दे सदा निरुपमं वरसिद्धचक्रम् ॥ १० ॥ पुष्पांजलिः

ॐ ह्रीं अहं अ सि आ उ सा, इति मंत्रस्य पूर्ववदद्योतरं शतं जाप्यं देयम् ।

अथ जयमाला ।

पुष्पाविधि परमेसुर शौमि जिणोसुर ।  
नासियदुक्कियकम्ममलु ॥  
पुण्ण आक्खिभि भत्तिय शियमणसत्तिय ।  
सिद्धचक्रजयमालप लु ॥ घता  
तमालासमासंपडाशसिकेशा ।  
खरा दारुणा लोयणारत्तवेपा ॥



मिद्ध चक्रं

ह्रीं

मंडल विधान

गहाभूयवेदाल णासंति चक्रम् ।  
वरं भावयंणे मणो मिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

ततो भीसणोच्छंक्रदाढा कराला ।  
चलालोयणा ढीहजीहा विशाला ॥  
वमीहुंति मिहाइ दाढीनचक्रं ।  
वरंभावयंणेमणो मिद्धचक्रं ॥ २ ॥

सरोसा मघोरा महाकालरूवा ।  
जनूरारि आशीविया दुडुभावा ॥  
मकोहा ण डंक्रति होणायचक्रं ।  
वरंभावयंणे मणो मिद्धचक्रं ॥ ३ ॥

जरो खेय रोगावली गंडमाला ।  
पमेहाइ रूवावना कुडुसूला ॥  
विनाशंति सासानिला वाहिचक्रं ।  
वरं भावयंणे मणोमिद्धचक्रं ॥ ४ ॥



सिद्ध चक्र

ह्रीं

संडलविधान

सधूमावलीभीसणासंजलंता ।  
फुलिगाइ मेलंति चंडा दिगंता ॥  
न डाहंति देही सिहीजालचक्कं ।  
वरं भावयंगे मणो सिद्धचक्कं ॥ ५ ॥

सकल्लोललोलावहोलातरंगा ।  
अपारा य घोपावदी सिधुगंगा ॥  
अगाथा सुतारंति हो शीरचक्कं ।  
वरं भावयंगे मणो सिद्धचक्कं ॥ ६ ॥

कसापासकृतासभल्लायमूला ।  
सकोदंडवाणा करे भिंडमाला ॥  
न मारंति तं संगरे चोरचक्कं ।  
वरं भावयंगे मणो सिद्धचक्कं ॥ ७ ॥

सगाढा विवंधा घना घोरबंधा ।  
असेसानियंग्गा उवंग्गा विवंधा ॥



सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान

विमुंचंति सासृखलायं सचक्कं ।  
वरं भावयंणे मणो सिद्धचक्कं ॥ ८ ॥

सुणीसग्गिभाणेण कम्मडुणासं ।  
ललाटे सुवीयं करे मोक्खवासं ॥  
कुणेदी यकी दिट्ठि भाणं पहाओ ।  
सुखंदोवि एसो भुयंगप्पयाओ ॥ ९ ॥

इयवरजयमाला परमरसाला ।  
विधुसेणेन वि कहियथुहिं ॥  
जो पढइ पढावइ नियमणि भावइ ।  
सो णरु पावइ सिद्धसुहं ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं सम्मत्त णाण दंसण वीरिय सुहम अवग्गहण अगुरुलघु अन्वाह अनाहतपराक्रमाय  
सकलकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा ॥ पूर्णार्घम् ॥

५०





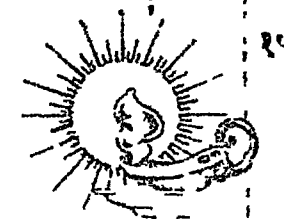
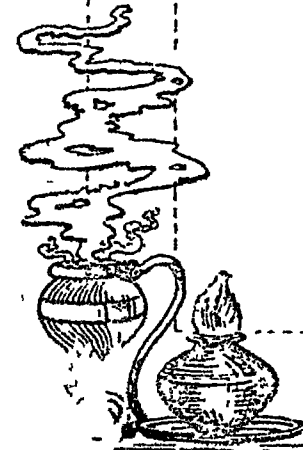
## प्रथम जयमाला का अर्थ

दुष्कृत—पापरूपी कर्ममलो को जिन्होंने सर्वथा नष्ट कर दिया है ऐसे परमेश्वर जिनेश्वर भगवान को प्रणाम और नमस्कार करके भक्तिपूर्वक और अपनी मनःशक्ति के द्वारा सिद्धचक्र की जयमाला का वर्णन करता हूं ॥ १ ॥

मन मे अच्छी तरह से जो सिद्धचक्र का ध्यान करता है उसका; काले त्रिखरे हुए और भयंकर है शिर के केश जिसके, रूक्ष और दारुण है नेत्र जिसके, ऐसी रक्तवर्ण वाली व्यन्तरीका अथवा ग्रह तथा मूत वेताल आदि का भय नष्ट होजाया करता है ॥ १ ॥

भीषण है उरसग-क्रोड-बाहुमध्य और दाढ जिसकी तथा उनके कारण जो विकराल है, जिसके नेत्र चलायमान है, जिहा अत्यन्त दीर्घ है, ऐसे विशाल सिंह और दाढवाले सभी जीवों का समूह सिद्धचक्र की भावना करने वाले के वश मे होजाया करता है ॥ २ ॥

रोषयुक्त घोर महाकाल रूप दुष्ट भावों वाले क्रुद्ध आशीविष जाति के सर्प भी उसको नहीं काटते जो मनमे सिद्धचक्र की भले प्रकार भावना किया करता है ॥ ३ ॥



ज्वर क्षय गडमाला कुष्ठ शूल आदि रोग अथवा श्वास और वातादि व्याधियां उनकी नष्ट होजाया करती है जो मन में सिद्धचक्र का अच्छी तरह चिन्तन किया करते हैं ॥ ४ ॥

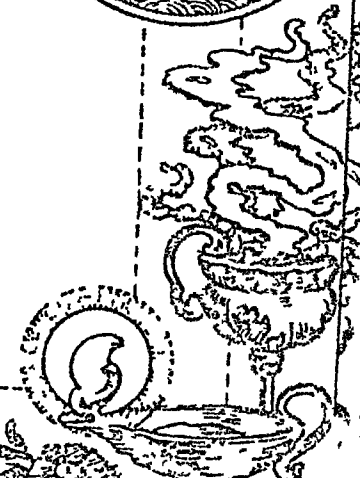
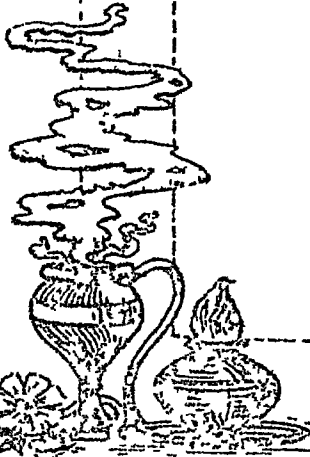
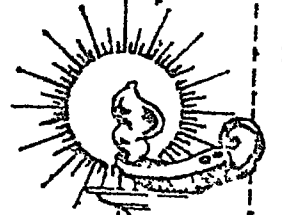
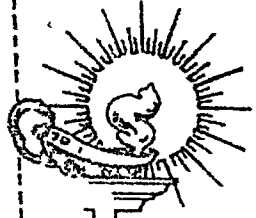
इस सिद्धचक्र की भावना करने वाले को धूमसहित भीषण जलती हुई, जिसके प्रचण्ड स्फुलिंग सब तरफ उड रहे है, अग्नि की ज्वालाओं का समूह दग्ध नहीं कर सकता ॥ ५ ॥

कल्लोलो से चचल बहुत तरंगवाली अपार शब्द करती हुई अगाध गंगा सिंधु आदि नदिया उस मनुष्य को पार कर देती है जो इस सिद्धचक्र का मन में चिन्तन किया करता है ॥ ६ ॥

कशा पाश कुत-बर्छी भाला शूल आदि धारण करने वाले या जिनके हाथ में धनुष-बाण भिंडमाल है, ऐसे व्यक्ति और चोरों का समूह युद्ध मे उस व्यक्ति को नहीं मार सकते जो सिद्धचक्र का मन मे भले प्रकार चिन्तन करता है ॥ ७ ॥

अत्यन्त गाढ और सधन भी बंधन जिन्होंने कि समस्त अगउपांगो को जकड़ रक्खा है खुल जाते है और उन व्यक्तियों की शंखलाएं टूट जाती है जो कि इस सिद्धचक्र का मन मे स्मरण करते है ॥ ८ ॥

उस सिद्धचक्र का निःसग ध्यान करने स आठो ही कर्मोंका विनाश होता है, ललाट में सुवीर्य प्रकट होता और हाथ में मोक्ष लक्ष्मी का निवास हुआ करता, तथा जिसके दृष्टि पात से सूर्य के समान



तेज प्राप्त हुआ करता है, जिसका कि यहा भुजंगप्रयातछन्द के द्वारा वर्णन किया गया है ॥ ९ ॥

इस प्रकार चन्द्रसेन के द्वारा जिस अत्यन्त रसाल-रसवती उत्तम जय माला का वर्णन किया गया है उसको जो पढ़ेंगे, पढ़ावेंगे, या अपने मन में धारण करेंगे वे मनुष्य सिद्धि सुखको प्राप्त करेंगे ॥ १० ॥

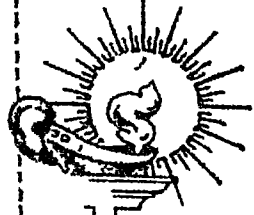
### अथ द्वितीय परिधिषोडशदलपूजा

ऊर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।  
वर्गापूरितादिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितच्चान्वितम् ॥  
अन्तः पत्रतटेष्वाहृतयुतं ऋंकारसंवेष्टितम् ।  
देवं ध्यायति यः समुक्तिसुभगो वैरीभकएठीरवः ॥ पुष्पाजलिम्

अथ स्थापना—

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं 'नित्यं' निरामयं ।  
वन्देऽहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥





सकलामरेन्द्रसेव्यं, ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।  
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

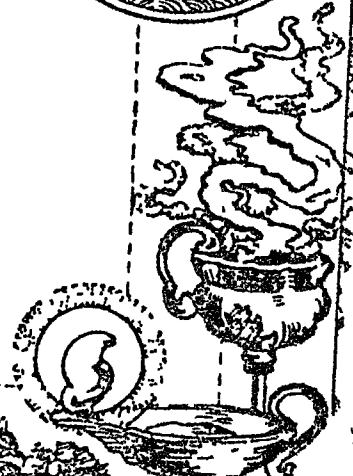
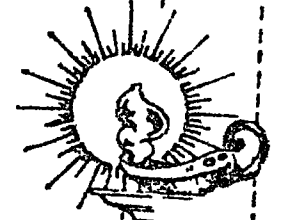
- ॐ ह्रीं णमोसिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर सवौषट् ।  
ॐ ह्रीं णमोसिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ।  
ॐ ह्रीं णमोसिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् ।

अथाष्ट म—

रम्यैर्जलैर्मिश्रितचन्दनौघैः, संसारतापाहतये सुशान्त्यै ।  
जलांजलिप्राप्तजरजोभिशान्त्यै, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा, इति समुच्चयमत्र ।

- १ ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः जलं निः स्वाहा, २ ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानाय नमः जलं निः स्वाहा ।  
३ ॐ ह्रीं अनन्तवीर्याय नमः जलं निः स्वाहा, ४ ॐ ह्रीं अनन्तसुखाय नमः जलं निः स्वाहा ।  
५ ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्ताय नमः जलं निः स्वाहा, ६ ॐ ह्रीं अनन्तसूच्याय नमः जलं निः स्वाहा ।



५०

- ७ ॐ ह्रीं अत्र्यावाधाय नमः जल नि. स्वाहा,  
 ९ ॐ ह्रीं अक्षोभाय नम. जल नि. स्वाहा,  
 ११ ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नम. जल नि. स्वाहा,  
 १३ ॐ ह्रीं अजराय नम जलं नि स्वाहा,  
 १५ ॐ ह्रीं अप्रमेयाय नमः जल नि. स्वाहा,

- ८ ॐ ह्रीं अत्रगाहनाय नमः जल नि. स्वाहा ।  
 १० ॐ ह्रीं अचलाय नम जल नि स्वाहा ।  
 १२ ॐ ह्रीं अमेद्याय नम. जलं नि. स्वाहा ।  
 १४ ॐ ह्रीं अमराय नम जल नि. स्वाहा ।  
 १६ ॐ ह्रीं अविलिनाय नम जल नि. स्वाहा ।

सत्कुंकुमैः सज्जतरैः सुगन्धैः, संतप्तहेम्रश्च रसैरिन्दैः ।

सच्चन्दनैर्नन्दितभृंगवृन्दैस्तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ २ ॥ चन्दनम्

पुंजैरिवाखण्डवृषस्य दीर्घैः स्वच्छैर्मुनीनां मनसा समानैः ।

रम्यैरखण्डाक्षतनव्यपुंजैस्तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

गन्धावलुब्धाखिलपुष्पलिङ्गिभः, सत्पुष्पवाणाहतये सुपुष्पैः ।

राजीवजातीशतपत्रकाद्यैस्तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि

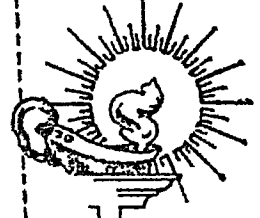
माज्यैः समृद्धैर्वरशिष्टसिद्धैः, नैवेद्यकैर्नव्यरसात्तभावैः ।

वाष्पायमानैर्हृदयावभासैस्तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम्



१९

पृ०  
२



दीपैः सुदीपैर्दलितान्धकारैः, चन्द्राज्यरत्नोत्तमजैरतीद्वैः ।

अज्ञानतामस्यनिवारणाय, तत्कर्मदाहार्थमजं यजेऽहम् ॥ ६ ॥ दीपम्

एनःसमूहाहतये नितान्तं ज्ञानादिदाहोद्भवधूमकैर्वा ।

सद्धूपधूमैर्धृतधर्मसिद्धयै तत्कर्मदाहार्थमजंयजेहम् ॥ ७ ॥ धूपम्

घांटासुनारंगसुलांगलीभिर्द्राक्षासुराजादनदाडिमाद्यैः ।

फलैर्निराशाफलभावलब्ध्यैतत्कर्मदाहार्थमजंयजेऽहम् ॥ ८ ॥ फलम्

दृग्ज्ञानसम्यक्कसुवीर्यसूक्ष्मं सद्गाहसत्सप्तममव्यवाधम् ।

विकर्मभावं कुसुमांजलीभिस्तत्कर्मदाहार्थमजंयजेऽहम् ॥ ९ ॥ अर्घम्

सिद्धान् सिद्धमहोदयान्गुणगणाधीशानहं तोष्टवी,—

म्याकारेण हि किञ्चिदूनवपुषः पूर्वाच्छरीराद्ध्रुवम् ।

अष्टानिष्टमहारिकर्मनिगडैर्मुक्तांश्रिदानन्दकां,—

स्रैलोक्याग्रनिवासिनःश्रितवतो मुक्तचंगनां साश्वतीम् —पुष्पांजलिः

ॐ ह्रीं असिआउसा नमः, इतिमंत्रेणाष्टोत्तरशत ज्ञाप्यम् ।



अथ जयमाला—

अपनीतविकल्पसमूहरणं, भुविभस्मितकर्मघनाग्निगणम् ।  
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ १ ॥

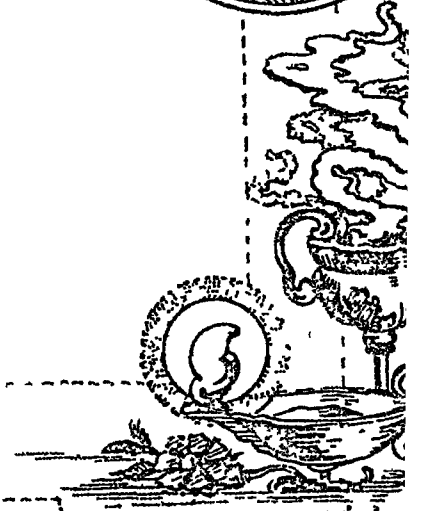
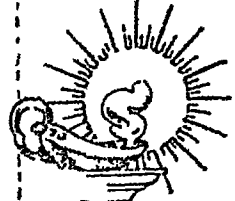
धृतचिन्मयरूपमरूपयुतं सुरराजनराधिपशेषनुतम् ।  
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ २ ॥

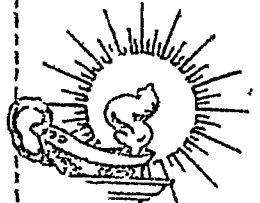
विगतातपसादविषादरतिं गुरुशान्तिगतं हतपापमतिम् ।  
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ३ ॥

मदरवेदमहीधरनाशपत्रिं भयभीमनिशाचरचारुरविम् ।  
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ४ ॥

वरमुक्तिवधूरमणं विरणं चिदनंतगुणं जितकामकणम् ।  
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ५ ॥

वरधीक्षणसौख्यसुवीर्यमयं निजबोधविलोकितवस्तुचयम् ।  
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ६ ॥





गतसंसृतिसागरपारमरं हतदोषकपायकलंकभरम् ।  
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ७ ॥

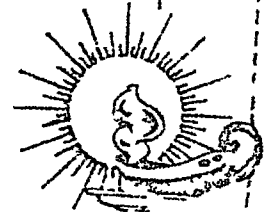
शुचिकेवलदर्शनबोधधरं हतसंभवजातिविनाशजरम् ।  
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ८ ॥

स्वरसामृतमंथररूपमजं भुवनत्रयमस्तकवारगजम् ।  
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ ९ ॥

समभावविभासितजीवगुणं परमाचलानित्यगुणाभरणम् ।  
गुणराजिविराजितभावमहं प्रणमामि सुसिद्धगणेशमहम् ॥ १० ॥

वक्ता—

यन्नामग्रहणादरेषु जगतीषुष्टे फणीभारयो,—  
भीमा वारिचरा मृगेशशरभाः सौख्याय यान्ति क्षणात् ।  
प्राप्यन्ते स्मरणेन दिव्यविषयाश्चार्घं हि तस्मै ददे ।  
वश्या सिद्धगणाय सिद्धिग्मणी यद्ध्यानतो जायते ॥ पूर्णार्घम्





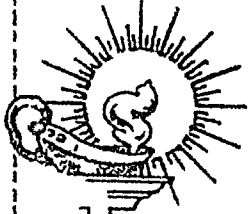
चिदूपं सिद्धचक्रं यो यायजेद्भक्तिमानसः ।  
पद्मकीर्तिसमो भूत्वा लभते सिद्धिसंगतिम् ॥ आशीर्वादः

### द्वितीय जयमाला का अर्थ

दूर कर दिया है विकल्प समूह—अनेक तरह के सकल्प विकल्पों के रण-कोलाहल को जिन्होंने, लोक में कर्मरूपी सघन अग्नि के समूह को जिन्होंने भस्म-शांत कर दिया है, और जिनके भाव अनेक गुणों से शोभित है ऐसे परमात्मरूप सिद्धों के समूह को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

चैतन्यस्वरूप को जो प्राप्त होगये है, देवेन्द्र नरेन्द्र और धरणीन्द्र के द्वारा भी जिनको नमस्कार किया गया है, आतप साद-खेद विषाद और रति से जो रहित हैं, महान् शान्ति को प्राप्त, नष्ट कर दिया है पापरूप मति को जिन्होंने, मद और खेद-रूपी पर्वत का नाश करने के लिये जो वज्र के समान है, भयरूपी भयकर निशाचर के लिये जो सुन्दर सूर्य के समान है, जो उत्तम मुक्तिरूपी वधू के रमण, शब्द अथवा गति से रहित, तथा चित्स्वरूप अनंत गुणों के धारक है, जिन्होंने काम के अंश को भी जीत लिया है; जो उत्तम ज्ञान दर्शन सुख और वीर्य, इस तरह अनन्त चतुष्टय स्वरूप है, जिन्होंने अपने ज्ञान के द्वारा समस्त वस्तुओं को देख लिया है, जो ससाररूपी समुद्र के पार को भले प्रकार प्राप्त होगये है, जिन्होंने

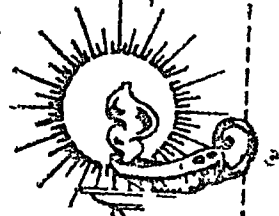




सर्वसाधारण संसारी जीवों में पाये जाने वाले दोष-क्षुधा-पिपासा-चिन्ता आश्चर्य आदि तथा कषायरूपी कलंक के भार को नष्ट कर दिया है, पवित्र केवल ज्ञान और दर्शन को जो धारण करने वाले है, जिन्होंने संसार के जन्म मरण और जरा रूप लेश का नाश कर दिया है, आत्म रस रूपी अमृत से जो मथर हैं; पुनः जन्म धारण करने वाले नहीं है, भुवनत्रय के मस्तकरूपी द्वार का उद्घाटन करने के लिये गज के समान हैं, समभाव के द्वारा जिन्होंने जीव के-अपनी आत्मा के या जीवों के गुणों को प्रकाशित कर दिया है, उत्कृष्ट निश्चल और नित्य गुण ही हैं आभरण जिनके, ऐसे अनेक गुणों से शोभायमान परमात्मा सिद्ध परमेष्ठियों को मेरा नमस्कार हो.

इस जगत में जिनके नाम मात्र का स्मरण करने में आदरभाव रखने वाले व्यक्तियों को सर्प हाथी आदि घात करने वाले तथा भयकर जलचर जीव या सिंह अष्टापद आदि क्षणभर में उल्टे सुखशांति के निमित्त बनजाते है, जिनका चिंतवन करने से दिव्य विषयों को प्राप्ति हुआ करती है, एवं जिनका ध्यान करने से सिद्धिरूपी रमणी वशीभूत होजाया करती है, उन सिद्ध परमेष्ठियों को मैं अर्ध—पूर्णाधि अर्पण करता हू ॥

भक्ति से परिपूर्ण है मन जिसका ऐसा जो व्यक्ति चिद्रूप सिद्ध भगवान का अतिशय करके और पुनः २ पूजन करता है वह " पद्मकीर्ति " के समान होकर सिद्धि को प्राप्त किया करता है ॥



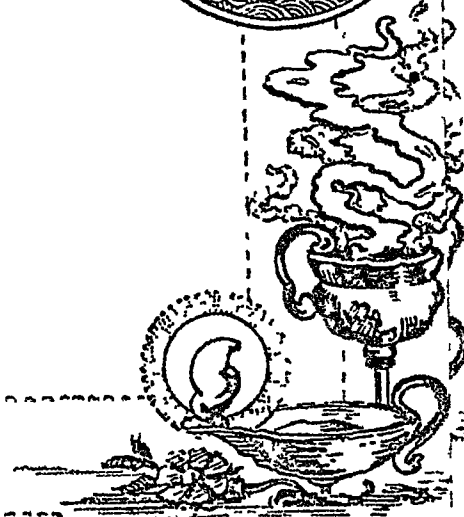
अथ तृतीयपरिधिद्वात्रिंशत्कमलदलपूजा ।

उर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपदं ब्रह्मस्वरावेष्टितम्,  
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितचान्वितम् ।  
अन्तः पत्रतटेष्थनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम्,  
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ १ ॥ पुष्पाञ्जलिः

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।  
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।  
मंस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेधौघम् ॥ २ ॥

- ॐ ह्रीं एमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्
- ॐ ह्रीं एमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठःठः
- ॐ ह्रीं एमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्

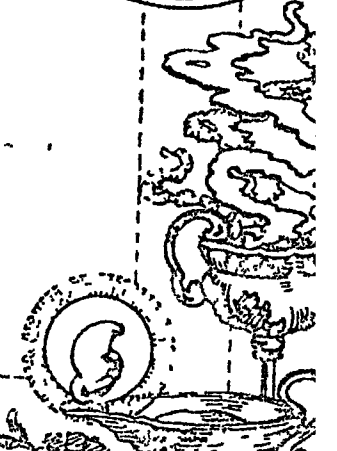


अथाष्टकम्—

निजमनोमणिभाजनभारया शमरसैकसुधारसधारया ।  
सकलबोधकलारमणीयकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविप्रमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । जलम् ॥ इति समुच्चयमंत्रः ।

अथ प्रत्येक मंत्राः—१ ॐ ह्रीं परमशुद्धचैतन्याय नमः स्वाहा । २ ॐ ह्रीं शुद्धचैतन्याय नमः स्वाहा । ३ ॐ ह्रीं शुद्धज्ञानाय नमः स्वाहा । ४ ॐ ह्रीं शुद्धचिद्रूपाय नमः स्वाहा । ५ ॐ ह्रीं शुद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा । ६ ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय नमः स्वाहा । ७ ॐ ह्रीं शुद्धावलोकिते नमः स्वाहा । ८ ॐ ह्रीं शुद्धदृढाय नमः स्वाहा । ९ ॐ ह्रीं शुद्धस्वयमुवे नमः स्वाहा । १० ॐ ह्रीं शुद्धयोगिने नमः स्वाहा । ११ ॐ ह्रीं शुद्धजाताय नमः स्वाहा । १२ ॐ ह्रीं शुद्धतपसे नमः स्वाहा । १३ ॐ ह्रीं शुद्धमूर्तये नमः स्वाहा । १४ ॐ ह्रीं शुद्धसुखाय नमः स्वाहा । १५ ॐ ह्रीं शुद्धपावनाय नमः स्वाहा । १६ ॐ ह्रीं शुद्धशरीराय नमः स्वाहा । १७ ॐ ह्रीं शुद्धप्रमेयाय नमः स्वाहा । १८ ॐ ह्रीं शुद्धोपयोगाय नमः स्वाहा । १९ ॐ ह्रीं शुद्धभोगाय नमः स्वाहा । २० ॐ ह्रीं शुद्धात्मने नमः स्वाहा । २१ ॐ ह्रीं शुद्धार्हज्जाताय नमः स्वाहा । २२ ॐ ह्रीं अशुद्धिनिपाताय नमः स्वाहा । २३ ॐ ह्रीं शुद्धार्हगर्भवासाय नमः स्वाहा । २४



ॐ ह्रीं शुद्धसिद्धवासाय नमः स्वाहा । २५ ॐ ह्रीं शुद्धपरमवासाय नमः स्वाहा । २६ ॐ ह्रीं शुद्धसिद्ध-  
परमात्मने नमः स्वाहा । २७ ॐ ह्रीं शुद्धानन्ताय नमः स्वाहा । २८ ॐ ह्रीं शुद्धशान्ताय नमः स्वाहा ।  
२९ ॐ ह्रीं शुद्धभदन्ताय नमः स्वाहा । ३० ॐ ह्रीं शुद्धनीरूपाय नमः स्वाहा । ३१ ॐ ह्रीं शुद्धनिर्वाणाय  
नमः स्वाहा । ३२ ॐ ह्रीं शुद्धसदर्भगर्भाय नमः स्वाहा ॥ जलम् ॥

सहजकर्मफलं विनाशनैरमलभावसुवासितचन्दनैः ।  
अनुपमानगुणावलिनायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ २ ॥ चन्दनम्  
सहजभावसुनिर्मलतन्दुलैः सकलदोषविशालविशोधनैः ।  
अनुपरोवसुवोधनिधानकम् सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ३ ॥ अक्षतान्  
समयसारसुपुष्पसुमालया सहजकर्मकरेण विशोधया ।  
परमयोगबलेन वशीकृतम् सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ४ ॥ पुष्पम्  
अकृतबोधसुदिव्यनैवेद्यकैर्विहितजातिजरामरणान्तकैः ।  
निरवधिप्रचुरात्मगुणालयं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ५ ॥ नैवेद्यम्  
सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकैः रुचिविभूतितमः प्रविनाशनैः ।  
निरवधिं सुविकाशप्रकाशनैः सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ६ ॥ दीपम्



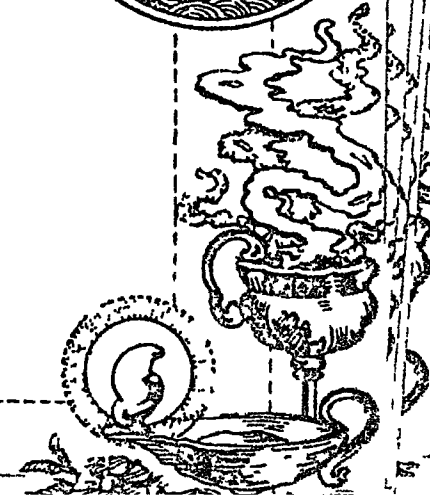
निजगुणाक्षयरूपसुधुपकैः स्वगुणघातिमलप्रविनाशनैः ।  
विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ७ ॥ धूपम्

परमभावफलावलिसंपदा सहजभावविभावविशोधया ।  
निजगुणास्फुरणात्मनिरंजनं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥ ८ ॥ फलम्

नेत्रोन्मीलविकाशभावनिवहैरत्यन्तबोधाय वै,  
सद्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः ।—  
र्यश्चिन्तामणिशुद्धभावपरमज्ञानात्मकैरर्चयेत्,  
सिद्धः स्यात्तमगाधबोधममलं संचर्चयामो वयम् ॥ ९ ॥ अर्घम्

त्रैलोक्येश्वरवन्दनीयचरणाः प्रापुःश्रियं शास्वतीम्,  
यानाराध्य निरुद्धचण्डमनसः सन्तोपि तीर्थकराः ।  
सत्सम्पत्कविबोधवीर्यविशदाव्याबाधताद्यैर्गुणैः—  
र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥ १० ॥ पुष्पांजलिः

ॐ ह्रीं असिआउसा नमः, इतिमन्त्रेणाष्टोत्तरशतं जाप्यं देयम् ।



अथ जयमाला—

विराग सनातन शांत निरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस ।  
सुधाम विबोधनिधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ १ ॥

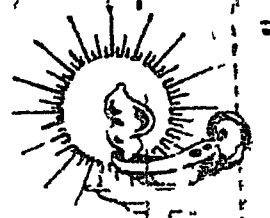
विदूरितसंस्मृतिभाव निरंग, शमामृतपूरित देव विसंग ।  
अबंध कषायविहीन विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ २ ॥

निवारितदुष्कृतकर्मविपाश, सदामलकेवलकेलिनिवास ।  
भवोदधिपारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ३ ॥

अनंतसुखामृतसागर धीर, कलंकरजोभरभूरिसमीर ।  
विरवण्डितकाम विराम विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ४ ॥

विकारविवर्जित तर्जितशोक, विबोधसुनेत्रविलोकितलोक ।  
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ५ ॥

रजोमलखेदविमुक्त विगात्र, निरंतरनित्यसुखामृतपात्र ।  
सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ६ ॥



सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान

नरामरवन्दितनिर्मलभाव, अनन्तमुनीश्वरपूज्य विहाव ।  
सदोदय विश्वमहेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ७ ॥

विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकरसार वितंद्र ।  
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ८ ॥

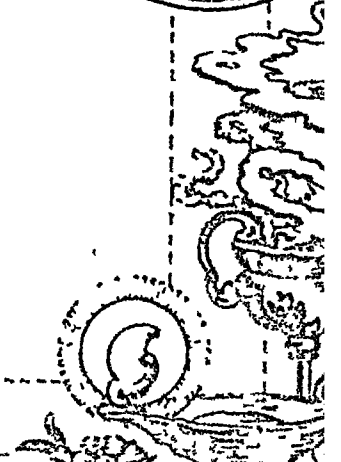
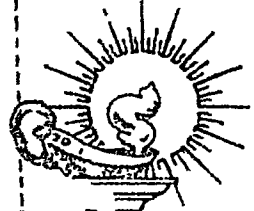
जरामरणोज्झित वीतविहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार ।  
अचिन्त्यचरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ९ ॥

विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ ।  
अनाकुल केवल सार्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ १० ॥

वत्ता-असमसमयसारं चारुचैतन्यचिन्हम्,  
परपरणतिमुक्तं पद्मनन्दीन्द्रवन्द्यम् ।  
निरिवलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं,  
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोभ्येति मुक्तिम् ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धचैतन्यादिगुणयुक्तसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा ॥ इतिपूर्णाधिस ॥

५०



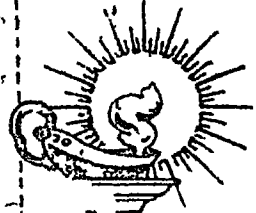


## तीसरी जयमाला का अर्थ

रागरहित, सदारहनेवाले, शान्त-क्रोधादिरहित, निरश-विभागरहित-अखण्ड, रोगरहित, निर्भय, निर्मल, भेदविज्ञानपूर्ण आत्मस्वरूप, उत्तम तेज स्वरूप, उत्कृष्टज्ञान के निधान-खजाने हे मोहरहित विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ १ ॥ सासारिक भावों से दूर, अगरहित, शम परिणामरूपी अमृत से पूर्ण, देव, सगरहित, निर्बंध और कषायरहित निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ २ ॥ पाप कर्म के पाश-जाल का जिन्होंने निवारण कर दिया है, जो सदा निर्मल केवल ज्ञान की क्रीडा के निवास स्थान है, ससार समुद्र के पार को प्राप्त हो चुके हैं, ऐसे शांत निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ३ ॥ अनन्त सुख रूपी अमृत के समुद्र, धीर, पापरूपी घूलि के भार को उडादेने के लिये प्रबल समीर-वायु के समान, कामदेव की अन्तिम सीमा को भी खण्डित करने वाले निर्मोह विशुद्ध सिद्ध समूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ४ ॥ विकार भाव से रहित, शोक को ताडित करने वाले, विशिष्ट ज्ञानरूपी नेत्र के द्वारा देख लिया है लोक को जिन्होंने, जिनका कोई हरण नहीं कर सकता, ऐसे शब्दरहित, विरंग-संसाररूपी नाटक के रगस्थल अथवा कषायोंके युद्ध स्थल से विगत, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ५ ॥ अज्ञान और अदर्शनरूप मल के खेद से रहित, अशरीर, विच्छेदरहित नित्य सुख के



पात्र, सम्यग्दर्शन के द्वारा शोभायमान, नाश निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ६ ॥ मनुष्यों और देवोंके द्वारा बन्दिता है निर्मल भाव जिनके, अनन्त मुनीश्वरों के द्वारा पूज्य, मुख के विकार से रहित, सदा रहनेवाला है उदय जिनका, पूर्ण तेज के स्वामी, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ७ ॥ दंभरहित, तृष्णा से शून्य, विगत दोष, निद्रा रहित, पर 'और अपर कल्याण के करने वाले, साररूप, निरालस्य, क्रोध रहित, रूप रहित और शंका रहित निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ८ ॥ जरा और मरण से रहित, तथा गमनागमन से भी रहित, विशिष्ट चिन्ता-ध्यानादिके विषय, निर्मल, अहंकार रहित, अचिन्त्य है चरित्र जिनका ऐसे, हे दर्परहित निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ ९ ॥ वर्ण रहित, गंध रहित, मान-लोभ-माया-शरीर-शब्द और शोभा से रहित, आकुलतासे रहित, केवल-एकाकिन्-शुद्धात्मन्, सबके लिये हितकर, निर्मोह विशुद्ध सिद्धसमूह मेरे ऊपर प्रसन्न हो ॥ १० ॥ इस तरह अनुपम समयसाररूप, सुन्दर चैतन्य ही है चिन्ह जिनका, पुद्गलकेनिमित्त से होने वाली परिणतिसे मुक्त, पद्मनन्दो आचार्य के द्वारा बन्ध, सम्पूर्ण गुणोंके निवासस्थान, विशुद्ध सिद्धचक्र का जो स्मरण करता है, उनको नमस्कार करता है, या उसकी स्तुति करता है, वह मुक्ति को प्राप्त हुआ करता है ॥ ११ ॥



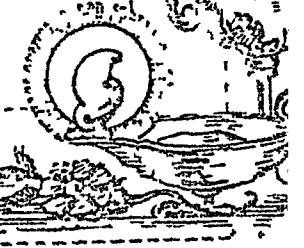
अथ चतुर्थपरिधौ चतुःषष्टि दल पूजा ।

उर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।  
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलंतत्संधितच्वान्वितम् ॥  
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ऋंकारसंवेष्टितम् ।  
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥  
पुष्पं दत्त्वा स्थापनां कुर्यात् ॥

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।  
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।  
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेधौघम् ॥ २ ॥

• ॐ रामोसिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्



सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडलविधान

ॐ ह्रीं, णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ र ठः ठः

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव र वषट्

अथाष्टकम्

जयति जयति यस्य प्राभवं सम्यगात्मो,—  
दयविजिताधिपक्षं विश्वकल्याणबीजम् ।  
सुरसरिदमलाम्भोधरयाऽऽराधनीयम्,  
गणधरवल्लयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं असिन्ना उसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौ झ्रौ जल स्वाहा, इतिसमुच्चयमंत्रः

## अथ प्रत्येक मंत्रा

१ ॐ ह्रीं अर्ह जिनासिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, २ ॐ ह्रीं अर्ह केवलद्विसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ३ ॐ ह्रीं अवधिवुद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः स्वाहा, ४ ॐ ह्रीं अर्ह मनःपर्ययवुद्धिऋद्धिसिद्धेभ्योनमः स्वाहा, ५ ॐ ह्रीं अर्हवीजवुद्धिसिद्धेभ्योनमः स्वाहा, ६ ॐ ह्रीं अर्ह कोष्ठवुद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा ७ ॐ ह्रीं अर्ह पादानुसारिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ८ ॐ ह्रीं अर्ह सभिन्नसश्रोतृसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ९ ॐ ह्रीं अर्ह दूरास्वादनदर्शनम्पर्शनघ्राणश्रवणद्विसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १० ॐ ह्रीं अर्ह दशपूर्वित्वसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, ११ ॐ ह्रीं अर्ह चतुर्दशपूर्वित्वसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १२ ॐ ह्रीं अर्ह अष्टागमहानिमित्तवुद्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १३ ॐ ह्रीं अर्ह प्रज्ञाश्रमणद्विसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १४ ॐ ह्रीं अर्ह प्रत्येकवुद्धिसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १५ ॐ ह्रीं अर्ह वादित्वद्विप्राप्तेभ्यो नमः स्वाहा, १६ ॐ ह्रीं अर्ह णमोविजाहराण स्वाहा, १७ ॐ ह्रीं अर्ह जलजंघातंतुपुष्पपत्रश्रेण्यग्निशिखाचारणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १८ ॐ ह्रीं अर्ह आकाशगामिन्वद्विसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा, १९ ॐ ह्रीं अर्ह विक्रियाद्विसिद्धिप्राप्तेभ्यो नमः स्वाहा, २० ॐ ह्रीं अर्ह णमो उगतवाणं स्वाहा, २१ ॐ ह्रीं अर्ह णमो दीक्षितवाणं स्वाहा, २२ ॐ ह्रीं अर्ह णमो तत्ततवाणं स्वाहा, २३ ॐ ह्रीं अर्ह णमो महातवाणं स्वाहा, २४ ॐ ह्रीं अर्ह णमो घोरतवाणं स्वाहा, २५ ॐ ह्रीं अर्ह



१०  
५

३६

एगमो घोरपरक्रमाणं स्वाहा, २६ ॐ ह्रीं अहं घोरवभयारीणं स्वाहा, २७ ॐ ह्रीं अहं एगमो मणोवलीणं स्वाहा, २८ ॐ ह्रीं अहं एगमो वाधेवलीणं स्वाहा, २९ ॐ ह्रीं अहं एगमो कायवलीणं स्वाहा, ३० ॐ ह्रीं अहं एगमो आमोसंहिपत्ताणं स्वाहा, ३१ ॐ ह्रीं अहं एगमो विह्लोसहपत्ताणं स्वाहा, ३२ ॐ ह्रीं अहं एगमो जह्लोसहिपत्ताणं स्वाहा, ३३ ॐ ह्रीं अहं एगमो मेलोसहिसिद्धाणं स्वाहा ३४ ॐ ह्रीं अहं एगमो विडोसंहिपत्ताणं स्वाहा, ३५ ॐ ह्रीं अहं एगमो सधोसंहिपत्ताणं स्वाहा, ३६ ॐ ह्रीं अहं एगमो आंसीविसाणं स्वाहा, ३७ ॐ ह्रीं अहं दिडिविसाणं स्वाहा, ३८ ॐ ह्रीं अहं एगमो आसीविसंसर्द्धिसिद्धाणं स्वाहा, ३९ ॐ ह्रीं अहं एगमो दिडिविषसिद्धाणं स्वाहा, ४० ॐ ह्रीं अहं एगमो क्षीरसवीणं स्वाहा, ४१ ॐ ह्रीं अहं एगमो महुसवीणं स्वाहा, ४२ ॐ ह्रीं अहं एगमो सप्पिसवीणं स्वाहा, ४३ ॐ ह्रीं अहं एगमो अमियसवीणं स्वाहा, ४४ ॐ ह्रीं अहं एगमो अक्षीणमहानसाणं स्वाहा, ४५ ॐ ह्रीं अहं एगमो अक्षीणमहालयाणं स्वाहा, ४६ ॐ ह्रीं अहं एगमो सत्तडिडपत्ताणं स्वाहा, ४७ ॐ ह्रीं अहं विपहरणद्धिप्राप्तेभ्योनमः स्वाहा, ४८ ॐ ह्रीं अहं एगमो वड्डमाणाणं स्वाहा, ४९ ॐ ह्रीं अहं एगमो लोए सघसिद्धाणं स्वाहा, ५० ॐ ह्रीं

१ आनर्श —हस्तपादादिना सस्पर्शः । २ क्षेला-निष्ठीवनम् । ३ जात-स्वेदालम्बनं रजः । ४ मल-कर्णदन्तादि-समुद्भवः । ५ विदुनार । ६ अंगप्रत्यंगनरवद-तादिरवयवः तत्सस्पर्शां वाप्वादि मर्व । ७ आस्याविपा-उग्रविपसंपृक्तो ऽप्याहारो येषामास्यगतो निर्विषा भवति, यदीपास्यनिर्गतवच श्रवणात् महाविपपरीता अपि निर्विषा भवन्ति । ८ येषामालोमनात्रेणातिलीत्रविषदूषिता अपि विगतविषा भवन्ति । ९ ये रमर्द्धिप्राप्ता यतय यं वृवते “ मियस्व ” स तत्क्षणात् महाविपपरीतः सन मियते ते आस्यविषा ।

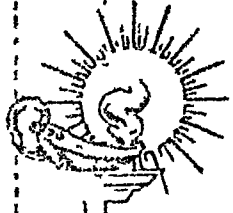
सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडलविधान

५०

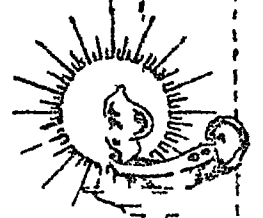
४

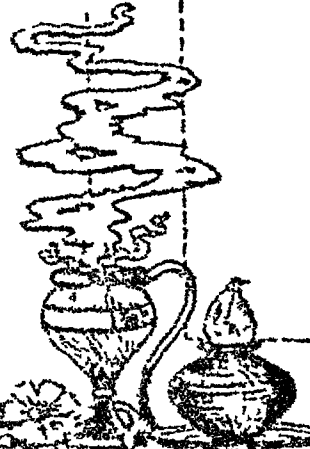


अहं शमो भयवदो महदिमहावीर वट्टमाण बुद्धिरिरीण स्वाहा, ५१ ॐ ह्रीं अहं शमो सिद्धाण स्वाहा,  
५२ ॐ ह्रीं अहं शमो ध्येयसिद्धाणं स्वाहा, ५३ ॐ ह्रीं अहं शमो वस्तुबुद्धाणं स्वाहा, ५४ ॐ ह्रीं अहं  
शमो स्वास्तिसिद्धाणं स्वाहा, ५५ ॐ ह्रीं अहं शमो अहंत्सिद्धाण स्वाहा, ५६ ॐ ह्रीं अहं शमो  
परमात्मसिद्धाण स्वाहा, ५७ ॐ ह्रीं अहं शमो परब्रह्मसिद्धाण स्वाहा, ५८ ॐ ह्रीं अहं शमो परमग-  
सिद्धाण स्वाहा, ५९ ॐ ह्रीं अहं शमो प्रकाशसिद्धाणं स्वाहा, ६० ॐ ह्रीं अहं शमो स्वयंभूसिद्धाण स्वाहा,  
६१ ॐ ह्रीं अहं शमो अनन्तगुणसिद्धाण स्वाहा, ६२ ॐ ह्रीं अहं शमो परमानन्तगुणसिद्धाण स्वाहा,  
६३ ॐ ह्रीं अहं शमो लोकवासिसिद्धाण स्वाहा, ६४ ॐ ह्रीं अहं शमो अनाद्यनुपमसिद्धाण स्वाहा.

उदयति परमात्मज्योतिरुद्योति, यस्मात् ।  
विशदविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम् ।  
शुचितरघनसारोद्भासिभिश्चन्दनौघै,—  
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ २ ॥ चन्दनम् ॥  
अहमहमिकयोच्चैः सम्यगाराधनायाम् ।  
सुरनरखचरेन्द्राः यस्य भक्त्या यतन्ते ॥  
ललितसदकपुंजैः केवलज्ञानहेतो,—  
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ३ ॥ अक्षतान् ॥

३७



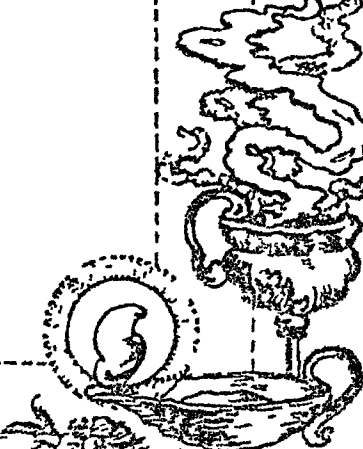


भवभयगुरुपारावारपारं लभन्ते,  
विहिताशिवसमृद्धेः सेवया यस्य सन्तः ।  
कमलवकुलकुंदोदारमंदार पुष्पै-  
र्गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ॥

जननवनहुताशं खिन्नसन्मोहपाशम्,  
शमितमदनमानं विश्वविद्यानिदानम् ।  
चरुभिरुरुगुणौघं प्रीणितप्राणिसंघम् ।  
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ॥

चिदचिदरिवलजीवाजीवभेदादिवेद्यम्,  
सकलभुवननेत्रं ज्ञानमाविष्करोति ।  
स्मरणमपि यदीयं दीपदीप्रप्रभौघैः,  
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ६ ॥ दीपम् ॥

भवति न भवभाजां ध्यानतो यस्य पीडा,  
ग्रहदितिशितिरक्षःप्रेतभूतप्रसृता ।





— सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान —

अगुरुतुहिनभास्वचन्दनोद्भूतधूपैः,  
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ७ ॥ धूपम् ॥

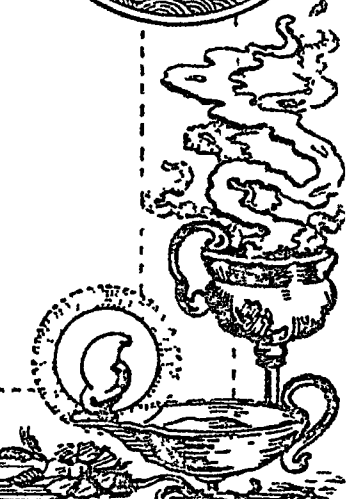
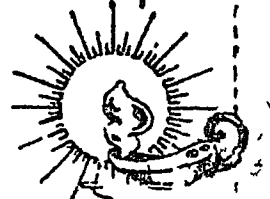
फलमतुलमनंतं मुक्तिसौख्यं प्रदीप्तम्,  
फलति त्रिपुलसेवा सम्यगाविःकृतोच्चैः ।  
असदृशमहिमश्रीमंदिरं मातुर्लिंगै,—  
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ८ ॥ फलानि ॥

अभिनवजलगंधामंदमंदारमाला,—  
ललितममलमर्घ संददाम्यादरेण ।  
गणधरवलयाय श्रीयुजे पद्मनन्दी,  
सुरहरिमहितायाः प्राप्तये मुक्तिलक्ष्म्याः ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

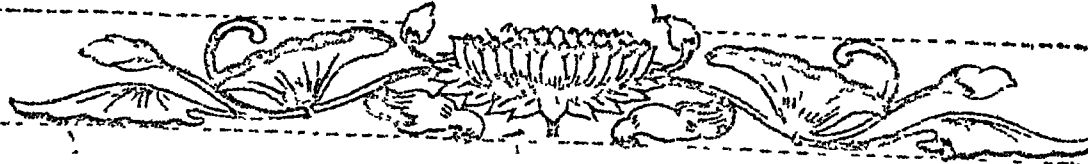
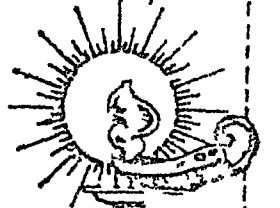
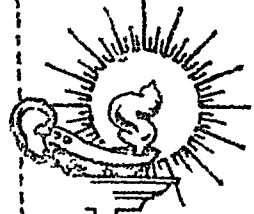
ॐ ह्रीं असिआउसानमः एतन्मंत्रेणाष्टोत्तर शतं जाप्यं देयम् ।

अथ जयमाला—

योगीन्द्रैर्निजमानसे प्रतिदिनं संचिन्तनीयाः स्वयम्,  
देवा इन्द्रनरेन्द्रपूजितपदा दुष्कर्मविच्छिन्तये ।



कर्मावघ्रविवर्जिता वसुगुणालंकरभृताः सदा,  
 सिद्धान्तान् जयमालया विमलया भक्त्या स्तवीमि श्रिये ॥ १ ॥  
 महादृढमोहविधेः परमुक्त, स्वकीयगुणद्रविणद्युतिरक्त ।  
 चिदात्मरुचे निजजात विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ २ ॥  
 चिदावरणक्षयनिश्चितवास, स्वनंतपदार्थविभेदसमास ।  
 चिदात्मचितो निजर्जातनिकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ३ ॥  
 स्वकातमवर्जित दर्शनधार, स्वलेपितदर्शनलोपकभार ।  
 सुकेवलदर्शनतोय विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ४ ॥  
 सुदृक्चिदनंतसुशक्तिकदेह, क्षयंकृतविघ्नकरब्रजगेह ।  
 चिदात्मसुवीर्यगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ५ ॥  
 क्षयंगतनाम चिरंधृतसूक्ष्म, समीपनिर्मिततद्गुणलक्ष्म ।  
 चिदात्मकसूक्ष्मगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ६ ॥  
 अरूप्यवगाहनभावसुपूर, चतुर्विधपापविकर्दमदूर ।  
 ततस्त्वमनंतगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ७ ॥



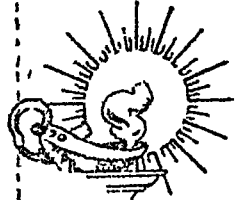
सिद्ध चक्र

हीं

मंडल विधान

पृ०

४

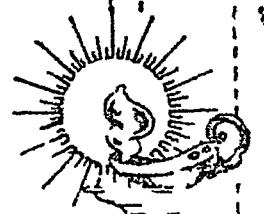


निरस्तगुरुत्वलघुत्वकभाव, तथा भवकाननदुःसहदाव ।  
द्विधातुलकर्मगतेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ८ ॥  
द्विधाहतदुःखदवेदनपक्ष, स्वकात्मसमर्पितशास्वतसौख्य ।  
अबाधकदेवगुणेन विकाय, पुनातु सदा मम सिद्धनिकाय ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं अर्ह असिआ उसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौ झौ नमः पूर्णार्घम् स्वाहा ।

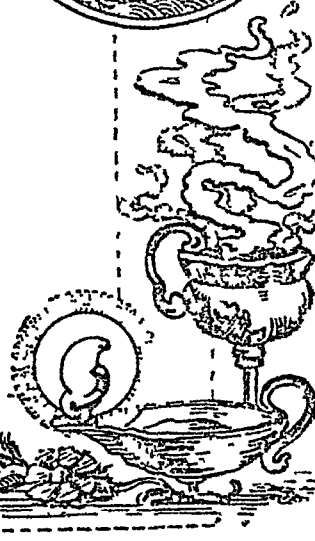
घत्ता—विधुतकुविधिपाशं मुक्तिलीलाविलासम्,  
परमगुणनिवासं चित्सरोराजहंसम् ।  
विभुतनृपसुचक्रैः संस्तुतं सिद्धचक्र ।—  
मतनु च निजभक्त्या वन्दते शौभचन्द्रः ॥ १० ॥

इत्याशीर्वादः



### चतुर्थ जयमालाका अर्थ

मै उन सिद्ध भगवान्की, मोक्षलक्ष्मीकी प्राप्तिके लिये भक्तिपूर्वक विमल जयमालाके द्वारा स्तुति करता हूँ जिनका अपने मनमें स्वयं योगीन्द्र भी दुष्कर्मोंकी व्युच्छित्तिके लिये चिन्तवन करते है, जिनके चरण कमल इन्द्र तथा नरेन्द्रोंके द्वारा भी पूजित है, कर्मरूप अवधसे जो रहित, और सदा अष्ट गुणोंके अलंकारभूत है ॥ १ ॥



सिद्ध चक्र

ही

मंडलविधान

महान् दृढ मोहकर्मसे सर्वथा रहित, अपने गुणरूपी सुवर्णकी कांतिसे रंजित, चित्स्वरूप रुचिके धारक, अपने स्वरूपमे ही उत्पन्न, शरीर रहित, सिद्धसमूह सदा मुझे पवित्र करो ॥ २ ॥ चेतनाके आवरण करनेवाले—ज्ञानावरण दर्शनावरणके ज्यसे निश्चित है वास जिनका, अनन्त पदार्थोंका भेद करके भले प्रकार रहनेवाले, ..... हे सिद्धसमूह सदा मुझे पवित्र करो ॥ ३ ॥ .....  
॥ ४ ॥ सम्यग्दर्शनज्ञानरूप अनन्त शक्तिके पिंड, नष्ट कर दिया है विघ्न करनेवाले कर्म समूहको जिन्होंने, चित्स्वरूप अनन्त वीर्य गुणके स्वामी अशरीर सिद्धसमूह मुझे सदा पवित्र करो ॥ ५ ॥ क्षयको प्राप्त हो गया है नाम कर्म जिनका, सूक्ष्मत्व गुणको धारण करनेवाले, अपने निर्मितगुण ही हैं चिन्ह जिनका, चित्स्वरूप सूक्ष्मगुणके स्वामी अशरीर सिद्ध निकाय मुझे सदा पवित्र करो ॥ ६ ॥ अरूपी, अवगाहन गुणसे पूर्ण, चार तरहके आयु कर्मरूप कीचड़से दूर, अनन्तगुणोंके स्वामी अशरीर सिद्ध निकाय मुझे सदा पवित्र करो ॥ ७ ॥ गुरुत्वलघुत्वभावसे रहित, संसार रूपी वनकी दुःसह अग्निका जिन्होंने निरसन कर दिया है, दो प्रकारके अतुल गोत्रकर्मसे रहित स्वामी अशरीर सिद्धनिकाय सदा मुझे पवित्र करो ॥ ८ ॥ दोनोंही तरहके दुःख देनेवाले वेदनीय कर्मके पत्तका जिन्होंने घात कर दिया है, स्वयंका प्राप्त कर लिया है शाश्वत सुख जिनने ऐसे बाधरहित गुणोंके स्वामी देव अशरीर सिद्धनिकाय सदा मुझे पवित्र करो ॥ ९ ॥

१-२-इनका अर्थ ठीक २ हमारी समझमें नहीं आ सका । ३-इस जयमालाके दूसरे आदि पद्यमे क्रमसे मोह ज्ञानावरण—दर्शनावरण—अन्तराय—नाम—आयु—गोत्र—और वेदनीय इन आठ कर्मोंके अभावसे प्राप्त गुणोंकी अपेक्षा सिद्धोंकी महिमाका वर्णन किया गया है ।

सिद्ध चक्र

हीं

मंडल विधान

अथ पंचमपरिधिगताष्टविंशोत्तरशतदलपूजा ।

ऊर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।  
वर्गापूरितादिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्वान्वितम् ॥  
अन्तः पत्रतटेष्वाहृतयुतं हींकारसंवेष्टितम् ।  
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभक्तंठीरवः ॥ १ ॥  
( पुष्पं दत्त्वा स्थापनां कुर्यात् )

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।  
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥  
सकलामरेन्द्रसंख्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।  
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेधौघम् ॥ २ ॥

ॐ हीं रामो सिद्धाणां सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्  
” ” ” ” ” अत्र तिष्ठ २ ठः ठः  
” ” ” ” ” अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्



अथाष्टकम्—

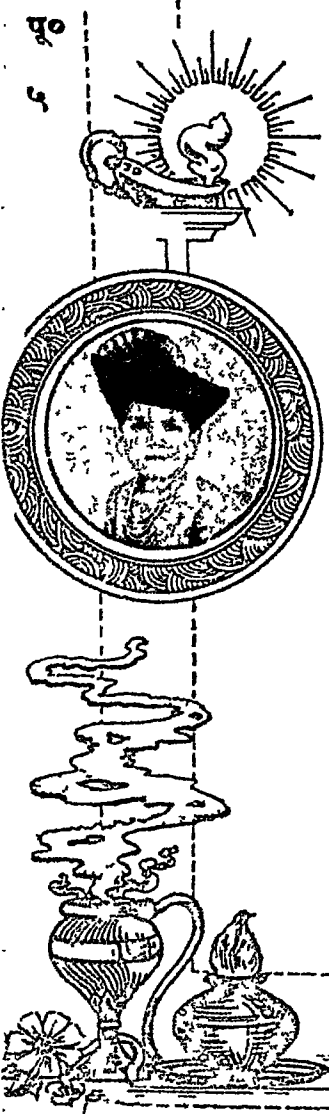
विमलशतिलसज्जलधारया, सविधवंधुरकेशरसारया ।

प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्, प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं स्वस्थानमाश्रितातीतानागतसिद्धाधिपतिभ्यो नमः स्वाहा, जलम् । इति समुच्चयमंत्रः ।

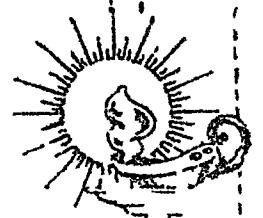
अथ प्रत्येकमंत्राः

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र्येभ्यो नमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अस्तित्वधर्माय नमः स्वाहा । २ ।  
 ॐ ह्रीं वस्तुत्वधर्माय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं प्रमेयत्वधर्माय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं चेतनत्वधर्माय  
 नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वधर्माय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं अमूर्तत्वधर्माय नमः स्वाहा । ७ ।  
 ॐ ह्रीं प्रदेशत्वधर्माय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं सम्यक्त्वधर्माय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं ज्ञानधर्माय  
 नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं वीर्यधर्माय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मधर्माय नमः स्वाहा । १२ ।  
 ॐ ह्रीं अवगाहनधर्माय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं अव्यावाधगुणाय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं  
 स्वसंवेदनज्ञानाय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनादिचतुष्टयात्मकार्हद्भ्यो नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं  
 सम्यक्त्वादिगुणात्मकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं पंचाचाराचार्येभ्यो नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं  
 रत्नत्रयप्रकाशपाठकेभ्यो नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं स्वस्वरूपसाधकसर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा । २० ।



# सिद्ध यज्ञ ह्रीं मंडलविधान

ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधसरम्भमनोगुप्तये नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधसरम्भसानन्द-  
वर्माय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधसरम्भानन्दधर्माय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोध-  
समारम्भपरमानन्दाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधसमारम्भसंतुष्टधर्माय नमः स्वाहा । २५ ।  
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधसमारम्भसंतोषधर्माय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधारम्भस्थानाय  
नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधारम्भस्थानाय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनः  
क्रोधारम्भस्थानाय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसरम्भधर्माय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं  
अकारितमनोमानसरम्भानन्यशरणाय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसरम्भसुगतभावाय नमः  
स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसमारम्भसुखात्मगुणाय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसमा-  
रम्भानन्यगताय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसमारम्भानन्यशरणाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ  
ह्रीं अकृतमनोमानारम्भानन्तज्ञानाय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं अकारितमनोमानारम्भानन्तगुणाय नमः स्वाहा  
। ३७ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानारम्भानन्तगुणाय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासरम्भब्रह्मस्वरू-  
पाय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासरम्भचेतन्यस्वभावाय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं नानु-  
मोदितमनोमायासरम्भानन्यस्वभावाय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासमारम्भस्वानुभूतिरत्नाय नमः  
स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासमारम्भसाम्यधर्माय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनो-  
मायासमारम्भाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं अकृतमनोमायारम्भपरमशातभावाय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ  
ह्रीं अकारितमनोमायारम्भनिराकुलस्वभावाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायारम्भानन्यत्वाय



शिद्ध चक्र

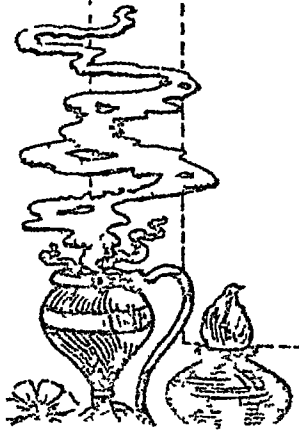
ह्रीं

मंडल विधान

नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसंरम्भानन्तभावाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं अकारितमनो-  
लोभसरम्भपरमानन्दभावाय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसंरम्भभावायः नमः स्वाहा  
। ५० । ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसमारम्भविदाकाराय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसमारम्भ-  
नन्ताकाराय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसमारम्भाकारभावाय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं  
अकृतमनोलोभारम्भचिदाकाराय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभारम्भचिन्मयस्वरूपाय  
नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभारम्भस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं अकृतवचन-  
क्रोधसंरम्भवाग्गुप्तये नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसंरम्भसिद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५८ ।  
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसंरम्भस्यात्मोपलब्धिप्राप्ताय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसमारम्भ-  
स्वानुभूतिरताय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसमारम्भासाधारणधर्माय नमः स्वाहा । ६१ ।  
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसमारम्भपरमशान्तिस्वभावाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधारम्भपर-  
मामृततुष्टाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधारम्भसमरसरसिकाय नमः स्वाहा । ६४ ।  
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधारम्भपरमगातये नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसंरम्भस्वधर्माय नमः  
स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसंरम्भाव्यक्तस्वभावाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचन-  
मानसंरम्भदुर्लभाय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसमारम्भपरमसंगमनिराकरणाय नमः स्वाहा । ६९ ।  
ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसमारम्भपरमस्वभावाय नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसमारम्भैकत्व-  
गतपरमसुखाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं अकृतवचनमानारम्भपरमात्मराजपरमधर्माय नमः स्वाहा । ७२ ।

५०

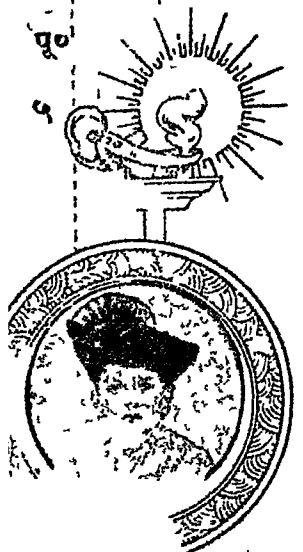
५०



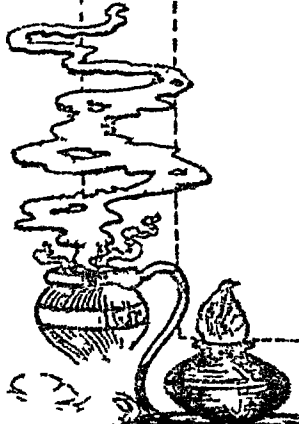
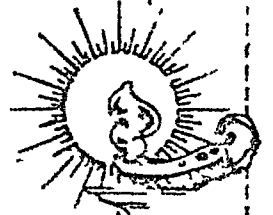


# सिद्ध चक्र ही मंडल विधान

ॐ हीं अकारितवचनमानारम्भशास्वतानन्दाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ हीं नानुमोदितवचनमानारम्भामृतपूर्णाय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ हीं अकृतवचनमायासंरम्भानन्तधर्मैकरूपाय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ हीं अकारितवचनमायासरम्भामृतचन्द्राय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ हीं नानुमोदितवचनमायासंरम्भानेकान्तमयमूर्त्ये नमः स्वाहा । ७७ । ॐ हीं अकृतवचनमायासमारम्भसत्तालोकगुणाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ हीं अकारितवचनमायासमारम्भसत्तालोकगुणाय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ हीं नानुमोदितवचनमायासमारम्भानेकान्तमयमूर्त्ये नमः स्वाहा । ८० । ॐ हीं अकृतवचनमायारम्भानुलज्ञानाय नमः स्वाहा । ८१ । ॐ हीं अकारितवचनमायारम्भानुलज्ञानाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ हीं नानुमोदितवचनमायारम्भनिरवधिसुखाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ हीं अकृतवचनलोभसंरम्भव्यापकधर्माय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ हीं अकारितवचनलोभसंरम्भव्यापकगुणाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ हीं नानुमोदितवचनलोभसंरम्भाचलाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ हीं अकृतवचनलोभसमारम्भनिरालम्बाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ हीं अकारितवचनलोभसमारम्भनिरालम्बाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ हीं नानुमोदितवचनलोभममारम्भाखण्डाय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ हीं अकृतवचनलोभारम्भसमयसाराय नमः स्वाहा । ९० । ॐ हीं अकारितवचनलोभारम्भसमयसाराय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ हीं नानुमोदितवचनलोभारम्भनिरंजनाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ हीं अकृतकायक्रोधसंरम्भकायगुप्तये नमः स्वाहा । ९३ । ॐ हीं अकारितकायक्रोधसंरम्भकायाय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ हीं नानुमोदितकायक्रोधसंरम्भशुद्धकायाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ हीं अकृतकायक्रोधसमारम्भसत्त्वगुणाय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ हीं अकारिकायक्रोधसमारम्भानन्यशरणाय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ हीं नानुमोदितकायक्रोधसमारम्भान-



न्यग्राणाय नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधारम्भशुद्धव्याय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधारम्भासंसाराय नमः स्वाहा । १०० । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधारम्भजैनधर्माय नमः स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं अकृतकायमानसंरम्भस्वरसगुप्तये नमः स्वाहा । १०२ । ॐ ह्रीं अकारिनकायमानसरम्भस्वरूपगुप्तये नमः स्वाहा । १०३ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसंरम्भध्येयभावाय नमः स्वाहा । १०४ । ॐ ह्रीं अकृतकायमानसमारम्भपरमाराध्याय नमः स्वाहा । १०५ । ॐ ह्रीं अकारितकायमानसमारम्भानन्दगुणाय नमः स्वाहा । १०६ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसमारम्भस्वानन्दनन्दिताय नमः स्वाहा । १०७ । ॐ ह्रीं अकृतकायमानारम्भपरमसंतोषाय नमः स्वाहा । १०८ । ॐ ह्रीं अकारितकायमानारम्भम्यभावाय नमः स्वाहा । १०९ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानारम्भशुद्धपर्यायधर्माय नमः स्वाहा । ११० । ॐ ह्रीं अकृतकायमायासरम्भामृतगर्भाय नमः स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं अकारितकायमायासरम्भचैतन्यात्मकाय नमः स्वाहा । ११२ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासरम्भसमस्तभावाय नमः स्वाहा । ११३ । ॐ अकृतकायमायासमारम्भाच्छेदनाय नमः स्वाहा । ११४ । ॐ ह्रीं अकारितकायमायासमारम्भस्वतन्त्रधर्माय नमः स्वाहा । ११५ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासमारम्भधर्मसमूहाय नमः स्वाहा । ११६ । ॐ ह्रीं अकृतकायमायासरम्भपरमात्मभुवे नमः स्वाहा । ११७ । ॐ ह्रीं अकारितकायमायासरम्भात्मकाय नमः स्वाहा । ११८ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासरम्भात्मनिष्ठाय नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसंरम्भान्तोभाय नमः स्वाहा । १२० । ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसंरम्भस्त्रभावाय नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसंरम्भभावाय नमः स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसमारम्भपरमचित्परिणताय नमः स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं अकारितकाय-



५०



लोभसमारम्भस्वधर्मरताय नमः स्वाहा । १२४ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसमारम्भाव्यक्तधर्माय नमः स्वाहा । १२५ । ॐ ह्रीं अकृतकायलोभारम्भसुखाय नमः स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं अकारितकायलोभारम्भाकषायाय नमः स्वाहा । १२७ । ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभारम्भशौचगुणाय नमः स्वाहा । १२८ ।

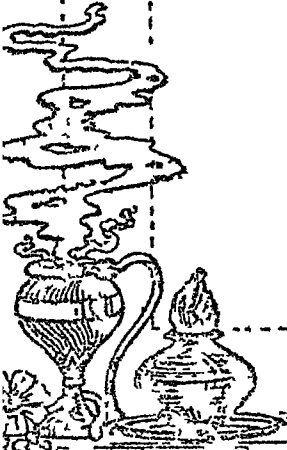
४९



घुसृणकुंकुमचन्दसनदभवैः, बहुसुगंधितानिर्मलप्रासुकैः ।  
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्, प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ २ ॥ चन्दनम् ।

विमलतन्दुलनिर्मलसंचयैः,  
कृतसुमौक्तिककल्पसुनिश्चयैः ।  
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,  
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

कुसुमचंपकपंकजकुंदकैः,  
सहजजातसुगंधविमोदकैः ।  
प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,  
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ।

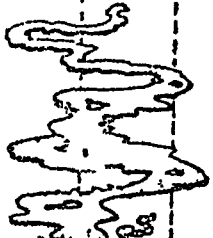


पृ०



सकललोकविमोदनकारकैः,  
 चरुवैश्वसुधाकृतिधारकैः ।  
 प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,  
 प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम्,  
 तरलवार सुकांतसुमंडनैः,  
 सदनरत्नचयैरघरवण्डनैः ।  
 प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,  
 प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ६ ॥ दीपम् ॥  
 अगुरुधूपभवेन सुगन्धिना ।  
 भ्रमरकोटिसमिन्द्रियबन्धुना ।  
 प्रथमबोधकसत्कजिनेश्वरम्,  
 प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ७ ॥ धूपम् ।  
 मुखदपकसुशोभनसत्फलैः,  
 क्रमुकनिम्बुकमोचमुलांगलैः ।

पृ०



प्रथमबोधकसत्काजिनेश्वरम्,  
प्रवियजे नुतनाकनरेश्वरम् ॥ ८ ॥ फलम् ॥

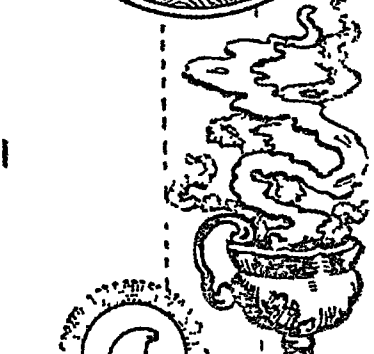
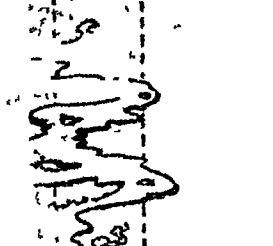
जिनवरागमसद्गुरुमुख्यकान्,  
प्रवियजे गुरुसद्गुणमुख्यकान् ।

सुशुभचन्द्रतरान् कुसुमांत्करान्,  
समयसारपरान् सुरवसागरे ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

ॐ ह्रीं असिब्राह्मणसामः, इतिमंत्रेण जपः करणीयः ।

ये ज्ञानावरणादिकानतितरां निर्भूल्य दोषान् बलात्,  
संसारोरुसरिद्विशोषकमहः संदर्शनादीन् गताः ।

सिद्धस्तोत्रविबुद्धज्ञानमहसां कुर्वन्तु सिद्धाः श्रियम्,  
चक्रिप्रहसुंरन्द्रपूजिपदा भक्तात्मनां सर्वदा ॥१॥ पुष्पांजलिः ॥

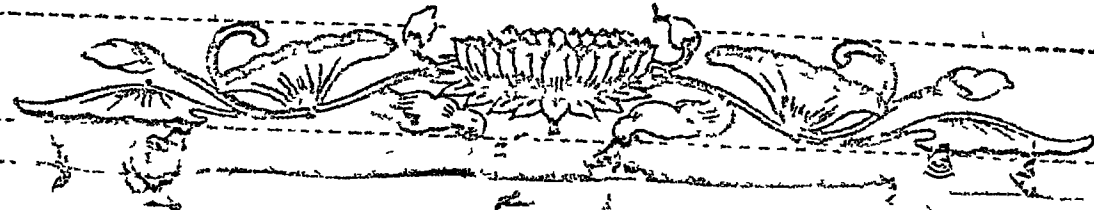
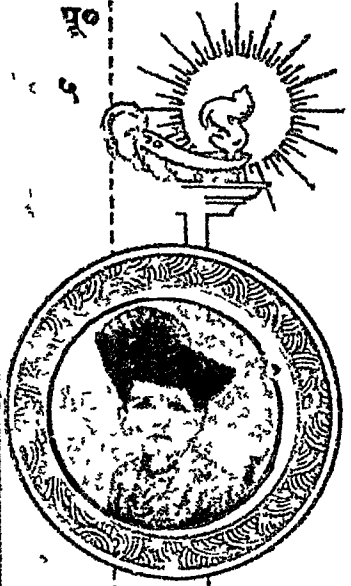


अथ जयमाला

चिदानन्दमानन्दलीलानिवासम्,  
 अखण्डस्वभावं जिनं सिद्धराशिम् ।  
 विषादोज्झितं धीतरागं विचक्रम्,  
 सदा तोष्टवीति स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

विशुद्धोदयं प्राप्तसंसारपारम्,  
 सुसंविन्निधानं परं निर्विकारम् ।  
 विषायं विभायं विनायं विचक्रम्,  
 सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥

विमुक्ताशयादित्यविज्ञाननेत्रम्,  
 विमोहं समस्फारणीयूपगात्रम् ।  
 अमेयप्रभावं विदर्पं विचक्रम्,  
 सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥

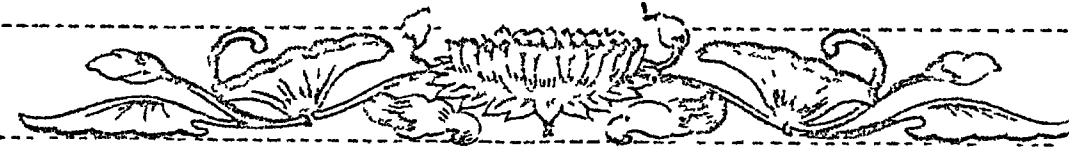
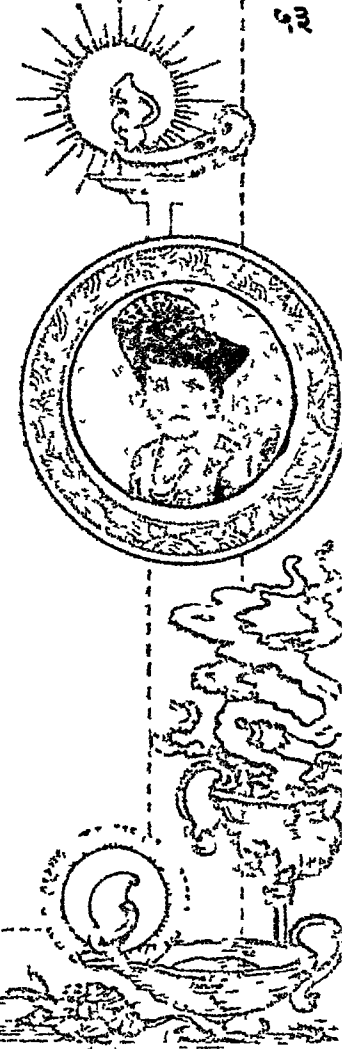
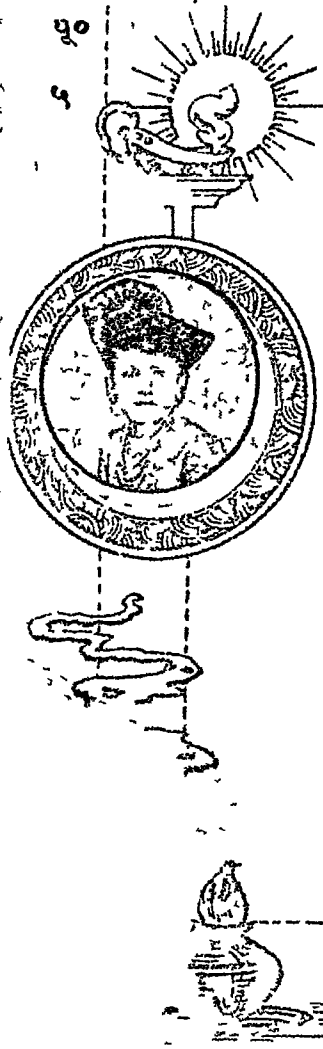


विविक्तं कलं निष्कलं कविस्थम्,  
सुसेव्यं विपाकं विशंकं ह्यपारम् ।  
विकालं विकायं विकारं विचक्रम्,  
सदा तोष्ट्वीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥

त्रिलोकातिशायिप्रभं विश्वरूपम्,  
गृहं तेजसां वीतवर्णं विरूपम् ।  
सदा दृढमयं ध्येयरूपं विचक्रम्,  
सदा तोष्ट्वीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥

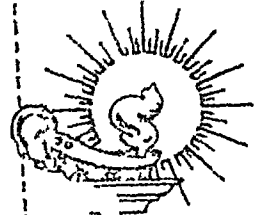
अगम्यं मुनीनामपि सुप्रबोधम्,  
कृताहंकृतिक्रोधचिन्तानिरोधम् ।  
अपारं जरामृत्युमुक्तं विचक्रम्,  
सदा तोष्ट्वीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥

अनंतं विरामं विकारावमुक्तम्,  
विमुक्तस्फुरत्कामिनीरंगरक्तम् ।



पृ०

५



निरीहापघातं विहीनं विचक्रम्,  
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥

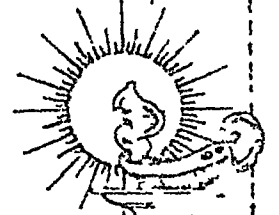
प्रदुष्टाष्टकमेन्धनेभ्यो हुताशम्,  
सुसिद्धाष्टकं चिद्रुणं चिद्विलासम् ।

उदासीनमीशानमीशं विचक्रम्,  
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥

अजं शास्त्रतं निर्जरं देवदेवम्,  
विलोभं कृतानेकभूपालसेवम् ।  
वषट्कृतं वा विपाशं विचक्रम्,  
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ ९ ॥

प्रयाति क्षयं कर्म यद्ध्यानयोगात्,  
समत्वं गतानां मुनीनां क्षणेन ।

प्रसिद्धं विशुद्धं तथानन्दरूपम्,  
सदा तोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ॥ १० ॥





विगतमदनभेदं दोषसंदोहरोधम्,  
स्मरति विरसपूर्णं शंकरं सारभूतम् ।  
अजरममरवन्द्यं पद्मनन्दादिदेवम्,  
मुनिनिवहनिपेव्यं सिद्धचक्रं सुदेवम् ॥ ११ ॥

इत्थं सिद्धमुपास्य शर्मसहितं संसारवाधापहम्,  
नोद्रव्याशुभभावकर्मरहितम् संपन्नपर्यापहम् ।  
यो ध्यायेत्फलमश्नुते शिवमयं सौमं स हित्वाऽशिवम्,  
संभुक्त्वाखिलमंडलेशविबुधस्वामिस्थितिं सर्वतः ॥ १२ ॥

इत्याशीर्वादः



### पंचम जयमालाका अर्थ

जो ज्ञानावरणादि दोषोंका बलपूर्वक और अच्छी तरहसे निर्मूलन कर ससाररूपी नदीके शोषण करने वाले सम्यग्दर्शनादिकको प्राप्त हो चुके है, चक्रवर्तिप्रमुख अथवा सुरेन्द्रोके द्वारा पूजित है चरण जिनके ऐसे सिद्ध भगवान् सिद्धस्तोत्रके द्वारा प्रकट हो गया है ज्ञानरूप तेज जिनका ऐसे भक्तात्माओंको मोक्षलक्ष्मी प्रदान करे ॥ १ ॥

चिदानन्दस्वरूप, सुखके लीलास्थल, अखण्ड है स्वभाव जिनका, कर्मोंके विजेता, सिद्धात्माओंके समूहरूप, विपादरहित, वीतराग, चक्र—पारवण्ड अथवा सांसारिक परिवर्तनसे दूर सिद्धसमूहका मैं सदा अच्छी तरह स्तवन करता हूँ । २ । विशुद्ध है उदय जिनका, जो ससारके पारको प्राप्त हो चुके है, सम्यग्ज्ञानके निधान, उत्कृष्ट, निर्विकार, मायारहित, विभा - अलौकिक प्रभाको प्राप्त, उत्कृष्ट नेतृत्वके धारक संसाररहित सिद्धसमूहका मैं स्तवन करता हूँ ॥ ३ ॥

आशय—सकल्पत्रिकल्पसे रहित सूर्यके समान ज्ञान ही है नेत्र जिनका, मोहरहित, समतारूपी महान्अमृत ही है शरीर जिनका, अप्रमाण प्रभावके धारक, दर्परहित, अशरीर सिद्धसमूहका मैं सदा स्तवन करता हूँ । ॥ ४ ॥ एकान्तरूप, मनोज्ञ, कलकरहित, विद्वानो या कवियोंके हृदयमे स्थित, भलेप्रकार सेव्य, विपाक अवस्थाको प्राप्त, शकारहित, अपार, काल-काय-काम और ससारचक्रसे रहित सिद्धसमूहका मैं सदा अच्छी तरह स्तवन करता हूँ । ॥ ५ ॥ तीन लोकमे सर्वोत्कृष्ट है प्रभा जिनकी, ज्ञानकी अपेक्षा जो विश्वरूप



५०

है, प्रकाशोंके निवासस्थान, वर्णरहित, विशिष्ट स्वरूपके धारक, सदा दर्शनमय, ध्येयरूप, संसाररहित सिद्ध-समूहका मैं सदा स्तवन करता हूँ ॥ ६ ॥ मुनियोंके लिये भी अगम्य, समीचीन उत्कृष्ट बोधरूप, कर दिया है अहंकार क्रोध और चिन्ताका निरोध जिन्होंने, अपार, जरा मृत्युसे रहित, ससार चक्रसे दूर सिद्ध समूहका मैं सदा स्तवन करता हूँ ॥ ७ ॥ अनन्त, विश्रामरूप, विकारोंसे रहित, छोड़ दिया है स्फुरायमान कामिनियोंका रग राग जिनने, इच्छा और अपघातसे रहित, उत्कृष्ट, ससाररहित सिद्धसमूहका मैं सदा स्तवन करता हूँ ॥ ८ ॥ अत्यन्त दुष्ट अष्ट कर्मरूपी इन्धनके लिये अग्निसमान, सिद्ध कर लिया है गुणाष्टकको जिनने, चिद्गुणके धारक, चेतनाका ही है विलास जिनमे, उदासीन—बीतराग, ईशान—परमेश्वर, परमात्मा, संसाररहित सिद्धसमूहका मैं सदा स्तवन करता हूँ ॥ ९ ॥ जन्मरहित, शाश्वत, जरा रहित, देवोंके भी देव, लोभरहित, की है अनेक मूपालोंने सेवा जिनकी, विकारोंके समूहको जिन्होंने आहुतिका विषय बना दिया है, ससारके पाशसे रहित, विचक्र सिद्धचक्रका मैं सदा स्तवन करता हूँ ॥ १० ॥ ... ॥ ११ ॥ समस्त कामदेवके भेदोंसे रहित, दोषोंके समूहका निरोध करनेवाले, रसरहित अवस्थासे पूर्ण, कल्याणकारी, सारभूत, अजर—कभी जीर्ण न होने वाले, देवोंके द्वारा बन्ध, पंचपरमेष्ठियोंमे प्रथम देव, मुनिसमूहके द्वारा सेव्य, समीचीन देवरूप सिद्धचक्रका पद्मनन्दी आचार्य स्मरण करते हैं ॥ १२ ॥ इस तरह कर्मरहित, ससारकी बाधाको दूर करनेवाले, नोकर्म द्रव्यकर्म और अशुभ भावकर्मसे रहित, नवीन अवस्थाको प्राप्त सिद्ध परमेष्ठोंका जो ध्यान करता है वह समस्त अशुभका परित्याग करके और सम्पूर्ण माडलिक राजाओं तथा देवोंके स्वामित्वको भले प्रकार भोग करके अमृतरूप शिवमय—कल्याणमय फलको प्राप्त हुआ करता है ॥ १३ ॥

५७



## अथ षष्ठपरिधिपूजा ।

उर्ध्वाधोरयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम्,  
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्त्वान्वितम् ।

अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितम्,  
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभक्कण्ठीरवः ॥ १ ॥

( पुष्पं दत्त्वा स्थापनां कुर्यात् )

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्,  
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसंख्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।  
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं रामो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्

” ” ” ” ” अत्र तिष्ठ २ ठः ठः

” ” ” ” ” अत्र मम सन्निहितो भव २ वपट्



अथाष्टकम्—

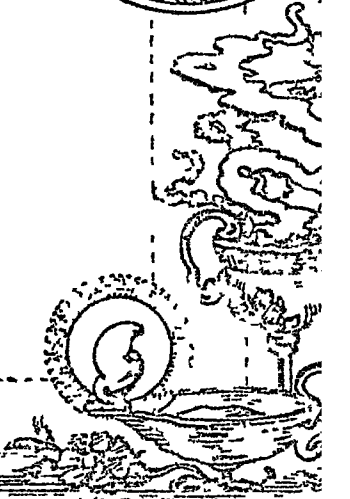
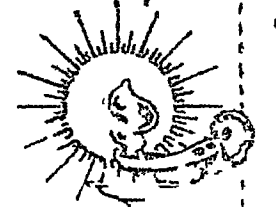
शुचिविमलपवित्रैस्तीर्थसंभूततौयैः  
सुरभिवरसुमिश्रैः सेवितैः पद्पदौघैः ।

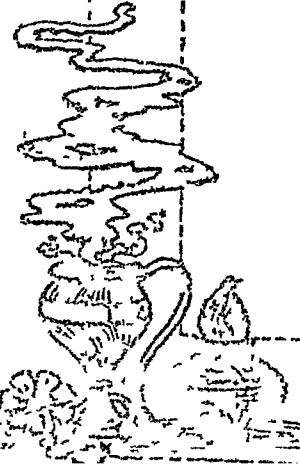
कनककृतसुपूजादत्तभृंगारनालैः,  
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

ॐ ही चिरतरसंसारकारणाज्ञाननिर्भूतोद्भूतकेवलज्ञानातिशयसम्पन्नसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा, जलम्,  
इति समुच्चयमत्रः ।

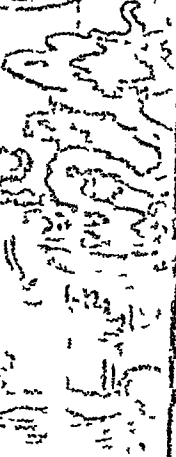
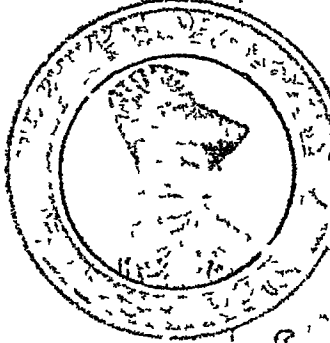
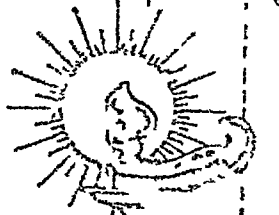
अथ पृथक् २ मंत्राः—

ॐ ही अभिनिबोधवारकविनाशकसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । १ । ॐ ही द्वादशश्रुतावरणीय  
कर्मविमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । २ । ॐ ही असंख्येयलोकभेदविभिन्नावधिज्ञानावरणाविमुक्ताय  
सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ३ । ॐ ही मनःपर्ययज्ञानावरणरहितसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ४ । ॐ ही  
निरिवलद्रव्यगुणपर्यायावबोधककेवलज्ञानावरणियविमुक्ताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ५ । ॐ ही सकलदर्श-  
नावरणाविनाशकसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ६ । ॐ ही सर्वकर्ममुक्तसिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ७ । ॐ ही  
दर्शनावरणीयकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये नमः स्वाहा । ८ । ॐ ही चक्षुर्दर्शनावरणाकर्मरजौमुक्ताय नमः  
स्वाहा । ९ । ॐ ही अचक्षुर्दर्शनावरणाविमुक्ताय नमः स्वाहा । १० । ॐ ही अवधिदर्शनावरणाविमुक्ताय



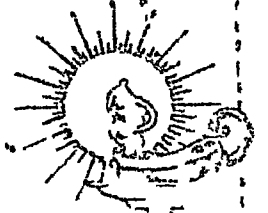


नमः स्वाहा । ११ ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणविमुक्ताय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं निद्राकर्मविमुक्ताय  
 नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं निद्रानिद्राकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं प्रचलकर्मरहिताय नमः  
 स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं प्रचला प्रचलाकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं स्यानगृद्धिकर्मरहिताय नमः  
 स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं असातावेदनीयकर्ममुक्ताय नमः  
 स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं सातावेदनीयकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं प्रबलतरमहामोहकर्मविप्रमुक्ताय  
 नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं मिथ्यात्वकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं सम्यग्मिथ्यात्वकर्मरहिताय नमः  
 स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं सम्यक्त्वकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं अनन्तानुवन्धिकोवविमुक्ताय नमः  
 स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं अनन्तानुवन्विमानमुक्ताय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं अनन्तानुवन्विमायाविमुक्ताय  
 नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं अनन्तानुवन्विलोभमुक्ताय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोव-  
 रहिताय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमानमुक्ताय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं  
 अप्रत्याख्यानावरणमायामुक्ताय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभरहिताय नमः स्वाहा । ३२ ।  
 ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोवमुक्ताय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानमानमुक्ताय नमः स्वाहा । ३४ ।  
 ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानमायामुक्ताय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानलोभलघकाय नमः स्वाहा । ३६ ।  
 ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोवरहिताय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं संज्वलनमानरहिताय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं  
 संज्वलनमायामुक्ताय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं संज्वलनलोभरहिताय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं  
 ह्याम्यहिसकाय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं रतिरहिताय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं अरतिद्वेषकाय नमः



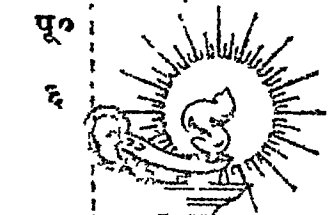
पू०

स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं शोकशंकानिवारकाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं भयकर्मभंजकाय नमः स्वाहा । ४५ ।  
 ॐ ह्रीं जुगुप्सारोगचिकित्सकाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं लीवेदकर्मरहिताय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं  
 पुवेदमारकाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं नपुंसकवेदविनाशकाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं आयुष्यकर्म-  
 मुक्ताय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं नरकायुष्कर्मरहिताय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं तिर्यगायुष्यकर्ममुक्ताय  
 नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं मनुष्यायुष्कर्मकृतान्तकाय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं देवायुष्कर्मरहिताय नमः  
 स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं नामकर्मरहिताय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं नारकगतिनिवारकाय नमः स्वाहा  
 । ५६ । ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिछेदकाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं मनुष्यगतिनामकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । ५८ ।  
 ॐ ह्रीं देवगतिनामकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं एकेन्द्रियजातिजयप्राप्ताय नमः स्वाहा । ६० ।  
 ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजातिनाममंथकाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजातिनामकर्मनाशकाय नमः  
 स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजातिविध्वंसकाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं पचेन्द्रियजाति-  
 रहिताय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं औदारिककर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं वैक्रियिककर्मविध्वंसकाय  
 नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं आहारकशरीररहिताय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं तैजसकर्मविध्वंसकाय नमः  
 स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं कार्मणपिंडछेदकाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं औदारिकबंधनरहिताय नमः स्वाहा  
 । ७० । ॐ ह्रीं वैक्रियिकबंधनरहिताय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं आहारकबंधनरहिताय नमः स्वाहा । ७२ ।  
 ॐ ह्रीं तैजसबंधनरहिताय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं कार्मणबंधनमुक्ताय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं  
 औदारिकसंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं वैक्रियिकसंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं

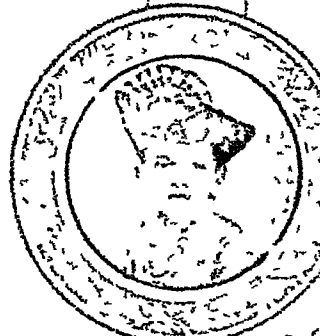


पृ०

६



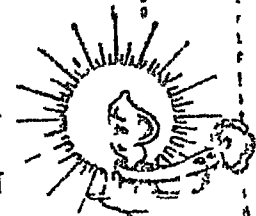
आहारकसंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं तेजससंघातरहिताय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं कार्मण-  
संघातरहिताय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानरहिताय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं न्यग्रोधप-  
रिमंडलसंस्थानविनाशकाय नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं वर्त्मकसंस्थानकृतान्तकाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं  
कुञ्जकसंस्थानरहिताय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं वामनसंस्थाननामकर्ममुक्ताय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं  
इडकसंस्थानशांतकाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं औदारिकशरीरांगोपागमुक्ताय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं  
वैक्रियिकागोपागघातकाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं आहारकागोपागविनाशकाय नमः स्वाहा । ८८ ।  
ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसहननशातकाय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं वज्रनाराचसहननरहिताय नमः स्वाहा  
। ९० । ॐ ह्रीं नाराचसहननस्फोटकाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं अर्द्धनाराचसहननशातकाय नमः स्वाहा  
। ९२ । ॐ ह्रीं कीलकसहननमुक्ताय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं असंप्राप्तस्फाटिकसहननभेदकाय नमः  
स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं श्वेतनामकर्मकृतातकाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं पातनामकर्मकृतातकाय नमः स्वाहा  
। ९६ । ॐ ह्रीं हरितकर्मरहिताय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं रक्तनामकर्मरहिताय नमः स्वाहा । ९८ ।  
ॐ ह्रीं कृष्णकर्मविभेदकाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं सुगंधनामकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १०० ।  
ॐ ह्रीं दुर्गन्धनामदूरीकारकाय नमः स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं तिक्तसररहिताय नमः स्वाहा । १०२ । ॐ ह्रीं  
कटुरसररहिताय नमः स्वाहा । १०३ । ॐ ह्रीं कपायसरकर्मखण्डकाय नमः स्वाहा । १०४ । ॐ ह्रीं अम्ल  
सररहिताय नमः स्वाहा । १०५ । ॐ ह्रीं मधुरसरविनाशकाय नमः स्वाहा । १०६ । ॐ ह्रीं मृदुस्वमुक्ताय  
नमः स्वाहा । १०७ । ॐ ह्रीं कर्कशस्पर्शहिसकाय नमः स्वाहा । १०८ । ॐ ह्रीं गुरुस्पर्शशातकाय नमः





५०

स्वाहा । १०९ । ॐ ह्रीं लघुस्पर्शत्यक्ताय नमः स्वाहा । ११० । ॐ ह्रीं शीतस्पर्शछेदकाय नमः  
 स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शभ्रसकाय नमः स्वाहा । ११२ । ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्शध्वंसकाय  
 नमः स्वाहा । ११३ । ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शरोवकाय नमः स्वाहा । ११४ । ॐ ह्रीं सर्वस्पर्शरहिनाय  
 नमः स्वाहा । ११५ । ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्विविनाशकाय नमः स्वाहा । ११६ । ॐ ह्रीं तिर्यगत्यानु-  
 पूर्विप्रतारकाय नमः स्वाहा । ११७ । ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्विविध्वंसकाय नमः स्वाहा । ११८ । ॐ ह्रीं  
 देवगत्यानुपूर्विछेदकाय नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वलंघकाय नमः स्वाहा । १२० । ॐ ह्रीं  
 उपघातघातकाय नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ह्रीं परघातनामकर्मविकर्मकाय नमः स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं  
 आतपघातकाय नमः स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं उद्योतकर्मदाहकाय नमः स्वाहा । १२४ । ॐ ह्रीं स्वासनि-  
 स्वासविमुक्ताय नमः स्वाहा । १२५ । ॐ ह्रीं प्रशस्तविहायोगतिप्रमुक्ताय नमः स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं  
 अप्रशस्तविहायोगतिनिर्णाशकाय नमः स्वाहा । १२७ । ॐ ह्रीं त्रसकर्मविनाशकाय नमः स्वाहा । १२८ ।  
 ॐ ह्रीं स्थावरकर्मविशारकाय नमः स्वाहा । १२९ । ॐ ह्रीं वाढरनामप्रवासकाय नमः स्वाहा । १३० ।  
 ॐ ह्रीं सूक्ष्मकर्मशोषकाय नमः स्वाहा । १३१ । ॐ ह्रीं पर्याप्तिकर्मरहिताय नमः स्वाहा । १३२ । ॐ ह्रीं  
 अपर्याप्तिकर्मनिषेधकाय नमः स्वाहा । १३३ । ॐ ह्रीं प्रत्येकशरीरहिंसकाय नमः स्वाहा । १३४ । ॐ ह्रीं  
 साधारणशरीरनिर्णाशकाय नमः स्वाहा । १३५ । ॐ ह्रीं स्थिरनामकर्मछेदकाय नमः स्वाहा । १३६ । ॐ ह्रीं  
 अस्थिरनामकर्मनिर्ग्रन्थकाय नमः स्वाहा । १३७ । ॐ ह्रीं शुभकर्मपाशकाय नमः स्वाहा । १३८ । ॐ ह्रीं  
 अशुभकर्मनिरसकाय नमः स्वाहा । १३९ । ॐ ह्रीं शुभकर्मनिवारकाय नमः स्वाहा । १४० । ॐ ह्रीं अशुभग-



सिद्धि यन्त्र

ह्रीं

संस्कृत विद्यालय

पृ०

६

कर्मनिरसकाय नमः स्वाहा । १४१ । ॐ ह्रीं सुस्वरपरिवर्जकाय नमः स्वाहा । १४२ । ॐ ह्रीं दुःस्वर-  
निवारकाय नमः स्वाहा । १४३ । ॐ ह्रीं आदेयप्रकृतिविनाशकाय नमः स्वाहा । १४४ । ॐ ह्रीं अनादेय-  
कर्मसारकाय नमः स्वाहा । १४५ । ॐ ह्रीं निर्माणनामकर्मकृतातकाय नमः स्वाहा । १४६ । ॐ ह्रीं यशः-  
कीर्तिछेदकाय नमः स्वाहा । १४७ । ॐ ह्रीं अयशःकीर्तिछेदकाय नमः स्वाहा । १४८ । ॐ ह्रीं पंच-  
कल्याणचतुर्ल्लिंशदतिशयाष्टप्रातिहार्यसमवसरणादिविभूतियुक्ताहृत्यलक्ष्मीहेतुतीर्थकरनामकर्मोष्भासकाय नमः  
स्वाहा । १४९ । ॐ ह्रीं उच्चगोत्रकर्मपिंजकाय नमः स्वाहा । १५० । ॐ ह्रीं नीचगोत्रकर्मविनाशकाय नमः  
स्वाहा । १५१ । ॐ ह्रीं दानान्तरायदाहकाय नमः स्वाहा । १५२ । ॐ ह्रीं लाभान्तरायकर्मोन्मथकाय नमः  
स्वाहा । १५३ । ॐ ह्रीं भोगान्तरायरहिताय नमः स्वाहा । १५४ । ॐ ह्रीं उपभोगान्तरायविनाशकाय नमः  
स्वाहा । १५५ । ॐ ह्रीं वीर्यान्तरायवारकाय नमः स्वाहा । १५६ । ॐ ह्रीं कर्माष्टकमुक्ताय नमः स्वाहा । १५७ ।  
ॐ ह्रीं कर्मशताष्टचत्वारिंशन्निवारकाय नमः स्वाहा । १५८ । ॐ ह्रीं सख्यातकर्मनिवारकाय नमः स्वाहा । १५९ ।  
ॐ ह्रीं असख्यातकर्मविदारकाय नमः स्वाहा । १६० । ॐ ह्रीं अनन्तानन्तकर्मनिवारकाय नमः स्वाहा  
। १६१ । ॐ ह्रीं सख्यातलोककर्मविवसकाय नमः स्वाहा । १६२ । ॐ ह्रीं आनन्दस्वभावाय नमः स्वाहा  
। १६३ । ॐ ह्रीं आनन्दवर्माय नमः स्वाहा । १६४ । ॐ ह्रीं आनन्दस्वरूपाय नमः स्वाहा । १६५ ।  
ॐ ह्रीं परमानन्दवर्माय नमः स्वाहा । १६६ । ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय नमः स्वाहा । १६७ । ॐ ह्रीं अनन्त-  
गुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । १६८ । ॐ ह्रीं अनन्तवर्माय नमः स्वाहा । १६९ । ॐ ह्रीं शमस्वभावाय नमः  
स्वाहा । १७० । ॐ ह्रीं शमसन्तुष्टाय नमः स्वाहा । १७१ । ॐ ह्रीं शमसतोपाय नमः स्वाहा । १७२ ।

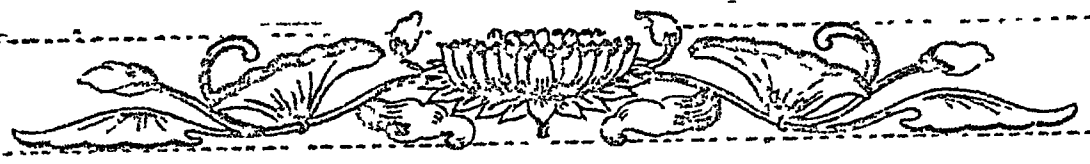
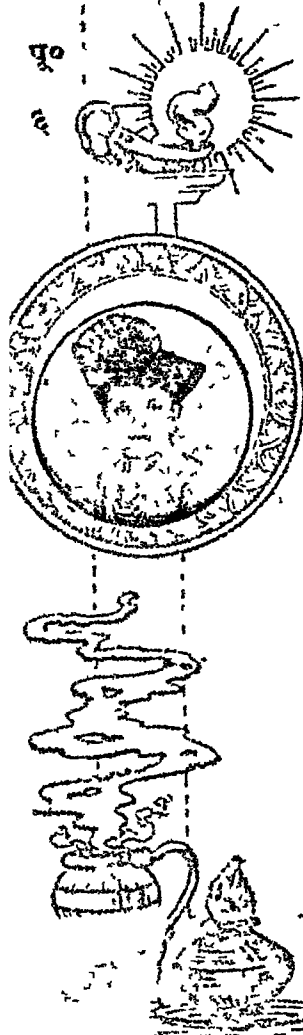


सिद्ध चक्र

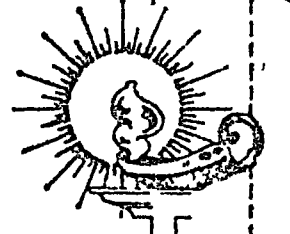
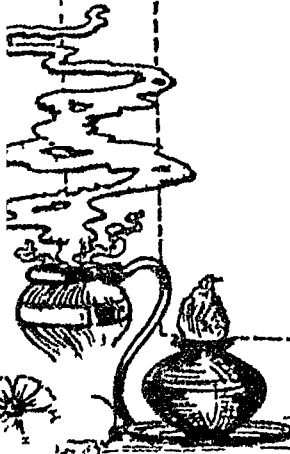
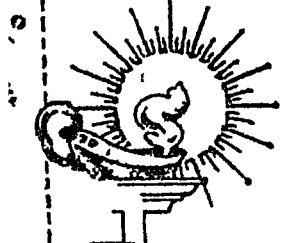
ह्रीं

मंडल विधान

ॐ ह्रीं साम्यस्थानाय नमः स्वाहा । १७३ । ॐ ह्रीं साम्यगुणाय नमः स्वाहा । १७४ । ॐ ह्रीं साम्यकृत-  
कृत्याय नमः स्वाहा । १७५ । ॐ ह्रीं अनन्यशरणाय नमः स्वाहा । १७६ । ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय नमः  
स्वाहा । १७७ । ॐ ह्रीं अनन्यप्रमाणाय नमः स्वाहा । १७८ । ॐ ह्रीं प्रमाणमुक्ताय नमः स्वाहा  
। १७९ । ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय नमः स्वाहा । १८० । ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय नमः स्वाहा । १८१ । ॐ ह्रीं  
ब्रह्मचैतन्याय नमः स्वाहा । १८२ । ॐ ह्रीं शुद्धपरिणामकाय नमः स्वाहा । १८३ । ॐ ह्रीं शुद्धस्वभा-  
वाय नमः स्वाहा । १८४ । ॐ ह्रीं अनन्तदशे नमः स्वाहा । १८५ । ॐ ह्रीं अशुद्धिरहिताय नमः स्वाहा  
। १८६ । ॐ ह्रीं शुद्धशुद्धिरहिताय नमः स्वाहा । १८७ । ॐ ह्रीं अनन्तदृक्स्वरूपाय नमः स्वाहा । १८८ ।  
ॐ ह्रीं अनन्तदृगानन्दाय नमः स्वाहा । १८९ । ॐ ह्रीं अनन्तदृगुत्पादाय नमः स्वाहा । १९० । ॐ ह्रीं  
अनन्तध्रुवाय नमः स्वाहा । १९१ । ॐ ह्रीं अनन्तव्ययभावाय नमः स्वाहा । १९२ । ॐ ह्रीं अनन्तविलयाय  
नमः स्वाहा । १९३ । ॐ ह्रीं अनन्ताकाराय नमः स्वाहा । १९४ । ॐ ह्रीं अनन्तभावाय नमः स्वाहा  
। १९५ । ॐ ह्रीं चिन्मयस्वरूपाय नमः स्वाहा । १९६ । ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय नमः स्वाहा । १९७ । ॐ  
ह्रीं चिद्रूपस्वरूपाय नमः स्वाहा । १९८ । ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धिरसाय नमः स्वाहा । १९९ । ॐ ह्रीं स्वानु-  
भूतिरताय नमः स्वाहा । २०० । ॐ ह्रीं परमामृताय नमः स्वाहा । २०१ । ॐ ह्रीं परमामृततुष्टाय नमः  
स्वाहा । २०२ । ॐ ह्रीं परमप्रीतये नमः स्वाहा । २०३ । ॐ ह्रीं परमवल्लभभावाय नमः स्वाहा । २०४ ।  
ॐ ह्रीं व्यक्तस्वभावाय नमः स्वाहा । २०५ । ॐ ह्रीं एकत्वभावाय नमः स्वाहा । २०६ । ॐ ह्रीं एकत्वस्वरू-  
पाय नमः स्वाहा । २०७ । ॐ ह्रीं द्वित्वविनाशकाय नमः स्वाहा । २०८ । ॐ ह्रीं शाश्वतप्रकाशाय नमः



स्वाहा । २०९ । ॐ ह्रीं शास्वतद्योताय नमः स्वाहा । २१० । ॐ ह्रीं शास्वताष्टचन्द्राय नमः स्वाहा । २११ । ॐ ह्रीं शास्वतामृतमूर्तये नमः स्वाहा । २१२ । ॐ ह्रीं परमसूक्ष्माय नमः स्वाहा । २१३ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाशाय नमः स्वाहा । २१४ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणाय नमः स्वाहा । २१५ । ॐ ह्रीं परमसूक्ष्मावकाशाय नमः स्वाहा । २१६ । ॐ ह्रीं निरवधिसुखाय नमः स्वाहा । २१७ । ॐ ह्रीं निरवधिगुणाय नमः स्वाहा । २१८ । ॐ ह्रीं निरवधिस्वरूपाय नमः स्वाहा । २१९ । ॐ ह्रीं अतुलज्ञानाय नमः स्वाहा । २२० । ॐ ह्रीं अतुलसुखाय नमः स्वाहा । २२१ । ॐ ह्रीं अतुलभावाय नमः स्वाहा । २२२ । ॐ ह्रीं अतुलगुणाय नमः स्वाहा । २२३ । ॐ ह्रीं अतुलप्रकाशाय नमः स्वाहा । २२४ । ॐ ह्रीं अचलाय नमः स्वाहा । २२५ । ॐ ह्रीं अचलगुणाय नमः स्वाहा । २२६ । ॐ ह्रीं अचलस्वभावाय नमः स्वाहा । २२७ । ॐ ह्रीं स्वरूपाय नमः स्वाहा । २२८ । ॐ ह्रीं निरालंवाय नमः स्वाहा । २२९ । ॐ ह्रीं आलम्बरहिताय नमः स्वाहा । २३० । ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः स्वाहा । २३१ । ॐ ह्रीं निष्कलंकाय नमः स्वाहा । २३२ । ॐ ह्रीं नित्यालोकाय नमः स्वाहा । २३३ । ॐ ह्रीं आत्मरतये नमः स्वाहा । २३४ । ॐ ह्रीं स्वरूपगुणाय नमः स्वाहा । २३५ । ॐ ह्रीं शुद्धद्रव्याय नमः स्वाहा । २३६ । ॐ ह्रीं असंसाराय नमः स्वाहा । २३७ । ॐ ह्रीं सानन्दानन्दिताय नमः स्वाहा । २३८ । ॐ ह्रीं स्वानन्दभावाय नमः स्वाहा । २३९ । ॐ ह्रीं स्वानन्दस्वरूपाय नमः स्वाहा । २४० । ॐ ह्रीं स्वानन्दगुणाय नमः स्वाहा । २४१ । ॐ ह्रीं स्वानन्दसतोपाय नमः स्वाहा । २४२ । ॐ ह्रीं शुद्धभावपर्यायाय नमः स्वाहा । २४३ । ॐ ह्रीं स्वातन्त्र्यधर्माय नमः स्वाहा । २४४ । ॐ ह्रीं आत्मस्वभावाय नमः स्वाहा । २४५ । ॐ ह्रीं परमचित्परिणताय नमः स्वाहा । २४६ ।

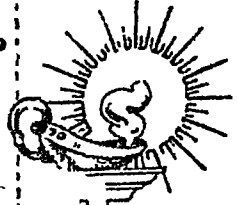


सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडलविधान

पू०  
६



ॐ ह्रीं चिद्रूपगुणाय नमः स्वाहा । २४७ । ॐ ह्रीं परमस्वातकाय नमः स्वाहा । २४८ । ॐ ह्रीं ज्ञानक-  
वर्माय नमः स्वाहा । २४९ । ॐ ह्रीं सर्वावलोकनाय नमः स्वाहा । २५० । ॐ ह्रीं लोकाग्रस्थिताय नमः  
स्वाहा । २५१ । ॐ ह्रीं लोकव्यापकाय नमः स्वाहा । २५२ । ॐ ह्रीं अनादिनिवनाय नमः स्वाहा ।  
२५३ । ॐ ह्रीं अनादिस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५४ । ॐ ह्रीं अनाद्यनुपमसिद्धाय नमः स्वाहा । २५५ ।  
ॐ ह्रीं अनादिगुणपङ्क्तिपूर्याय नमः स्वाहा । २५६ ।

६७



परिमलवहुर्लक्ष्मणैः कुंकुमौघैः,  
विविधसुरभिद्रव्यैश्चारु कर्पूरपुष्टैः ।

अलिकुलमिलितैस्तैर्घ्राणयुक्तैरमाभिः,

तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥ चन्दनम्

शशिकरनिकराभैर्भासितैरक्षतौघैः,

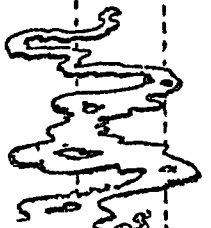
कलितविमलशोभैः शुभ्रडिंडीरपिंडैः ।

हसितहरिसितैस्तैः पुंजितैरक्षतोद्घैः,

तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥ अक्षतान्

कमलवकुलमालामालतीमल्लिकाभिः,

परिमलवहलाभिर्भ्रामरीसंभ्रमाभिः ।



सुरतरुवरपुष्पैस्तैरनकैरमीभिः,  
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ॥

मृदुललितसुसिद्धैः सालिसंभूतपूतैः  
हिमकरधवलैस्तैस्तन्दुलव्यंजनाढ्यैः ।

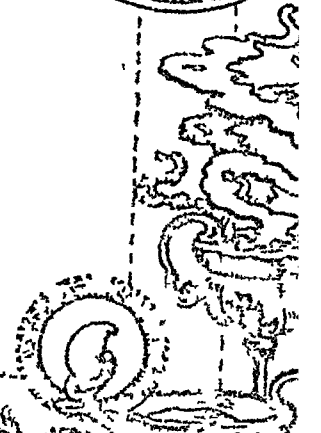
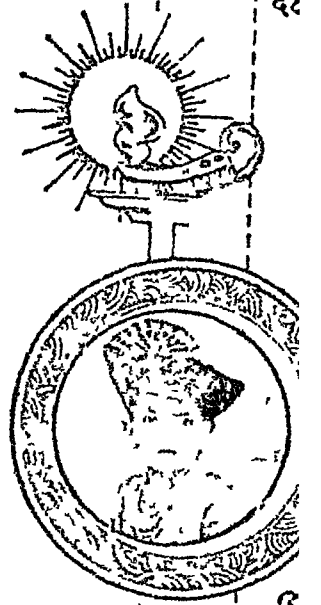
घृतमधुरसुपकैश्चारुपकान्नशोभैः,  
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ।

कनकमणिमुरत्नैर्निर्मितैर्दीप्तदांपैः—  
रुडुगणघृतकांतिवासितांहस्तमौत्रैः ।

विकसितवरवौधैः प्रातिहारातिकेन,  
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥ दीपम् ।

अगुरुतगरशुष्कैः शुद्धकर्पूरपूरैः,  
मिलितसुरभिद्रव्यैश्चन्दनाद्यैरनेकैः ।

दहनद्रहितधूपैर्निर्जरानन्दभूतैः,  
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥ धूपम् ।



सिद्ध चक्र

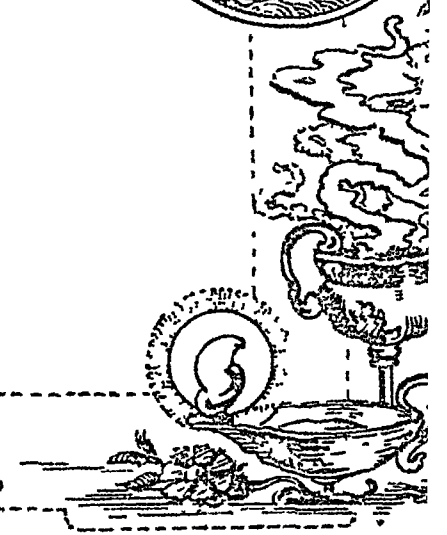
ह्रीं

मंडल विधान

ऋषुकफलकपित्थैः श्रीफलाग्रैश्च मांचैः ।  
पनसवदरचोचैर्दाडिमैः पुंजपुरैः ।  
सरससुरभिगंधैर्भूतयेत्मानितैस्तैः,  
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥ फलम् ।

वरजलफलपुष्पैश्चन्दनैरक्षतौघैः,  
विरचितकृतभक्त्या शुक्लपुष्पांजलीश्च ।  
मनवचनतनूत्याकर्मनिर्मूलनेच्छुः,  
तमहमपि यजे शं निर्मलं सिद्धचक्रम् ॥ ९ ॥ अर्घ्यम् ॥

ॐ ह्रीं असिध्या उसा नमः, इतिमंत्रेणाष्टोत्तरं शतं जाप्य देयम् ।



## अथ जयमाला

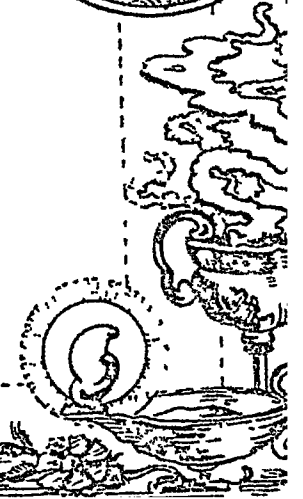
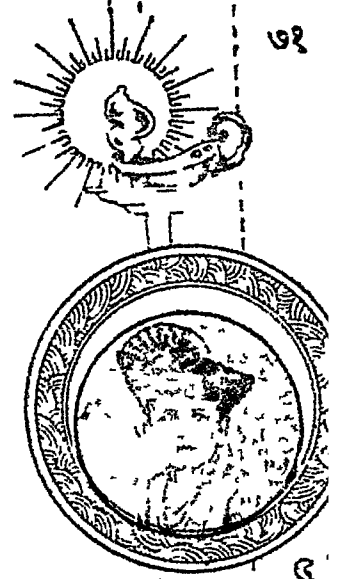
हेतुद्वैतवलादुदीर्णमुदृशः सर्वसहाः सर्वशः—  
 स्त्यक्त्वा संगमजस्रसुश्रुतपराः संयम्य साक्षं मनः ।  
 व्यात्वा स्वं शमिनः स्वयं स्वममलं निर्मूल्य कर्मारिवलम्,  
 ये शर्मप्रगुणैश्चकाशति शुभैस्ते भान्तु सिद्धा मयि ॥ १ ॥ पुष्पांजलिः ।

सिद्धानुद्धृतकर्मप्रकृतिसमुदयान् साधितात्मस्वभावान्,  
 वन्दे सिद्धिप्रसिद्धयै तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टितुष्टः ।  
 सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणो ( पा ) च्छादिदोषापहारान्,  
 योग्योपादानयुक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः ॥ १ ॥

नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत्तपोभिर्न युक्तः,  
 अस्त्यात्मानादिवद्धः स्वकृत्नजफलभुक् तत्क्षयान्मोक्षभागी ।  
 ज्ञाता दृष्टा स्वदेहप्रमितिरूपसमाहारविस्तारधर्मा,  
 ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथा साध्यसिद्धिः ॥ २ ॥



सत्त्वन्तर्वाहं हेतुमभवविमलसद्दर्शनज्ञानचर्या,—  
 सम्पद्धेतिप्रघातक्षतदुरिततया व्यंजिताचिन्त्यसारैः ।  
 कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुरवमहावीर्यसम्यक्त्वलन्धि,—  
 ज्योतिर्वातायनादिस्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ॥ ३ ॥  
 जानन् पश्यन् समस्तं सममनुपरतं सम्प्रतृप्यन् वितन्वन्,  
 धुन्वन् ध्यातं नितान्तं निचितमनुसभं प्रीणयन्नाशभावम् ।  
 कुर्वन् सर्वप्रजानामपरमार्थिभवनं ज्योतिरात्मानमात्मा,  
 आत्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन् सत् (न्) स्वयम्भूः प्रवृत्तः ॥ ४ ॥  
 छिन्दन् शेषानशेषान्निगलवलकलींस्तैरनन्तस्वभावैः,  
 सूक्ष्मत्वाग्राऽवगहागुरुलघुकुणैः क्षायिकैः शोभमानः ।  
 अन्यैश्चान्यव्यपोंहप्रवणविषयसंप्राप्तिलब्धिप्रभावै,—  
 रुध्वं ब्रज्यास्वभावात्समयमुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्रे ॥ ५ ॥  
 अन्याकाराप्तिहेतुर्नच भवति परो येन तेनाल्पहीनः ।  
 प्रागात्पोपात्तदेहप्रतिकृतिरुचिराकार एव ह्यमूर्तः ।  
 क्षुत्तृष्णाश्वासकासज्वरमरणजराऽनिष्टयोगप्रमोह,—  
 व्यापत्त्याद्युग्रदुःखप्रभवभवहतः कोऽस्य सौख्यस्य माता ॥ ६ ॥

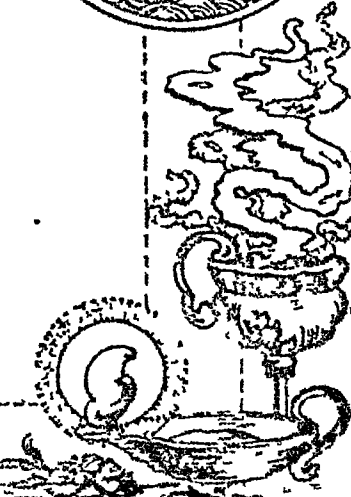
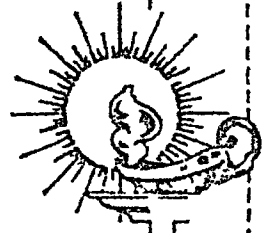


आत्मोपादानसिद्धं स्वयमतिशयवद्दीतवाधं विशालम्,  
 वृद्धिहासव्यपेतं त्रिषयविरहितं निःप्रतिद्वन्द्वभावम् ।  
 अन्यद्रव्यानपेक्षं निरुपमममितं शास्वतं सर्वकालम्,  
 उत्कृष्टानन्तसारं परमसुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम् ॥ ७ ॥

नार्थः क्षुत्तृड्विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या,—  
 नास्पृष्टैर्गंधमाल्यैर्नहिमृदुशयनैर्ग्लानिनिद्राद्यभावात् ।  
 आतंकार्त्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजानर्थतावत्,  
 दीपानार्थक्यवद्वा व्यपगततिमिरे दृश्यमाने समस्ते ॥ ८ ॥

तादृक्सम्पत्समेता विविधनयतपःसंयमज्ञानदृष्टि,—  
 चर्यासिद्धाःसमन्तात्प्रविततयशसो विश्वदेवाधिदेवाः ।  
 भूता भव्या भवन्तः सकलजगति ये स्तूयामाना विशिष्टैः ।  
 तान्सर्वाच्चौम्यनन्तान्निजिगमिपुररं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं निर्द्वैतचिरन्तरसंसारकारणाज्ञानोद्भूतकेवलज्ञानातिशयसम्पन्नासिद्धात्रिपतये  
 नमः स्वाहा, पूरार्थम् ।



## छट्टी जयमालाका हिन्दी पद्यानुवाद

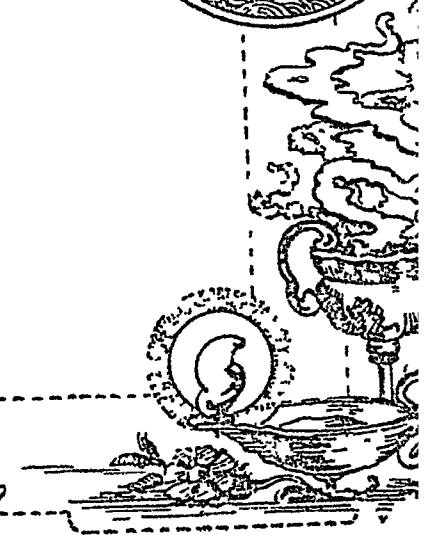
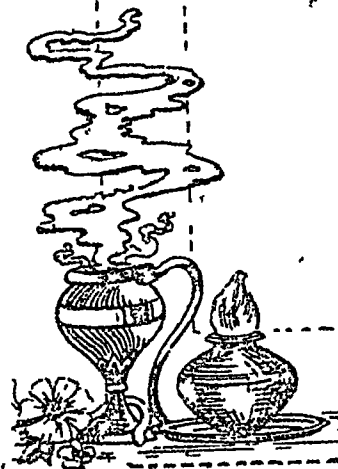
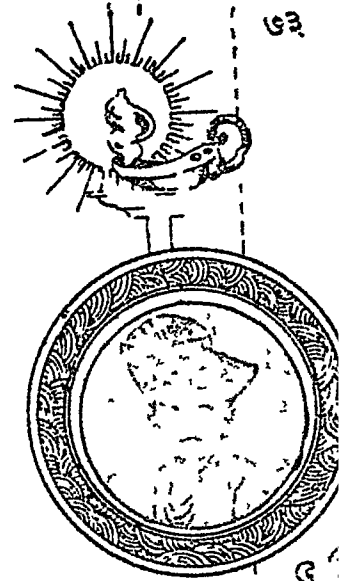
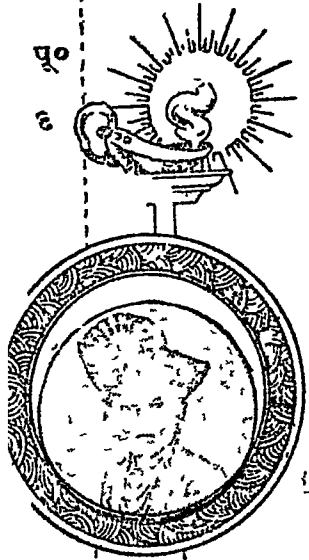
( रचयिता—वा. जुगलकिशोरजी मुखतार )

( १ )

जिन वीराने कर्म पृकृतियों, का सब मूलोच्छेद किया,  
पूर्ण तपश्चर्याके बलपर, स्वात्मभावको साध लिया ।  
उन सिद्धोंको सिद्धि अर्थ में, वन्दूं अतिसन्तुष्ट हुआ,  
उनके अनुपम गुणाकर्षसे, भक्तिभावको प्राप्त हुआ ॥

( २ )

स्वात्मभावकी लब्धि सिद्धि है, होती वह उन दांपोंके,  
उच्छेदन से आच्छादक जो, ज्ञानादिक गुणवृन्दों के ।  
योग्य साधनोंकी सुयुक्तिसे, अग्निप्रयोगादिक द्वारा,  
हेम शिलासे जगमं जैसे, हेम किया जाता न्यारा ॥



(३)

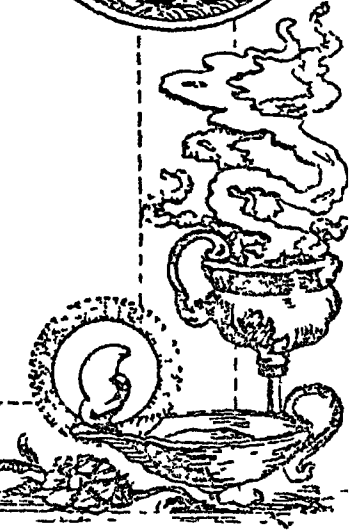
नहिं अभावमय सिद्धि इष्ट है, नहिं निजगुणविनाशवाली,  
सत् का कभी नाश नहिं होता, रहता गुणी न गुण खाली ।  
जिनकी ऐसी सिद्धि न उनका, तप विधान कुछ बनता है,  
आत्मनाश निजगुणविनाशका, कौन यत्र बुध करता है ॥

(४)

अस्तु; अनादिवद्ध आत्मा है, स्वकृत-कर्म-फलका भोगी,  
कर्मबन्ध-फलभोग-नाशसे, होता मुक्ति-रमा-योगी ।  
ज्ञाता, द्रष्टा, निजतनु-परिमित, संकोचेतर-धर्मा है,  
स्वगुण-युक्त रहता है, हरदम श्रौव्योत्पत्ति-व्ययात्मा है ॥

(५)

इस सिद्धान्त-मान्यताके विन साध्य-सिद्धि नहिं घटती है—  
स्वात्मरूप की लब्धि न होती, नहिं व्रत-चर्या बनती है ।  
बन्ध-मोक्ष-फलकी कथनी सब कथनमात्र रह जाती है,  
अन्त न आता भव-भ्रमण का, सत्य-शान्ति नहिं मिलती है ॥



५०  
६



( ६ )

जब वह आत्मा मोहादिक के उपशमादिको पाकर के,  
बाहरमें गुरु-उपदेशादिक श्रेष्ठ निमित्त मिलाकरके ।  
विमल-सुदर्शन-ज्ञान-चरणमय अपनी ज्यांति जगाता है,  
उस सुशक्ति के प्रबल-घात से घाति-चतुष्क नशाता है ॥

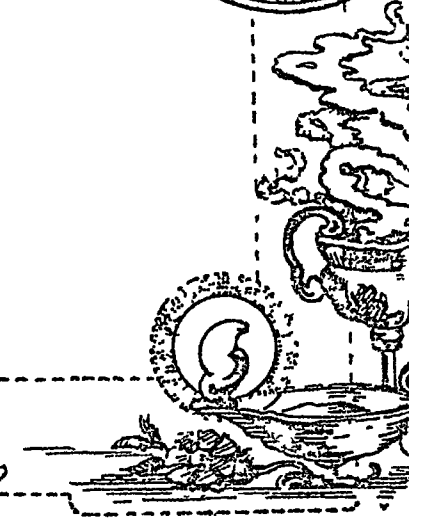
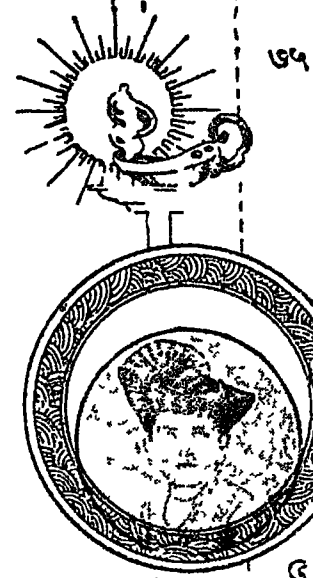
( ७ )

तब वह भासमान हांता स्थिर—अद्भुत-परम-सुगुण-गणसे—  
प्रकटित हुआ अचिन्त्य सार है जिनका दुरित-विनाशनसे ।—  
केवलज्ञान-सुदर्शनसे, अति—वीर्य-प्रवर सुख-सम्पत्त से,  
शेषलब्धिसे, भामण्डल से, चामरादि की सम्पत्त से ॥

( ८ )

सबको सदा जानता-लखता युगपत्, व्याप्त-सुतप्त हुआ,  
घन-अज्ञान-मोह-तम धुनता—सबका सब, निःश्रवेद हुआ ।  
करता तृप्त सुवचनामृतसे—सभाजनों को औ करता—  
ईश्वरता सब प्रजाजनोंकी, अन्य-ज्योति फीकी करता ॥

५५



( ९ )

आत्माको, आत्म-स्वरूपसे, आत्मामें प्रतिक्षण ध्याता—  
हुआ सातिशय वह आत्मा यों, सत्य-स्वयम्भू-पद पाता ।  
वीतराग-अर्हत्-परमेष्ठी—आप्त-सार्व-जिन कहलाता,  
परंज्योति-सर्वज्ञ-कृती-प्रभु—जीवन्मुक्त नाम पाता ॥

( १० )

शेष निगड-सम अन्य प्रकृतियाँ फिर छेदता हुआ सारी,  
आयु-वेदनी-नाम-गोत्र हैं मूल प्रकृतियाँ जो भारी ।  
उन अनन्तदृग्-बोध-वीर्य-सुख-सहित शेष क्षायिक गुणसं—  
अव्याबाध-अगुरुलघुसे औ सूक्ष्मपना-अवगाहनसे—॥

( ११ )

शोभमान होता, तैसे ही अन्य गुणोंके समुदयसे—  
प्रभवित हुए उत्तरोत्तर जो—कर्मप्रकृतिके संक्षयसे ।  
क्षणमें ऊर्ध्वगमन-स्वभावसे, शुद्ध-कर्ममलहीन हुआ,  
जा बसता है अग्रधाममें, निरुपद्रव-स्वाधीन हुआ ॥

( १२ )

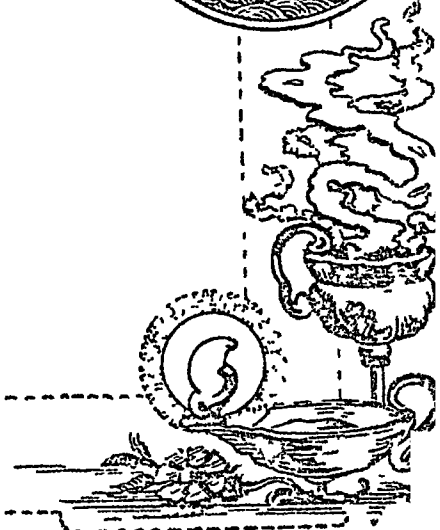
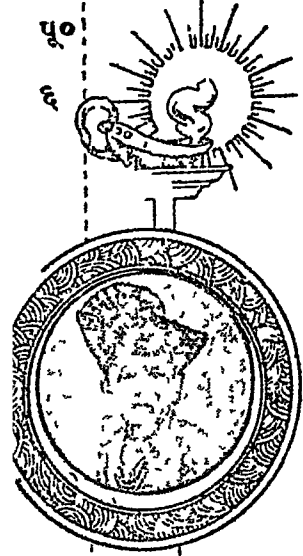
मूलोच्छेद हुआ कर्मोंका, बन्ध-उदय-सत्ता न रही,  
अन्याकार-ग्रहण का कारण रहा न तव, इससे कुछ ही—  
न्यून, चरम-तनु-प्रतिमाके सम रुचिराकृति ही रह जाता  
और अमूर्तिक वह सिद्धात्मा, निर्विकार-पद को पाता ॥

( १३ )

क्षुधा-तृषा-श्वासादिकामज्वर, जरा मरण के दुःखों का,  
इष्ट वियोग-प्रमोह आपदा,—दिकके भारी कष्टोंका,  
जन्महेतु जो, उस भवके क्षय, से उत्पन्न सिद्ध सुखका,  
कर सकता परिमाण कौन है ? लेश नहीं जिसमें दुःखका ।

( १४ )

सिद्ध हुआ निज उपादानसे, खुद अतिशयको प्राप्त हुआ,  
वाधारहित, विशाल, इन्द्रियों—के विषयोंसे रिक्त हुआ ।  
बढ़ता और न घटता जो है, प्रतिपक्षीसे रहित सदा,  
उपमारहित अन्य द्रव्योंकी, नहीं अपेक्षा जिसे कदा ॥



( १५ )

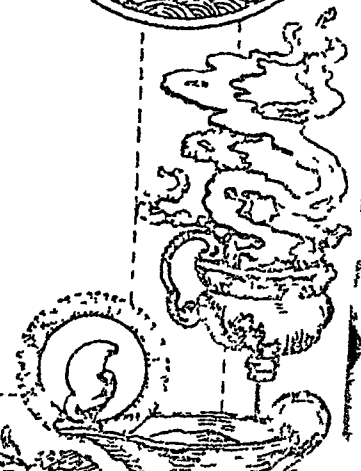
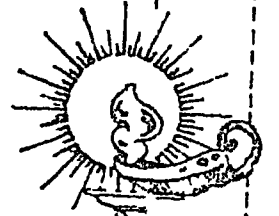
सुख उत्कृष्ट अमित शाश्वत वह, सर्वकाल में व्याप्त हुआ ।  
निरवधि सार परममुख इससे, उस सुसिद्धको प्राप्त हुआ ।  
जो परमेश्वरपरमात्मा औ, देहविमुक्त कहा जाता,  
स्वात्मस्थित कृतकृत्य हुआ, निज, पूर्ण स्वार्थको अपनाता ॥

( १६ )

कर्म नाशसे उस सुसिद्धके, क्षुधा तृषाका लेश नहीं,  
नाना रसयुत अन्नपानका, अतः प्रयोजन शेष नहीं ।  
नहीं प्रयोजन गन्धमाल्यका, अशुचि योग जब नहीं कहीं,  
नहीं काम मृदु शय्याका जब, निद्रादिकका नाम नहीं ॥

( १७ )

रोग विना तत्शमनी उत्तम, औषधि जैसे व्यर्थ कही,  
तम विन दृश्यमान होते सब, दीपशिखा ज्यों व्यर्थ कही ।  
त्यों सांसारिक विषय सौख्यका, सिद्ध हुए कुछ काम नहीं,  
बाधित, विपम, पराश्रित, भंगुर, बंध हेतु जो अदुःख नहीं ॥





५०



( १८ )

यों अनन्त ज्ञानादि गुणोंकी, सम्पत्से जो युक्त सदा,  
विविध सुनय तप संयमसे ही, सिद्ध, न भजते विकृति कदा ।  
सम्यग्दर्शनज्ञानचरणसे, तथा सिद्धपदको पाते,  
पूर्ण यशस्वी हुए, विश्व—देवाधिदेव जो कहलाते ॥

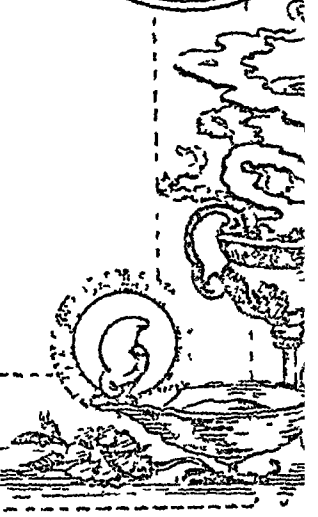
( १९ )

आवागमन विमुक्त हुए, जिनको करना कुछ शेष नहीं ।  
आत्मलीन, सब दोष हीन, जिनके विभावका लेश नहीं ।  
राग द्वेष भयमुक्त निरंजन, अजर अमरपदके स्वामी,  
मंगलभूत पूर्ण विकसित, सत् चिदानन्द जो निष्कामी ॥

( २० )

ऐसे हुए अनन्त सिद्ध औ, वर्तमान हैं संप्रति जो ।  
आगे होंगे सकल जगतमें, विबुध जनोंसे संस्तुत जो ।  
उन सबको नतमस्तक हो मैं, वन्दूं तीनों काल सदा,  
तत्स्वरूपकी शीघ्र प्राप्ति, इच्छुक होकर, सहित मुदा ॥

५२

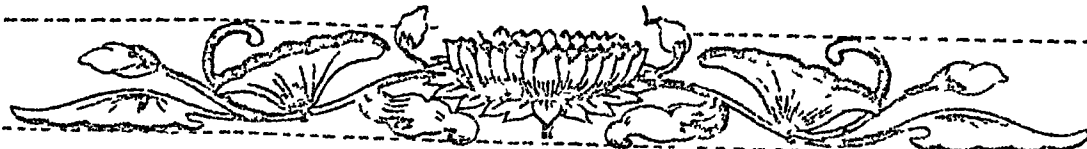
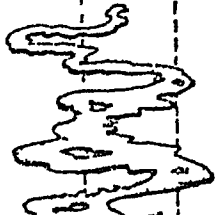
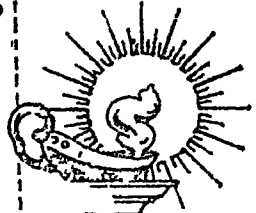


( २१ )

कारण, उनका जो स्वरूप है, वही रूप सब अपना है ।  
उसही तरह सु विकसित होता, इसमें लेश न कहना है ।  
उनके चिन्तन वन्दन से निज, रूप सामने आता है,  
भूली निज निधिका दर्शन यों, प्राप्ति प्रेम उपजाता है ॥

( २२ )

इससे सिद्ध भक्ति है सच्ची, जननी सब कल्याणों की,  
श्रेयो मार्ग सुलभ करती, वन हेतु कुशल परिणामों की,  
कही "सिद्धि सोपान" इसीसे, प्रौढ़ सुधीजन अपनाते,  
पूज्यपादकी सिद्धभक्ति लख, युग मुमुक्षु अति हर्षाते ॥



अथ सप्तमपंक्तिस्थितद्वादशोत्तरपंचशतकमलोपरिपूजा ।

ऊर्ध्वाधारयुतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम् ।  
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्तमेधितत्त्वान्वितम् ॥  
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुतं हींकारसंवेष्टितम् ।  
देवं ध्यायति यः स मुक्तिमुभगो वैरीभक्तडीरवः ॥

—पुष्प दत्त्वा स्थापना कुर्यात्

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।  
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥  
सकलामरेन्द्रसेव्यं, ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।  
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेधौघम् ॥ २ ॥

ॐ हीं रामो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्  
” ” ” ” अत्र तिष्ठ २ ठः ठः  
” ” ” ” अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्



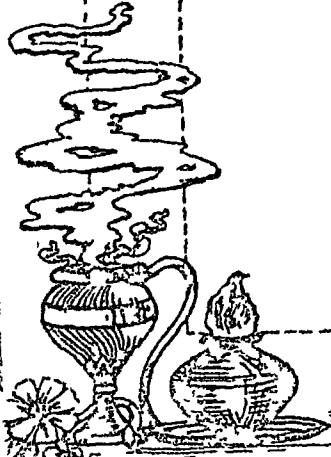
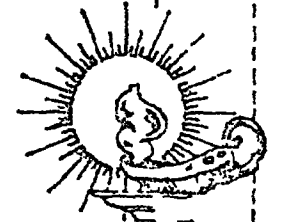
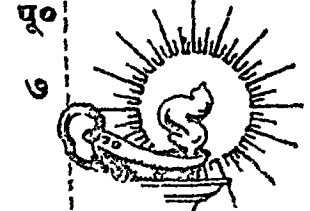
अथाष्टकम्—

जयति जगति यस्य प्राभवं सम्यगात्मो,—  
दयविजितविपक्षं विश्वकल्याणवीजम् ।  
सुरसरिदमलांभोधारयाराधनीयम्,  
गणधरवलयं तं सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ १ ॥ जलम् ।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं हः आसिआउसा नमः स्वाहा. इति समुच्चयमंत्रः ।

अथ पृथक् २ मंत्राणि—

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं अर्हद्रूपाय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं अर्हद्गुणाय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं अर्हदर्शनाय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं अर्हद्ज्ञानाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं अर्हसुखाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्याय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं अर्हदर्शनगुणाय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं अर्हद्ज्ञानगुणाय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं अर्हसुखगुणाय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यगुणाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं अर्हत्सम्भक्तगुणाय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं अर्हत्स्वगुणाय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं अर्हद्द्रशागाय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं अर्हदाभिनिबोधाय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं अर्हच्छ्रुतबोधगुणाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं अर्हदविगुणाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं अर्हन्मनःपर्ययगुणाय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलगुणाय नमः



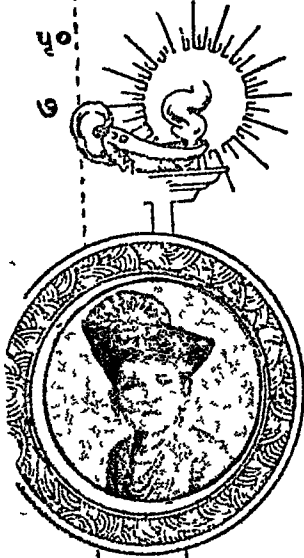
सिद्ध चक्र

हीं

संडल विधान

५०

७

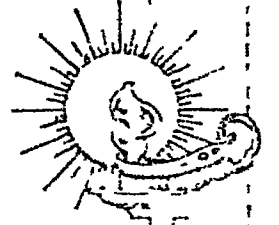


स्वाहा । २० । ॐ ही अर्हत्केवलस्वरूपाय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ही अर्हत्केवलदर्शनाय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ही अर्हत्केवलज्ञानाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ही अर्हत्केवलवीर्याय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ही अर्हन्मंगलाय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ही अर्हन्मंगलदर्शनाय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ही अर्हन्मंगलज्ञानाय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ही अर्हन्मंगलवीर्याय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ही अर्हन्मंगलद्वादशागाय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ही अर्हन्मंगलाभिनिबोधकाय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ही अर्हन्मंगलश्रुताय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ही अर्हन्मंगलावधिज्ञानाय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ही अर्हन्मंगलमनःपर्ययज्ञानाय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ही अर्हन्मंगलकेवलज्ञानाय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ही अर्हन्मंगलकेवलस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ही अर्हन्मंगलकेवलदर्शनाय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ही अर्हन्मंगलकेवलगुणाय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ही अर्हन्मंगलकेवलधर्माय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ही अर्हन्मंगलकेवलधर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमाय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमचिद्रूपाय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमगुणाय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमकेवलदर्शनाय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ही अर्हत्केवललोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ही अर्हत्केवललोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमद्वादशागाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोधकाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमावधिबोधाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययज्ञानाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमकेवलस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमकेवलपर्यायाय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ही अर्हल्लोकोत्तमकेवलद्रव्याय

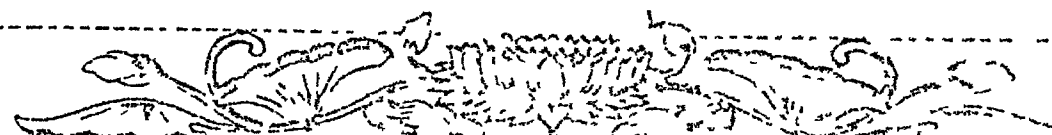
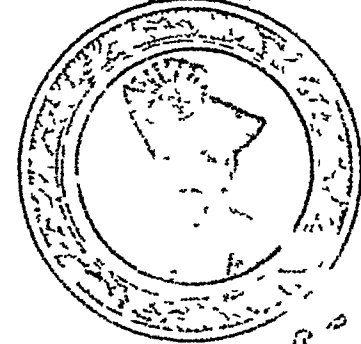


पू०

७



नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलभावाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमश्रोत्रभावाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमोपादभावाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमस्थिरभावाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं अर्हल्लुङ्गरणाय नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं अर्हद्रूपशरणाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं अर्हद्रुणशरणाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं अर्हद्विज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं अर्हदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यशरणाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं अर्हदभिनिवोधशरणाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं अर्हद्वादशागणाय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अर्हदवशिष्टशरणाय नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं अर्हन्मनःपर्ययशरणाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणाय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणानुपाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलधर्मशरणाय नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं अर्हत्केवलमगलशरणाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलगुणशरणाय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलज्ञानगुणशरणाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलदृष्टिशरणाय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलवोधशरणाय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलमनःपर्ययशरणाय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलकेवलशरणाय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं अर्हन्मगलकेवलगुणशरणाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमशरणाय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणशरणाय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यशरणाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यगुणशरणाय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमद्वादशागणशरणाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाभिनिवोधशरणाय नमः

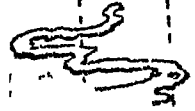
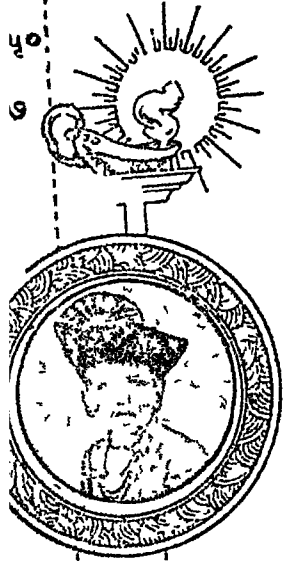


सिद्ध चक्र

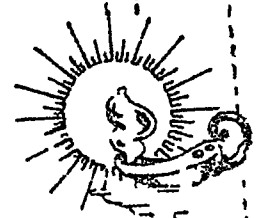
हीं

मंडल विधान

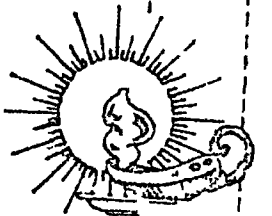
५०



स्वाहा । ८६ । ॐ हीं अर्हलोकोत्तमावधिशरणाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ हीं अर्हलोकोत्तममनःपर्ययशर-  
णाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ हीं अर्हलोकोत्तमकेवलज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ हीं अर्हद्विभूति-  
प्रधानाय नमः स्वाहा । ९० । ॐ हीं अर्हद्विभूतिवर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ हीं अर्हदनन्तचतुष्टयाय  
नमः स्वाहा । ९२ । ॐ हीं अर्हदनन्तचतुष्टयस्वरूपगुणाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ हीं अर्हत्त्रिज्ञानस्वयंभुवे  
नमः स्वाहा । ९४ । ॐ हीं अर्हदशातिशयस्वयंभुवे नमः स्वाहा । ९५ । ॐ हीं अर्हदशातिशयघातिक्षयाय  
नमः स्वाहा । ९६ । ॐ हीं अर्हचतुर्दशदेवकृतातिशयाय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ हीं अर्हदज्ञानानंतध्यानाय  
नमः स्वाहा । ९८ । ॐ हीं अर्हत्तपोऽनंतगुणाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ हीं अर्हदध्यानानंतध्यायाय नमः  
स्वाहा । १०० । ॐ हीं अर्हदनन्तज्ञानगुणात्मने नमः स्वाहा । १०१ । ॐ हीं अर्हत्परमात्मने नमः स्वाहा ।  
१०२ । ॐ हीं अर्हदनन्तगुणात्मने नमः स्वाहा । १०३ । ॐ हीं अर्हत्स्वरूपगुणस्ये नमः स्वाहा । १०४ ।  
ॐ हीं सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १०५ । ॐ हीं सिद्धस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा । १०६ ।  
ॐ हीं सिद्धगुणेभ्यो नमः स्वाहा । १०७ । ॐ हीं सिद्धज्ञानेभ्यो नमः स्वाहा । १०८ ।  
ॐ हीं सिद्धदर्शनेभ्यो नमः स्वाहा । १०९ । ॐ हीं सिद्धसम्यक्त्वेभ्यो नमः स्वाहा । ११० ।  
ॐ हीं सिद्धवीर्येभ्यो नमः स्वाहा । १११ । ॐ हीं सिद्धपादुकेभ्यो नमः स्वाहा । ११२ ।  
ॐ हीं असंख्यातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११३ । ॐ हीं असंख्यातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११४ ।  
ॐ हीं अनंतसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११५ । ॐ हीं असंख्यातलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११६ ।  
ॐ हीं अनन्तानंतसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११७ । ॐ हीं अनन्तलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११८ ।



ॐ ही अनन्तानन्तलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ही निर्यग्लोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२० ।  
 ॐ ही सर्वमुखसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ही स्थलसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२२ । ॐ ही गगन-  
 सिद्धंभ्यो नमः स्वाहा । १२३ । ॐ ही समुद्रातसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२४ । ॐ ही असमुद्रातसिद्धेभ्यो  
 नमः स्वाहा । १२५ । ॐ ही साधारणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२६ । ॐ ही असाधारणसिद्धेभ्यो नमः  
 स्वाहा । १२७ । ॐ ही निराभरणसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १२८ । ॐ ही तीर्थकरसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा  
 । १२९ । ॐ ही तीर्थेतरसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३० । ॐ ही उत्कृष्टावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३१ ।  
 ॐ ही मध्यमावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३२ । ॐ ही ज्वन्यावगाहसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३३ । ॐ ही  
 उपसर्गसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३४ । ॐ ही पञ्चविधकालसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३५ । ॐ ही निरुप-  
 सर्गसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३६ । ॐ ही द्वीपसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३७ । ॐ ही उदप्रिसिद्धेभ्यो नमः  
 स्वाहा । १३८ । ॐ ही स्वभित्त्यासनसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १३९ । ॐ ही पर्यकासनसिद्धेभ्यो नमः  
 स्वाहा । १४० । ॐ ही पुत्रेदसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४१ । ॐ ही क्षपकश्रेण्यारूढसिद्धेभ्यो नमः  
 स्वाहा । १४२ । ॐ ही एकसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४३ । ॐ ही द्विसमयसिद्धेभ्यो नमः  
 स्वाहा । १४४ । ॐ ही त्रिसमयसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४५ । ॐ ही त्रिकालसिद्धेभ्यो नमः  
 स्वाहा । १४६ । ॐ ही त्रिलोकसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । १४७ । ॐ ही सिद्धमंगलेभ्यो नमः  
 स्वाहा । १४८ । ॐ ही सिद्धमंगलरूपेभ्यो नमः स्वाहा । १४९ । ॐ ही सिद्धमंगलज्ञानेभ्यो नमः  
 स्वाहा । १५० । ॐ ही सिद्धमंगलदर्शनेभ्यो नमः स्वाहा । १५१ । ॐ ही सिद्धमंगलवीर्येभ्यो





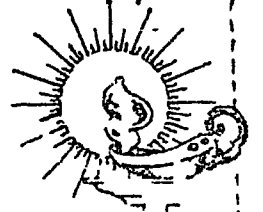
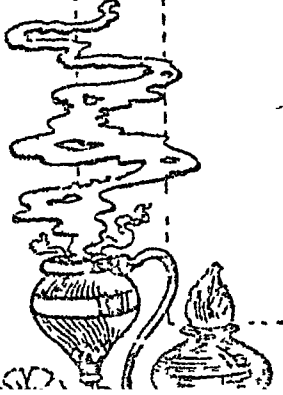
# सिद्ध चक्र हीं मंडलविधान

नमः स्वाहा । १५२ । ॐ हीं सिद्धमंगलसम्यक्त्वेभ्यो नमः स्वाहा । १५३ । ॐ हीं सिद्धमंगलमूर्क्षमत्वेभ्यो  
 नमः स्वाहा । १५४ । ॐ हीं सिद्धमंगलावगाहनेभ्यो नमः स्वाहा । १५५ । ॐ हीं सिद्धमंगलागुरुलघुभ्यो  
 नमः स्वाहा । १५६ । ॐ हीं सिद्धमंगलाव्यावाधेभ्यो नमः स्वाहा । १५७ । ॐ हीं सिद्धाष्टगुरोभ्यो नमः  
 स्वाहा । १५८ । ॐ हीं सिद्धाष्टस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा । १५९ । ॐ हीं सिद्धाष्टप्रकाशकेभ्यो नमः स्वाहा ।  
 १६० । ॐ हीं मंगलसिद्धधर्मेभ्यो नमः स्वाहा । १६१ । ॐ हीं सिद्धलोकोत्तमेभ्यो नमः स्वाहा । १६२ ।  
 ॐ हीं सिद्धलोकोत्तमचिद्रूपाय नमः स्वाहा । १६३ । ॐ हीं सिद्धलोकोत्तमगुणाय नमः स्वाहा ।  
 १६४ । ॐ हीं सिद्धलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा । १६५ । ॐ हीं सिद्धलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा ।  
 १६६ । ॐ हीं सिद्धलोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा । १६७ । ॐ हीं सिद्धशरणाय नमः स्वाहा । १६८ ।  
 ॐ हीं सिद्धस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । १६९ । ॐ हीं सिद्धदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । १७० । ॐ हीं  
 सिद्धज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । १७१ । ॐ हीं सिद्धसम्यक्त्वशरणाय नमः स्वाहा । १७२ । ॐ हीं सिद्ध-  
 वीर्यशरणाय नमः स्वाहा । १७३ । ॐ हीं सिद्धानन्तशरणाय नमः स्वाहा । १७४ । ॐ हीं सिद्धानन्ता-  
 नन्तगुणशरणाय नमः स्वाहा । १७५ । ॐ हीं सिद्धत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । १७६ । ॐ हीं सिद्ध-  
 त्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । १७७ । ॐ हीं सिद्धसंख्यातलोकशरणाय नमः स्वाहा । १७८ । ॐ हीं  
 सिद्धध्रौव्यगुणशरणाय नमः स्वाहा । १७९ । ॐ हीं सिद्धोत्पादगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८० । ॐ हीं  
 सिद्धसाम्यगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८१ । ॐ हीं सिद्धस्वच्छगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८२ । ॐ हीं  
 सिद्धसमाविगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८३ । ॐ हीं सिद्धव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८४ । ॐ हीं

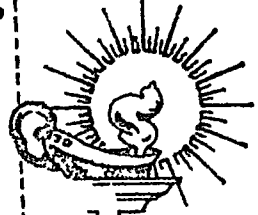
५०

७

८७



७०  
७



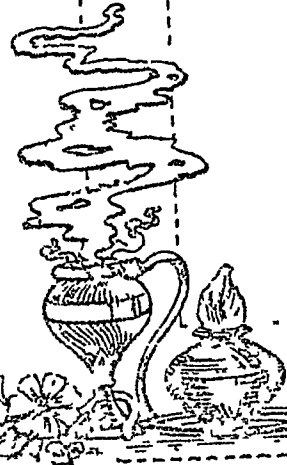
सिद्धव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८५ । ॐ ह्रीं सिद्धव्यक्ताव्यक्तगुणशरणाय नमः स्वाहा । १८६ । ॐ ह्रीं सिद्धगुणगणशरणाय नमः स्वाहा । १८७ । ॐ ह्रीं सिद्धपरमात्मरूपाय नमः स्वाहा । १८८ । ॐ ह्रीं सिद्धाखण्डरूपाय नमः स्वाहा । १८९ । ॐ ह्रीं सिद्धचिदानन्दरूपाय नमः स्वाहा । १९० । ॐ ह्रीं सिद्धसहजानन्दाय नमः स्वाहा । १९१ । ॐ ह्रीं सिद्धाच्छेवस्वरूपाय नमः स्वाहा । १९२ । ॐ ह्रीं सिद्धाभेवगुणाय नमः स्वाहा । १९३ । ॐ ह्रीं सिद्धानौपम्यधर्माय नमः स्वाहा । १९४ । ॐ ह्रीं सिद्धामृततत्त्वाय नमः स्वाहा । १९५ । ॐ ह्रीं सिद्धश्रुनप्राप्ताय नमः स्वाहा । १९६ । ॐ ह्रीं सिद्धकेवलप्राप्ताय नमः स्वाहा । १९७ । ॐ ह्रीं सिद्धसाकारनिराकाराय नमः स्वाहा । १९८ । ॐ ह्रीं सिद्धनिरालवाय नमः स्वाहा । १९९ । ॐ ह्रीं सिद्धनिष्कलंकाय नमः स्वाहा । २०० । ॐ ह्रीं सिद्धात्मसपन्नाय नमः स्वाहा । २०१ । ॐ ह्रीं सिद्धतेजसे नमः स्वाहा । २०२ । ॐ ह्रीं सिद्धागर्भवासाय नमः स्वाहा । २०३ । ॐ ह्रीं सिद्धलक्ष्मीसंतर्पकाय नमः स्वाहा । २०४ । ॐ ह्रीं सिद्धान्तरंगाय नमः स्वाहा । २०५ । ॐ ह्रीं सिद्धस्वारसिकाय नमः स्वाहा । २०६ । ॐ ह्रीं सिद्धशिखरमडनाय नमः स्वाहा । २०७ । ॐ ह्रीं त्रिकालसिद्धानन्तानन्ताय नमः स्वाहा । २०८ । ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः स्वाहा । २०९ । ॐ ह्रीं मूरिगुरोभ्यो नमः स्वाहा । २१० । ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपगुरोभ्यो नमः स्वाहा । २११ । ॐ ह्रीं सूरिसम्यक्त्वगुरोभ्यो नमः स्वाहा । २१२ । ॐ ह्रीं सूरिज्ञानगुरोभ्यो नमः स्वाहा । २१३ । ॐ ह्रीं सूरिदर्शनगुरोभ्यो नमः स्वाहा । २१४ । ॐ ह्रीं सूरिर्वार्यगुरोभ्यो नमः स्वाहा । २१५ । ॐ ह्रीं सूरिपट्टत्रिगद्गुरोभ्यो नमः स्वाहा । २१६ । ॐ ह्रीं सूरिपचाचाररतेभ्यो नमः स्वाहा । २१७ । ॐ ह्रीं मूरिद्रव्यगुरोभ्यो नमः स्वाहा । २१८ ।



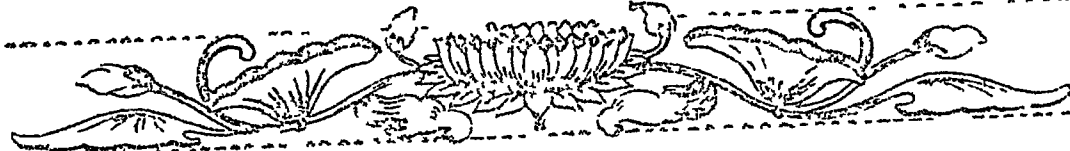
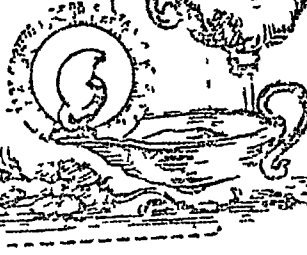
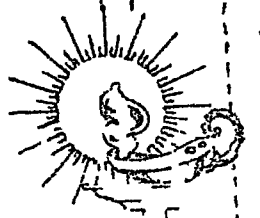
# सिद्ध चक्र हीं मंडलविधान

पृ०

७



ॐ हीं सूरिपर्यायगुणेश्वर्यो नमः स्वाहा । २१९ । ॐ हीं सूरिमगलेभ्यो नमः स्वाहा । २२० । ॐ हीं मूरिज्ञान  
मगलेभ्यो नमः स्वाहा । २२१ । ॐ हीं सूरिदर्शनमगलेभ्यो नमः स्वाहा । २२२ । ॐ हीं मूरिमंगलवीर्येभ्यो  
नमः स्वाहा । २२३ । ॐ हीं सूरिमगलवर्माय नमः स्वाहा । २२४ । ॐ हीं सूरिलोकोत्तमेभ्यो नमः स्वाहा  
। २२५ । ॐ हीं सूरिलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा । २२६ । ॐ हीं मूरिलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा  
। २२७ । ॐ हीं सूरिलोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा । २२८ । ॐ हीं सूरिकेवलधर्माय नमः स्वाहा । २२९ ।  
ॐ हीं सूरितपेभ्यो नमः स्वाहा । २३० । ॐ हीं सूरिपरमतपेभ्यो नमः स्वाहा । २३१ । ॐ हीं सूरितप-  
वोरगुणेश्वर्यो नमः स्वाहा । २३२ । ॐ हीं सूरिवोरगुणपराक्रमेभ्यो नमः स्वाहा । २३३ । ॐ हीं सूरि-  
समृद्धिभ्यो नमः स्वाहा । २३४ । ॐ हीं सूरियोगिभ्यो नमः स्वाहा । २३५ । ॐ हीं मूरिव्यानेभ्यो नमः  
स्वाहा । २३६ । ॐ हीं सूरिधातृभ्यो नमः स्वाहा । २३७ । ॐ हीं मूरिपात्रेभ्यो नमः स्वाहा । २३८ । ॐ  
हीं सूरिशरणाय नमः स्वाहा । २३९ । ॐ हीं सूरिगुणशरणाय नमः स्वाहा । २४० । ॐ हीं सूरिधर्म-  
स्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । २४१ । ॐ हीं सूरिसुखस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । २४२ । ॐ हीं मूरि-  
ज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । २४३ । ॐ हीं सूरिदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । २४४ । ॐ हीं मूरिवीर्यशर-  
णाय नमः स्वाहा । २४५ । ॐ हीं सूरिमगलशरणाय नमः स्वाहा । २४६ । ॐ हीं मूरितपशरणाय नमः  
स्वाहा । २४७ । ॐ हीं सूरिचारित्रशरणाय नमः स्वाहा । २४८ । ॐ हीं मूरिव्यानशरणाय नमः स्वाहा  
। २४९ । ॐ हीं सूरिकृद्भिःशरणाय नमः स्वाहा । २५० । ॐ हीं सूरित्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । २५१ ।  
ॐ हीं सूरित्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । २५२ । ॐ हीं मूरित्रिजगन्मगलशरणाय नमः स्वाहा । २५३ ।



सिद्ध चक्र

ह्रीं

संडल विधान

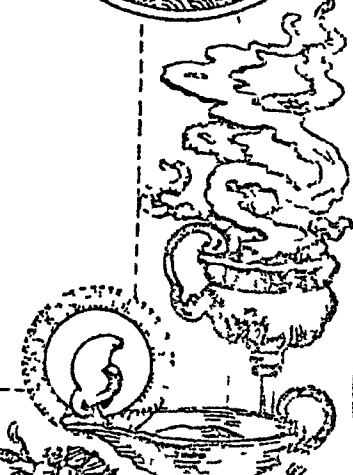
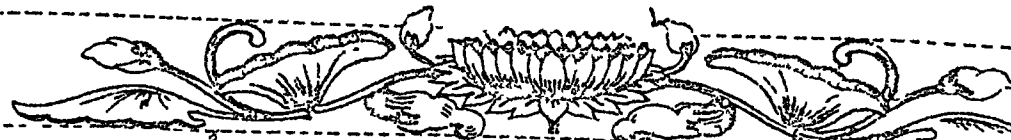
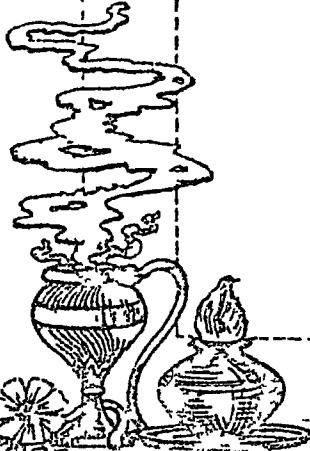
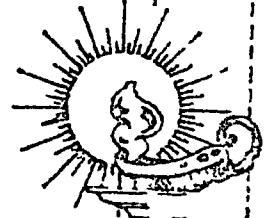
पु०

७



ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमंगलशरणाय नमः स्वाहा । २५४ । ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमंडनशरणाय नमः स्वाहा । २५५ । ॐ ह्रीं सूरिऋद्धिमंगलशरणाय नमः स्वाहा । २५६ । ॐ ह्रीं सूरिमंत्रस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५७ । ॐ ह्रीं सूरिधर्ममंत्रस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५८ । ॐ ह्रीं सूरिचैतन्यगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । २५९ । ॐ ह्रीं सूरिचिदानन्दाय नमः स्वाहा । २६० । ॐ ह्रीं सूरिसहजानन्दाय नमः स्वाहा । २६१ । ॐ ह्रीं सूरिज्ञानानन्दाय नमः स्वाहा । २६२ । ॐ ह्रीं सूरिदृगानन्दाय नमः स्वाहा । २६३ । ॐ ह्रीं सूरितपत्रानन्दाय नमः स्वाहा । २६४ । ॐ ह्रीं सूरिदृक्स्वरूपानन्दाय नमः स्वाहा । २६५ । ॐ ह्रीं सूरितपगुणानन्दाय नमः स्वाहा । २६६ । ॐ ह्रीं सूरितपगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । २६७ । ॐ ह्रीं सूरिहंसानन्दाय नमः स्वाहा । २६८ । ॐ ह्रीं सूरिहंसगुणानन्दाय नमः स्वाहा । २६९ । ॐ ह्रीं सूरिमंत्रगुणानन्दाय नमः स्वाहा । २७० । ॐ ह्रीं सूरिसद्ग्यानानन्दाय नमः स्वाहा । २७१ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतचन्द्राय नमः स्वाहा । २७२ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतचन्द्रस्वरूपाय नमः स्वाहा । २७३ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतगुणाय नमः स्वाहा । २७४ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतघनदाय नमः स्वाहा । २७५ । ॐ ह्रीं सूरिअमृतघनस्वरूपाय नमः स्वाहा । २७६ । ॐ ह्रीं सूरिद्रव्याय नमः स्वाहा । २७७ । ॐ ह्रीं सूरिगुणद्रव्याय नमः स्वाहा । २७८ । ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । २७९ । ॐ ह्रीं सूरिगुणपर्यायाय नमः स्वाहा । २८० । ॐ ह्रीं सूरिपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा । २८१ । ॐ ह्रीं सूरिगुणपर्यायद्रव्याय नमः स्वाहा । २८२ । ॐ ह्रीं सूरिगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । २८३ । ॐ ह्रीं सूरिद्रौव्यगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । २८४ । ॐ ह्रीं सूरिव्ययगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । २८५ । ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वाय नमः स्वाहा । २८६ । ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वगुणाय नमः स्वाहा । २८७ ।

१०



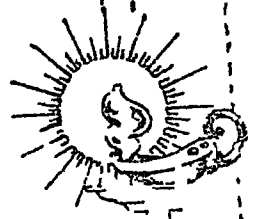
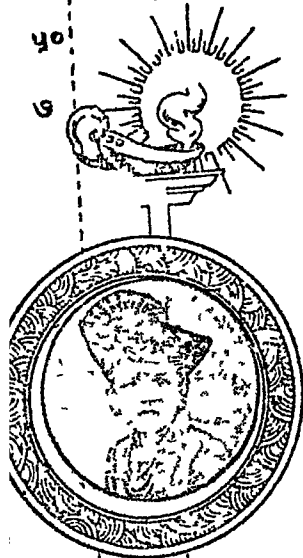
सिद्ध चक्र

ह्रीं

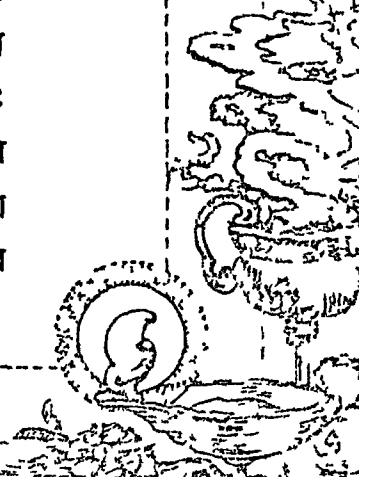
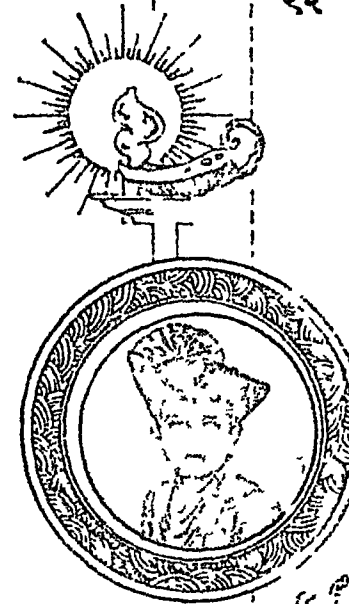
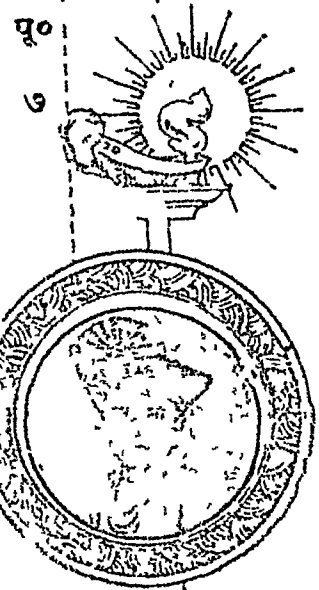
संङ्कल विधान

ॐ ह्रीं सूरिनिजस्वभावाय नमः स्वाहा । २८८ । ॐ ह्रीं सूरिआश्रवत्रिलयाय नमः स्वाहा । २८९ । ॐ ह्रीं सूरिविध-  
विनाशाय नमः स्वाहा । २९० । ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्त्वाय नमः स्वाहा । २९१ । ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्त्व-  
स्वरूपाय नमः स्वाहा । २९२ । ॐ ह्रीं सूरिसंवरगुणाय नमः स्वाहा । २९३ । ॐ ह्रीं सूरिसंवरधर्माय  
नमः स्वाहा । २९४ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरातत्त्वाय नमः स्वाहा । २९५ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरागुणाय नमः  
स्वाहा । २९६ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरागुणरूपाय नमः स्वाहा । २९७ । ॐ ह्रीं सूरिपरमनिर्जराधर्माय नमः  
स्वाहा । २९८ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरानुबंधाय नमः स्वाहा । २९९ । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरास्वरूपाय नमः  
स्वाहा । ३०० । ॐ ह्रीं सूरिनिर्जराप्रतापाय नमः स्वाहा । ३०१ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षाय नमः स्वाहा  
। ३०२ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३०३ । ॐ ह्रीं सूरिविंधमोक्षाय नमः स्वाहा । ३०४ ।  
ॐ ह्रीं सूरिमोक्षगुणाय नमः स्वाहा । ३०५ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षानुबंधाय नमः स्वाहा । ३०६ । ॐ ह्रीं सूरि-  
मोक्षप्रकाशकाय नमः स्वाहा । ३०७ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षविमंडनाय नमः स्वाहा । ३०८ । ॐ ह्रीं सूरिपर-  
मात्मस्वरूपरताय नमः स्वाहा । ३०९ । ॐ ह्रीं सूरिमोक्षप्राप्ताय नमः स्वाहा । ३१० ।  
ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः स्वाहा । ३११ । ॐ ह्रीं पाठकगुरोभ्यो नमः स्वाहा । ३१२ । ॐ ह्रीं  
पाठकगुणस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा । ३१३ । ॐ ह्रीं पाठकपर्यायाय नमः स्वाहा । ३१४ । ॐ ह्रीं पाठक-  
गुणपर्यायाय नमः स्वाहा । ३१५ । ॐ ह्रीं पाठकगुणपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३१६ । ॐ ह्रीं पाठक-  
द्रव्याय नमः स्वाहा । ३१७ । ॐ ह्रीं पाठकगुणद्रव्याय नमः स्वाहा । ३१८ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यस्वरूपाय  
नमः स्वाहा । ३१९ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यपर्यायाय नमः स्वाहा । ३२० । ॐ ह्रीं पाठकपर्यायस्वरूपाय नमः स्वाहा

५०  
५

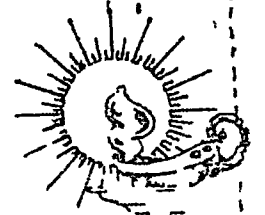


३२१ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलाय नमः स्वाहा । ३२२ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलगुणाय नमः स्वाहा । ३२३ । ॐ ह्रीं पाठक-  
मंगलगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३२४ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमंगलाय नमः स्वाहा । ३२५ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलद्रव्य-  
गुणाय नमः स्वाहा । ३२६ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलद्रव्यगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३२७ । ॐ ह्रीं पाठकमंगल-  
पर्यायाय नमः स्वाहा । ३२८ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमंगलपर्यायाय नमः स्वाहा । ३२९ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यगुणपर्या-  
याय नमः स्वाहा । ३३० । ॐ ह्रीं पाठकस्वरूपमंगलरूपाय नमः स्वाहा । ३३१ । ॐ ह्रीं पाठकलोकोत्त-  
माय नमः स्वाहा । ३३२ । ॐ ह्रीं पाठकगुणलोकोत्तमाय नमः स्वाहा । ३३३ । ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यलोको-  
त्तमाय नमः स्वाहा । ३३४ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाय नमः स्वाहा । ३३५ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानलोकोत्तमाय  
नमः स्वाहा । ३३६ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनाय नमः स्वाहा । ३३७ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनलोकोत्तमाय नमः  
स्वाहा । ३३८ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३३९ । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वस्वरूपाय नमः  
स्वाहा । ३४० । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३४१ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्याय नमः  
स्वाहा । ३४२ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणाय नमः स्वाहा । ३४३ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपर्यायाय नमः स्वाहा  
। ३४४ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यद्रव्याय नमः स्वाहा । ३४५ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणपर्यायाय नमः स्वाहा  
। ३४६ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनपर्यायाय नमः स्वाहा । ३४७ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपपर्यायाय नमः  
स्वाहा । ३४८ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानद्रव्याय नमः स्वाहा । ३४९ । ॐ ह्रीं पाठकशरणाय नमः स्वाहा  
। ३५० । ॐ ह्रीं पाठकगुणशरणाय नमः स्वाहा । ३५१ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानगुणशरणाय नमः स्वाहा  
। ३५२ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । ३५३ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा

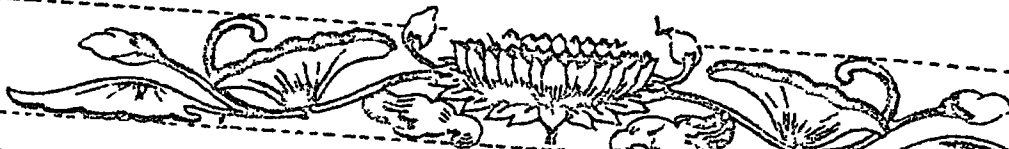
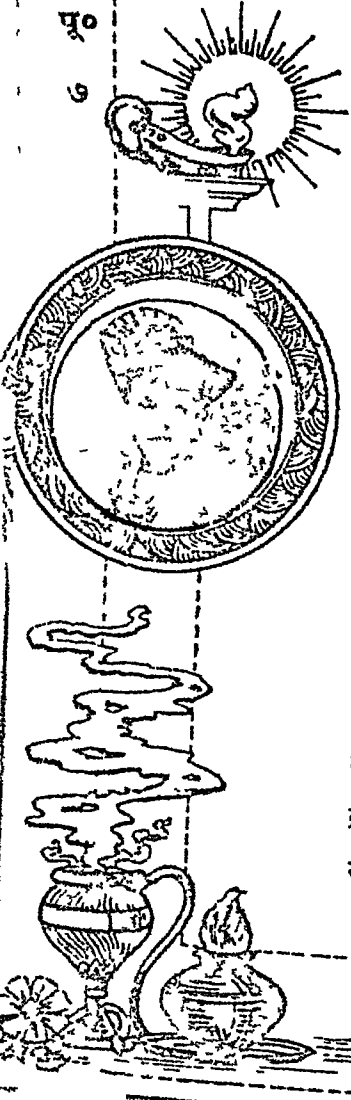


# — सिद्ध चक्र ह्रीं मंडल विधान —

। ३५४ । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वशरणाय नमः स्वाहा । ३५५ । ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । ३५६ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यशरणाय नमः स्वाहा । ३५७ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यस्वरूपशरणाय नमः स्वाहा । ३५८ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपरमात्मशरणाय नमः स्वाहा । ३५९ । ॐ ह्रीं पाठकद्वादशागाय नमः स्वाहा । ३६० । ॐ ह्रीं पाठकदशपूर्वाय नमः स्वाहा । ३६१ । ॐ ह्रीं पाठकचतुर्दशपूर्वाय नमः स्वाहा । ३६२ । ॐ ह्रीं पाठकाचारगाय नमः स्वाहा । ३६३ । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाचारागाय नमः स्वाहा । ३६४ । ॐ ह्रीं पाठकतपाचाराय नमः स्वाहा । ३६५ । ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयाय नमः स्वाहा । ३६६ । ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३६७ । ॐ ह्रीं पाठकध्रुवसाराय नमः स्वाहा । ३६८ । ॐ ह्रीं पाठक-एकत्वरूपाय नमः स्वाहा । ३६९ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वगुणाय नमः स्वाहा । ३७० । ॐ ह्रीं पाठकएकत्व-परात्मने नमः स्वाहा । ३७१ । ॐ ह्रीं पाठकधर्माय नमः स्वाहा । ३७२ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वचैतन्याय नमः स्वाहा । ३७३ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वचैतन्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३७४ । ॐ ह्रीं पाठकएकत्वद्रव्याय नमः स्वाहा । ३७५ । ॐ ह्रीं पाठकचिदानन्दाय नमः स्वाहा । ३७६ । ॐ ह्रीं पाठकसिद्धिसाधकाय नमः स्वाहा । ३७७ । ॐ ह्रीं पाठकसमृद्धिसपूर्णाय नमः स्वाहा । ३७८ । ॐ ह्रीं पाठकनिर्ग्रथाय नमः स्वाहा । ३७९ । ॐ ह्रीं पाठक-अर्थनिधानाय नमः स्वाहा । ३८० । ॐ ह्रीं पाठकससारनिधनाय नमः स्वाहा । ३८१ । ॐ ह्रीं पाठक-कल्याणाय नमः स्वाहा । ३८२ । ॐ ह्रीं पाठककल्याणगुणाय नमः स्वाहा । ३८३ । ॐ ह्रीं पाठक-कल्याणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ३८४ । ॐ ह्रीं पाठककल्याणद्रव्याय नमः स्वाहा । ३८५ । ॐ ह्रीं पाठकतत्त्वगुणाय नमः स्वाहा । ३८६ । ॐ ह्रीं पाठकतत्त्वचिद्रूपाय नमः स्वाहा । ३८७ । ॐ ह्रीं पाठकर्द्धि-



पूर्णाय नमः स्वाहा । ३८८ । ॐ ह्रीं पाठकगुणचैतन्याय नमः स्वाहा । ३८९ । ॐ ह्रीं पाठकज्योतिः-  
 प्रकाशाय नमः स्वाहा । ३९० । ॐ ह्रीं पाठकज्ञानचैतन्याय नमः स्वाहा । ३९१ । ॐ ह्रीं पाठकदर्शन-  
 चैतन्याय नमः स्वाहा । ३९२ । ॐ ह्रीं पाठकवीर्यचैतन्याय नमः स्वाहा । ३९३ । ॐ ह्रीं पाठकजीवविदे  
 नमः स्वाहा । ३९४ । ॐ ह्रीं पाठकसकलशरणाय नमः स्वाहा । ३९५ । ॐ ह्रीं पाठकत्रिलोकशरणाय  
 नमः स्वाहा । ३९६ । ॐ ह्रीं पाठकत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । ३९७ । ॐ ह्रीं पाठकमंगलशरणाय  
 नमः स्वाहा । ३९८ । ॐ ह्रीं पाठकलोकशरणाय नमः स्वाहा । ३९९ । ॐ ह्रीं पाठकाश्रवविनाशाय नमः  
 स्वाहा ४०० । ॐ ह्रीं पाठकाश्रवोच्छेदकाय नमः स्वाहा । ४०१ । ॐ ह्रीं पाठकव्रथकृतातकाय नमः स्वाहा  
 । ४०२ । ॐ ह्रीं पाठकव्रथमुक्ताय नमः स्वाहा । ४०३ । ॐ ह्रीं पाठकसंवराय नमः स्वाहा । ४०४ ।  
 ॐ ह्रीं पाठकसंवररूपाय नमः स्वाहा । ४०५ । ॐ ह्रीं पाठकसंवरकारणाय नमः स्वाहा । ४०६ । ॐ ह्रीं  
 पाठककन्दर्पच्छेदकाय नमः स्वाहा । ४०७ । ॐ ह्रीं पाठककर्मविस्फोटकाय नमः स्वाहा । ४०८ । ॐ ह्रीं  
 पाठकनिर्जरास्वरूपाय नमः स्वाहा । ४०९ । ॐ ह्रीं पाठकमोक्षाय नमः स्वाहा । ४१० । ॐ ह्रीं पाठक-  
 मोक्षस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४११ । ॐ ह्रीं पाठकात्मने नमः स्वाहा । ४१२ ।  
 ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा । ४१३ । ॐ ह्रीं साधुगुणोभ्यो नमः स्वाहा । ४१४ । ॐ ह्रीं  
 साधुगुणस्वरूपेभ्यो नमः स्वाहा । ४१५ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्याय नमः स्वाहा । ४१६ । ॐ ह्रीं साधु-  
 द्रव्यगुणाय नमः स्वाहा । ४१७ । ॐ ह्रीं साधुमोक्षाय नमः स्वाहा । ४१८ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनाय  
 नमः स्वाहा । ४१९ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानाय नमः स्वाहा । ४२० । ॐ ह्रीं साधुवीर्याय नमः स्वाहा ।





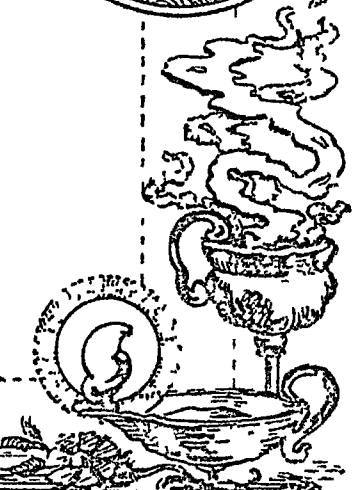
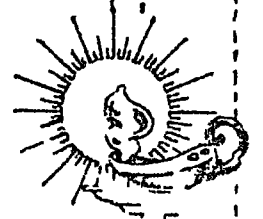
# — सिद्ध चक्र हीं मंडल विधान —

प०

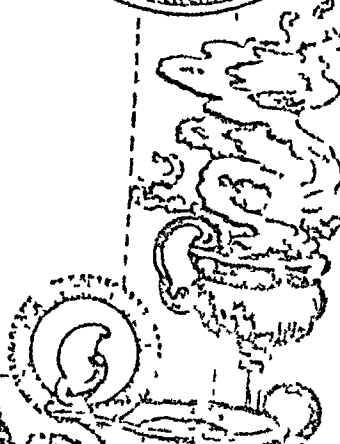
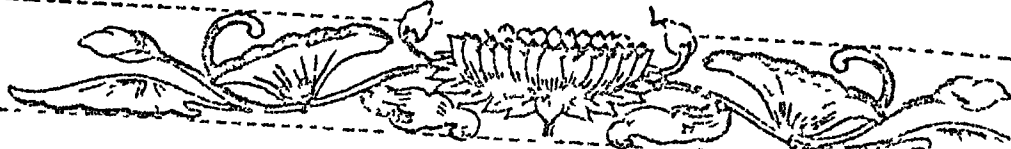
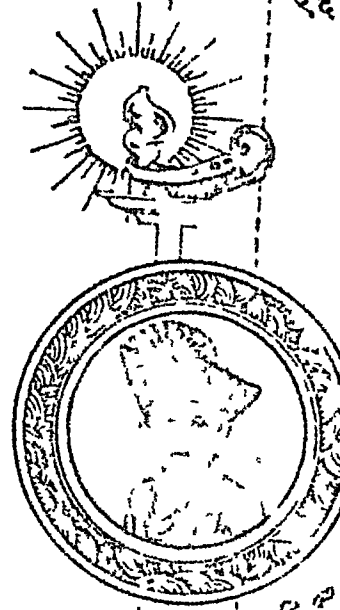
७

। ४२१ । ॐ हीं साधुज्ञानद्रव्याय नमः स्वाहा । ४२२ । ॐ हीं साधुद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४२३ । ॐ हीं साधुद्रव्यपर्यायाय नमः स्वाहा । ४२४ । ॐ हीं साधुदर्शनपर्यायाय नमः स्वाहा । ४२५ । ॐ हीं साधुमंगलाय नमः स्वाहा । ४२६ । ॐ हीं साधुमंगलस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४२७ । ॐ हीं साधुमंगलशरणाय नमः स्वाहा । ४२८ । ॐ हीं साधुदर्शनमंगलाय नमः स्वाहा । ४२९ । ॐ हीं साधुज्ञानमंगलाय नमः स्वाहा । ४३० । ॐ हीं साधुवीर्यमंगलाय नमः स्वाहा । ४३१ । ॐ हीं साधुवीर्यद्रव्याय नमः स्वाहा । ४३२ । ॐ हीं साधुवीर्यद्रव्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४३३ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमाय नमः स्वाहा । ४३४ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमगुणाय नमः स्वाहा । ४३५ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमगुणस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४३६ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमद्रव्याय नमः स्वाहा । ४३७ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमज्ञानाय नमः स्वाहा । ४३८ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमज्ञानस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४३९ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमदर्शनाय नमः स्वाहा । ४४० । ॐ हीं साधुलोकोत्तमवर्माय नमः स्वाहा । ४४१ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमवर्मस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४४२ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमवीर्याय नमः स्वाहा । ४४३ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमवीर्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४४४ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमातिशयसम्पन्नाय नमः स्वाहा । ४४५ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञानाय नमः स्वाहा । ४४६ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञानस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४४७ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमजिनाय नमः स्वाहा । ४४८ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमजिनगुणसम्पन्नाय नमः स्वाहा । ४४९ । ॐ हीं साधुलोकोत्तमपुरुषाय नमः स्वाहा । ४५० । ॐ हीं साधुगरणाय नमः स्वाहा । ४५१ । ॐ हीं साधुअर्हत्स्वरूपाय नमः स्वाहा । ४५२ । ॐ हीं साधुगुण-

१५

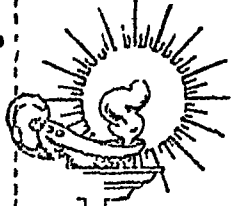


शरणाय नमः स्वाहा । ४५३ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनशरणाय नमः स्वाहा । ४५४ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनस्वरूप-  
 शरणाय नमः स्वाहा । ४५५ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानशरणाय नमः स्वाहा । ४५६ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानस्वरूप-  
 शरणाय नमः स्वाहा । ४५७ । ॐ ह्रीं साधुआत्मशरणाय नमः स्वाहा । ४५८ । ॐ ह्रीं साधुपरमात्म-  
 शरणाय नमः स्वाहा । ४५९ । ॐ ह्रीं साधुजिनात्मशरणाय नमः स्वाहा । ४६० । ॐ ह्रीं साधुवीर्यशरणाय  
 नमः स्वाहा । ४६१ । ॐ ह्रीं साधुवीर्यात्मशरणाय नमः स्वाहा । ४६२ । ॐ ह्रीं साधुलक्ष्म्यलंकृताय नमः  
 स्वाहा । ४६३ । ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीपरिणताय नमः स्वाहा । ४६४ । ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीरूपाय नमः स्वाहा ।  
 ४६५ । ॐ ह्रीं साधुध्रुवाय नमः स्वाहा । ४६६ । ॐ ह्रीं साधुगुरुध्रुवाय नमः स्वाहा । ४६७ ।  
 ॐ ह्रीं साधुद्रव्यध्रुवाय नमः स्वाहा । ४६८ । ॐ ह्रीं साधुद्रव्यगुणोत्पादाय नमः स्वाहा । ४६९ ।  
 ॐ ह्रीं साधुद्रव्योत्पादाय नमः स्वाहा । ४७० । ॐ ह्रीं साधुजीवाय नमः स्वाहा । ४७१ । ॐ ह्रीं  
 साधुजीवगुणाय नमः स्वाहा । ४७२ । ॐ ह्रीं साधुचैतन्याय नमः स्वाहा । ४७३ । ॐ ह्रीं साधु-  
 चैतन्यस्वरूपाय नमः स्वाहा । ४७४ । ॐ ह्रीं साधुचैतन्यगुणाय नमः स्वाहा । ४७५ । ॐ ह्रीं साधु-  
 प्रकाशाय नमः स्वाहा । ४७६ । ॐ ह्रीं साधुज्योतीरूपाय नमः स्वाहा । ४७७ । ॐ ह्रीं साधुज्योतिप्रदी-  
 पाय नमः स्वाहा । ४७८ । ॐ ह्रीं साधुज्ञानदीपाय नमः स्वाहा । ४७९ । ॐ ह्रीं साधुदर्शनप्रदीपाय नमः  
 स्वाहा । ४८० । ॐ ह्रीं साधुसर्वशरणाय नमः स्वाहा । ४८१ । ॐ ह्रीं साधुलोकशरणाय नमः स्वाहा ।  
 ४८२ । ॐ ह्रीं साधुत्रिलोकशरणाय नमः स्वाहा । ४८३ । ॐ ह्रीं साधुससारच्छेदकाय नमः स्वाहा । ४८४ ।  
 ॐ ह्रीं साधुत्रिकालशरणाय नमः स्वाहा । ४८५ । ॐ ह्रीं साधुएकत्वगुणाय नमः स्वाहा । ४८६ । ॐ ह्रीं



# — (सिद्ध चक्र ह्रीं मंडल विधान) —

७  
७



साधुएकत्वद्रव्याय नमः स्वाहा । ४८७ । ॐ ह्रीं साधुएकत्वस्वभावाय नमः स्वाहा । ४८८ । ॐ ह्रीं साधु-  
स्याद्वादाय नमः स्वाहा । ४८९ । ॐ ह्रीं साधुशब्दब्रह्मणो नमः स्वाहा । ४९० । ॐ ह्रीं साधुपरब्रह्मणो  
नमः स्वाहा । ४९१ । ॐ ह्रीं साधुपरमागमाय नमः स्वाहा । ४९२ । ॐ ह्रीं साधुजिनागमाय नमः स्वाहा  
। ४९३ । ॐ ह्रीं साधुअनेकार्थाय नमः स्वाहा । ४९४ । ॐ ह्रीं साधुपरमशुचित्वगुणाय नमः स्वाहा  
। ४९५ । ॐ ह्रीं साधुपरमपवित्राय नमः स्वाहा । ४९६ । ॐ ह्रीं साधु व्रंधविविक्ताय नमः स्वाहा । ४९७ ।  
ॐ ह्रीं साधुव्रंधप्रतिबंधकाय नमः स्वाहा । ४९८ । ॐ ह्रीं साधुसवरकाय नमः स्वाहा । ४९९ । ॐ ह्रीं  
साधुनिर्जरद्रव्याय नमः स्वाहा । ५०० । ॐ ह्रीं साधुनिर्जरगुणाय नमः स्वाहा । ५०१ । ॐ ह्रीं साधुबोव-  
गुणधर्माय नमः स्वाहा । ५०२ । ॐ ह्रीं साधुसुगतभावाय नमः स्वाहा । ५०३ । ॐ ह्रीं साधुपरमगत-  
भावाय नमः स्वाहा । ५०४ । ॐ ह्रीं साधुविभावरहिताय नमः स्वाहा । ५०५ । ॐ ह्रीं साधुस्वभावसहिताय  
नमः स्वाहा । ५०६ । ॐ ह्रीं साधुसिद्धस्वरूपाय नमः स्वाहा । ५०७ । ॐ ह्रीं साधुसूरिप्रकाशाय नमः  
स्वाहा । ५०८ । ॐ ह्रीं साधुपाध्यायपरमोष्ठिने नमः स्वाहा । ५०९ । ॐ ह्रीं साधुआत्मरतये नमः स्वाहा । ५१० ।  
ॐ ह्रीं अर्हसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा । ५११ । ॐ ह्रीं अर्हसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-  
रत्नत्रयात्मकानन्तगुरोभ्यो नमः स्वाहा । ५१२ ।

९९



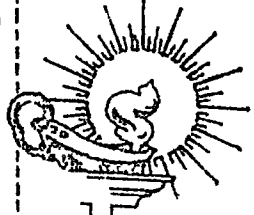
सिद्ध चक्र

हो

मंडल विधान

पृ०

७



उदयति परमात्मज्योतिरुद्योति यस्माद्,—  
विशदविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम् ।

शुचित्रघनसारोल्लासिभिश्चन्दनौघै,—  
गणधरवल्यं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ २ ॥ चन्दनम् ।

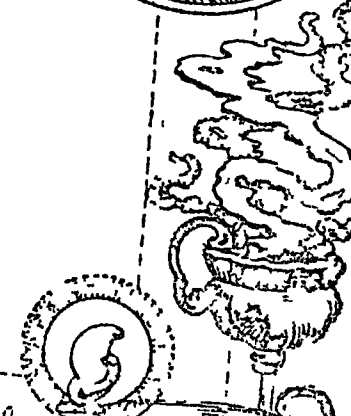
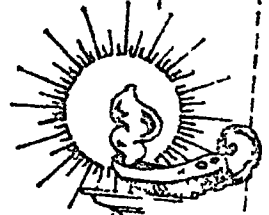
अहमहमिकयोन्वैः सम्यगाराधनायाम्,  
सुरनरखचरेन्द्राः यस्य भक्त्या यतन्ते ।

ललितसदकपुंजैः केवलज्ञानहेतो,—  
गणधरवल्यं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ३ ॥ अक्षतान् ।

भवभयगुरुपारावारपारं लभन्ते,  
विहितशिवसमृद्धेः सेवया यस्य संतः ।

कमलवकुलकुंदोदारमंदारपूरैः,  
गणधरवल्यं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ।

जननवनहुताशं छिन्नसन्मोहपाशम्,  
शमितमदनमानं विश्वविद्यानिदानम् ।





चरुभिरुरुगुणौघं प्रीणितप्राणिसंघम्,  
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ।

चिदचिदखिलजीवाजीवभेदादिवेद्यम्,  
सकलभुवननेत्रम् ज्ञानमाविष्करोति ।

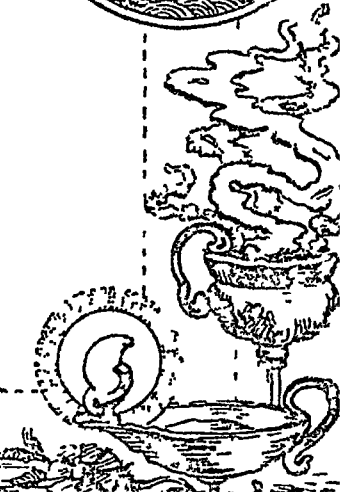
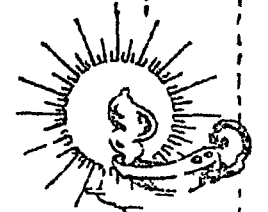
स्मरणमपि यदीयं दीप्रदीपप्रभौघैः,  
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ६ ॥ धूपम् ।

भवति न भवभाजां ध्यानतो यस्य पीडा,  
ग्रहदितिसुतरक्षः प्रेतभूतप्रसूता ।

अगुरुतुहिनभास्वच्चन्दनोद्भूतधूपैः,  
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ७ ॥ दीपम् ।

फलमतुलमनन्तं मुक्तिसौख्यप्रतीपम्,  
फलति विपुलसंवा सम्यगाविष्कृतोच्चैः ।

असदृशमहिमश्रीमन्दिरं मातुलिंगैः,  
गणधरवलयं तत्सिद्धयेऽभ्यर्चयामि ॥ ८ ॥ फलम् ।



अभिनवजलगंधामंदमन्दारमाला,—  
ललितममलमर्घ संदाम्यादरेण ।

गणधरवलयाय श्रीयुजे पद्मनन्दी,  
सुरहरिमहिताय प्राप्तये मुक्तिलक्ष्म्याः ॥ ९ ॥ अर्घम् ।

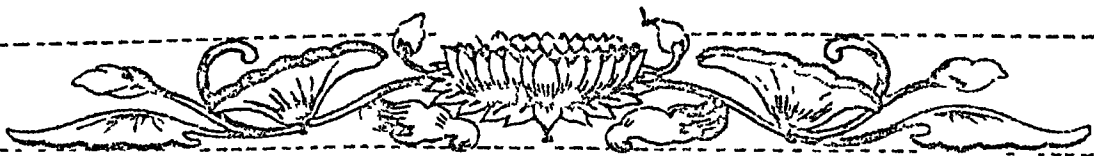
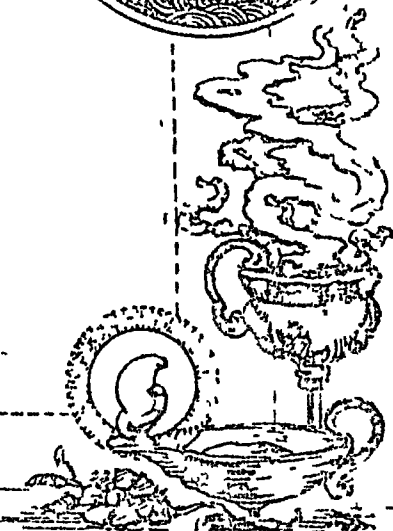
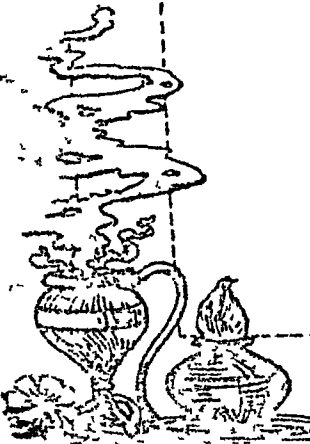
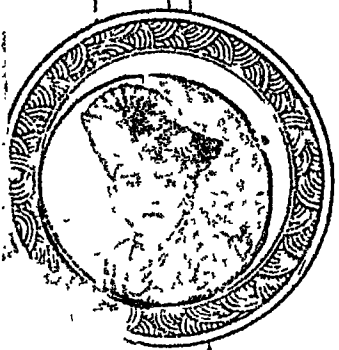
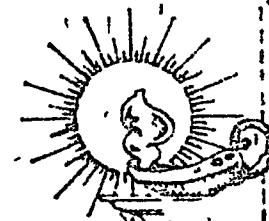
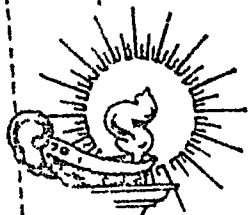
ॐ ह्रीं असिञ्चाउसा नमः, एतन्मन्त्रेणाष्टोत्तरं शतम् जाप्यं देयम्

अथ जयमाला ।

देवाधीशैर्महीशैः फणपतिभिरिह प्रत्यहं पूज्यपादा,—  
नर्हत्सिद्धानदेहांस्त्रिविधमुनिवरान् सूर्युपाध्यायसाधून् ।

दोषांतैस्तेर्गिरिष्ठान् निजसुगुणवरैर्भूषणैर्भूषितांश्च,  
नच्चा दृग्बोधवृत्तादिभिरपि सहितान् संस्तुवे तद्गुणाप्त्यै ॥ १ ॥

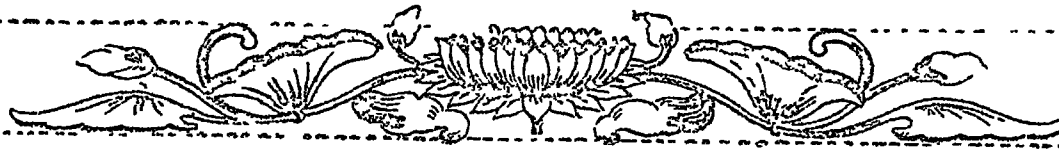
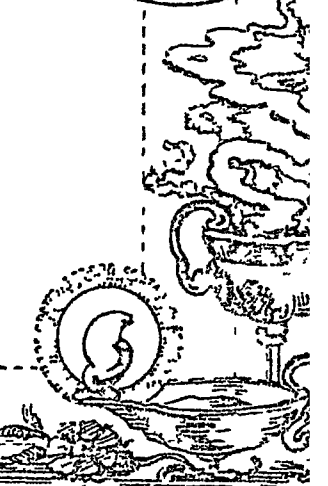
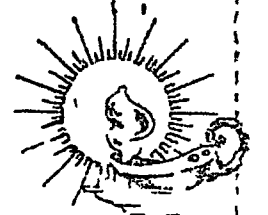
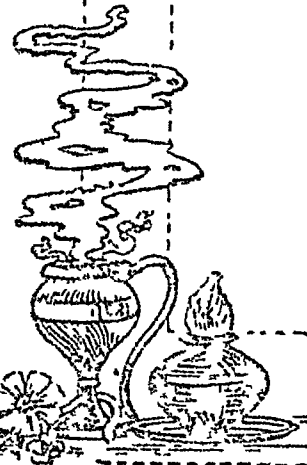
सदनंतचतुष्टयगुणविलास, हतघातिचतुष्टयकर्मपात्र ।  
सकलातिशयादिसुगुणसमृद्ध, त्वं हेऽर्हन् जिन जय जय समृद्ध ॥ २ ॥



जय कृतकर्माष्टकवैरिदूर, जय विश्वा लोकनपरमसूर ।  
जय सर्वोत्तम वसुगुणसमृद्ध, त्वं सिद्धदेव जय जय समृद्ध ॥ ३ ॥  
जय पंचाचारसुचरणधीर जय शिष्यानुग्रहकरणवीर ।  
स्थितिकल्पदशाऽऽदिशगुणसमृद्ध, त्वं सुरे जिन जयऽसमृद्ध ॥ ४ ॥  
एकादशांगकृतकंठहार, जय लब्धचतुर्दशपूर्वपार ।  
सर्वं श्रुतजलनिधिगुणसमृद्ध, त्वं पाठक जयऽसुतपवृद्ध ॥ ५ ॥  
आरंभपरिग्रहनिखिलमुक्त, सददर्शनबोधचरित्ररक्त ।  
जय मूलोत्तरगुणनिधिसमृद्ध, साधो जयऽसततं प्रबुद्ध ॥ ६ ॥  
सम्यग्दर्शनसंविचारित्र—, तपसाञ्चित रत्नत्रयपवित्र ।  
व्यवहारपरमगुणभेदपूर्ण, त्वं जय मुनिवर कृतकर्मचूर्ण ॥ ७ ॥

पंचैतान् परमेष्ठिनः सुतपसा रत्नत्रयेणान्वितान्,  
संसाराम्बुधितारकान् भविजना ध्यायन्ति ये नित्यशः ।  
ते देवेन्द्रपदं नरेन्द्रपदवीं संप्राप्य, भद्रैर्गुणैः—,  
सार्धं, जन्मजरादिदुःखरहितं पश्चाल्लभते शिवम् ॥ ८ ॥

“ पूर्णार्धम् ” ।



## सप्तम जयमालाका अर्थ

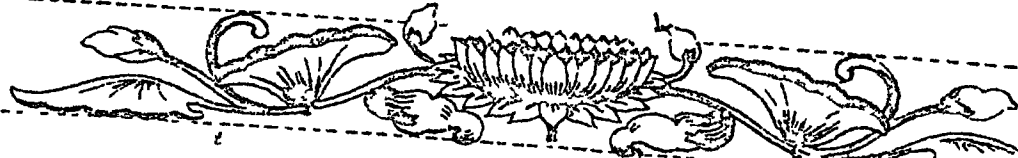
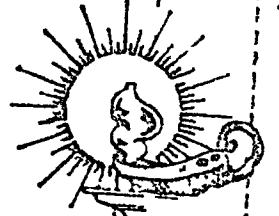
देवेन्द्रो, नरेन्द्रो और भवनवासियोके अधिपतियों-असुरेन्द्रोंके द्वारा जिनके चरण प्रतिदिन पूजे जाते हैं, ऐसे अर्हन् परमेष्ठों तथा अशरीर सिद्धपरमात्मा और आचार्य उपाध्याय साधु इस तरह तीन प्रकारके मुनिवरोको जो कि दोपोंके विनाशसे महान्, अपने २ समीचीन गुणरूपी भूषणोंसे भूषित, और दर्शनज्ञान चारित्र आदिसे युक्त हैं, नमस्कार करके मैं उनके गुणोंकी प्राप्तिके लिये उनका स्तवन करता हूँ ॥ १ ॥

अनन्त चतुष्टयरूप गुण जिनमे विलास कर रहे हैं, चार घातिया कर्मोंका जाल जिन्होंने तोड़ दिया है, समस्त अतिशय आदि सद्गुणोंसे समृद्ध है ऐसे हे अर्हन् जिन भगवन् आप सदा जयवन्त रहें ॥ २ ॥

आठ कर्मरूपी शत्रुओंको जिन्होंने दूर कर दिया है, विश्व मात्रको देखनेमे जो उत्कृष्ट सूर्यके समान हैं, जो सबसे उत्तम आठ गुणोंसे पूर्ण हैं ऐसे हे सिद्धदेव आप जयवन्त रहे ॥ ३ ॥

पंचाचारका पालन करनेमे घोर, शिष्योंका अनुग्रह करनेमें वीर, और स्थितिकल्प नामक दश गुणोंका उपदेश करनेवाले गुणोंसे समृद्ध हे आचार्य परमेष्ठिन् आप सदा जयवन्त रहे ॥ ४ ॥

ग्यारह अंगोंको जिन्होंने अपने कण्ठका हार बना लिया है, और जिन्होंने चतुर्दश पूर्वोंका पार प्राप्त कर लिया है, तथा समस्त श्रुतसमुद्ररूपीगुणोंसे समृद्ध है ऐसे हे उपाध्याय परमेष्ठिन् आप सदा जयवन्त रहें ॥ ५ ॥





— सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान —

५०

७

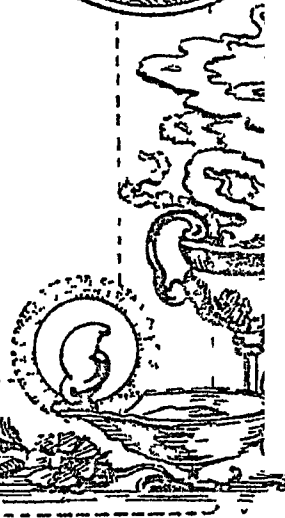


आरम्भ और परिग्रहसे सर्वथा रहित, सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र्ये अनुरक्त, मूलगुण और उत्तरगुण रूप निधिसे समृद्ध निरंतर प्रबुद्ध रहनेवाले हे साधु परमेष्ठिन् आप सदा जयवन्त रहें ॥ ६ ॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र्य और तपरूप आराधनाओंसे युक्त और रत्नत्रयसे पवित्र, व्यवहाररूप परम गुणोंके भेदोंसे पूर्ण कर्मोंको चूर्ण करनेवाले हे मुनिवर आप सदा जयवन्त रहे ॥ ७ ॥

समीचीन तप और रत्नत्रयसे युक्त, संसारसमुद्रसे तारनेवाले इन पंचपरमेष्ठियोंका जो प्राणी नित्य ध्यान करते हैं वे देवेन्द्र और नरेन्द्रपदको प्राप्त कर भद्र—समीचीन गुणोंके साथ जन्मजरादिके दुःखोंसे रहित शिवपदको अंतमे प्राप्त किया करते हैं ॥ ८ ॥

१०



अथ चतुर्विंशत्यधिकसहस्रकमलोपर्यष्टमी पूजा ।

ऊर्ध्वाधोरयुतं साविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितम्,  
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्वान्वितम् ।

अंतःपत्रतटेष्वनाहतयुतं हींकारसंवेष्टिम्,  
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥ १ ॥

( पुष्पं दत्त्वा स्थापनां कुर्यात् )

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।  
वन्देहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥ १ ॥

सकलामरेन्द्रसेव्यं ज्ञानामृतपानतृप्तनिजभावम् ।  
संस्थापयामि सिद्धं कर्मानलदावमेघौघम् ॥ २ ॥

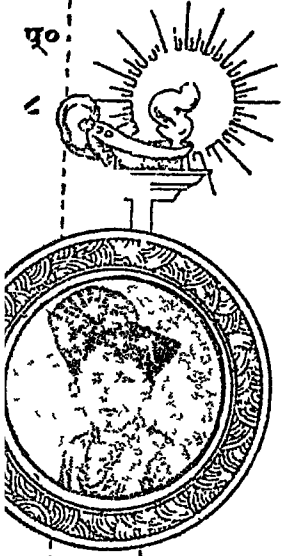
ॐ हीं रामो सिद्धाणं सिद्धपरमोष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट्

” ” ” ” ” अत्र तिष्ठ २ ठः ठः

” ” ” ” ” अत्र मम सन्निहितो भव २ वपट्

— (सिद्ध चक्र ह्रीं मंडलविधान) —

५०



अथाष्टकम् ।

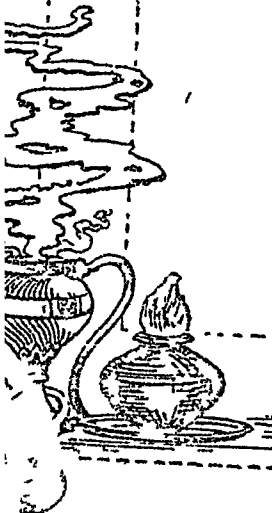
सकलजनकलंकं क्षालयद्भिः सुनीरै,—  
स्त्रिदिवसरितिजातैर्जनवाक्योपमानैः ।  
शिवसदननिविष्टं नाद्यनंतं प्रमुक्तम्,  
दशशतजिनवारं पूजये सिद्धचक्रम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धाधिपतिभ्यो नमः स्वाहा, जलम् ।

अथ प्रत्येकमंत्राणि ।

ॐ ह्रीं जिनाय नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं जिनेन्द्राय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं जिनाधिपाय  
नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं जिनराजे नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं जिनप्रप्राय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं जिनो-  
त्तमाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं जिनाधीशाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं जिनस्वामिने नमः स्वाहा । ८ ।  
ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं जिननाथाय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं जिनपतये नमः  
स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं जिनराजाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं जिनाधिराजे नमः स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं  
जिनप्रभवे नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं जिनविभवे नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं जिनभत्रे नमः स्वाहा । १६ ।

१०१



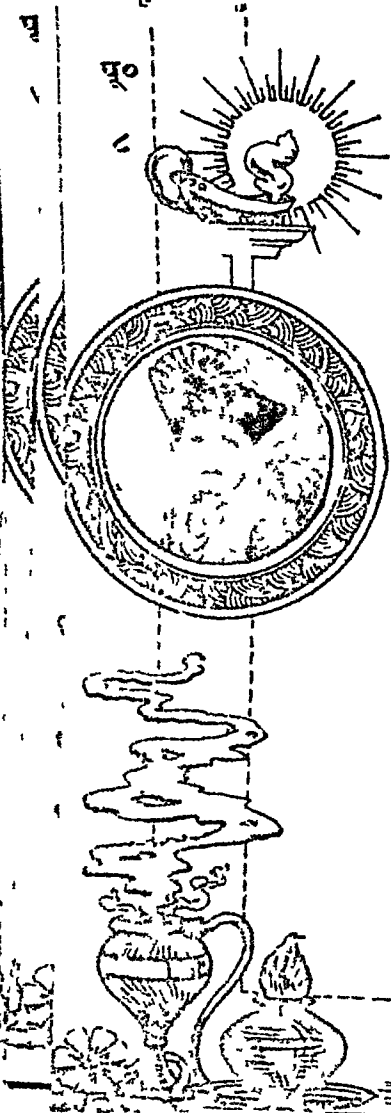
सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडलविधान

ॐ ह्रीं जिनाधिभुवे नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं जिननेत्रे नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं जिनेशानाय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं जिनेनाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं जिननायकाय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं जिनेने<sup>१</sup> नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं जिनपरिवृढाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं जिनदेवाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं जिनेशित्रे नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं जिनाधिराजाय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं जिनपार्ये नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं जिनेशिने नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं जिनशासित्रे नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं जिनाधिनाथाय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं जिनाधिपतये नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं जिनपालकाय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं जिनचन्द्राय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं जिनादित्याय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं जिनाकार्याय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं जिनकुंजराय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं जिनेन्दवे नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं जिनधौरेयाय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं जिनधुर्याय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं जिनोत्तराय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं जिनवर्याय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं जिनवराय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं जिनसिंहाय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं जिनोद्दह्याय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं जिनर्पभाय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं जिनवृषाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं जिनरत्नाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं जिनोरसे<sup>२</sup> नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं जिनेशाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं जिनशा-  
ईलाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं जिनाग्न्याय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं जिनपुंगवाय नमः स्वाहा

१—इनः स्वामी, २—ईष्टे इति ईष्ट् तस्मै । ३—परिवृढ.—प्रभुः । ४—जिनान् पातीति जिनपः । ५—जिना उद्दहाः—पुत्रा यस्य सः अथवा जिनान् उद्दहति—ऊर्ध्वं नयतीति जिनोद्दहः तस्मै । ६—उर.—प्रधानः ।



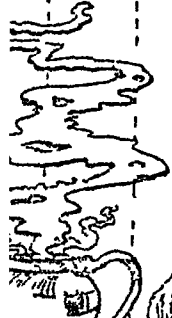
सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान

पू०

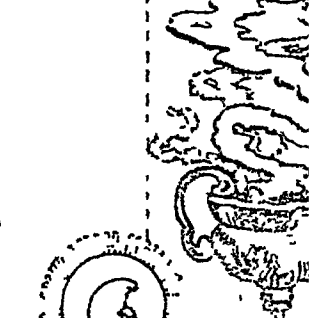
८



। ५२ । ॐ ह्रीं जिनहर्षाय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं जिनोत्तंसाय नमः स्वाहा । ५४ ॐ ह्रीं जिननागाय  
नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं जिनाप्रणयै नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं जिनप्रवेकाय नमः स्वाहा । ५७ ।  
ॐ ह्रीं जिनग्रामण्यै नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं जिनसत्तमाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं जिनप्रवर्हाय नमः  
स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं परमजिनोय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं जिनपुगोगमाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ  
ह्रीं जिनश्रेष्ठाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं जिनज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं जिनमुख्याय नमः  
स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं जिनाग्रिमाय नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं श्रीजिनाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं  
उत्तमजिनाय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं जिनवृन्दारकाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं अरिजिते नमः स्वाहा ।  
७० । ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं विरजसे नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः  
स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं निस्तरस्काय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं निरजनाय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं  
व्रातिकर्मान्तकाय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं कर्ममर्माविधे नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं कर्मत्रे नमः स्वाहा ।  
७८ । ॐ ह्रीं अनघाय नमः स्वाहा । ७९ ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं अतुधे नमः  
स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं अद्रेषाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं निर्म-  
दाय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं अगदाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं वितृष्णाय नमः स्वाहा । ८६ ।

१—हसो भास्करः । २—उत्तसो—मुकुटः । ३—प्रवेक.—प्रधानः । ४—परया—उत्कृष्टया, मया—लक्ष्म्या,  
उपलक्षितः=परमः सचासौ जिनदत्त तस्मै । ५—कर्मणा मर्म—जीवस्थानम् आ समन्तात् विव्यति इति स, तस्मै ।

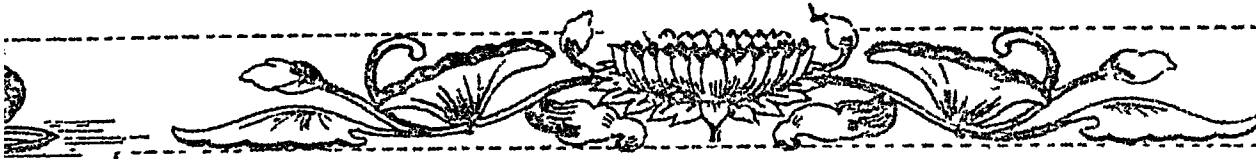
१०१



ॐ ह्रीं निर्ममायै नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं असंगाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं निर्भयायै नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं वीतविस्मयायै नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं अस्वप्नायै नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं निश्रमायै नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं अजन्मने नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं निःस्वेदायै नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं निर्जरायै नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं अमरायै नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं अरत्यतीतायै नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं निश्चिन्तायै नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं निर्विषादायै नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं त्रिपष्टि-जिते नमः स्वाहा । १०० ।

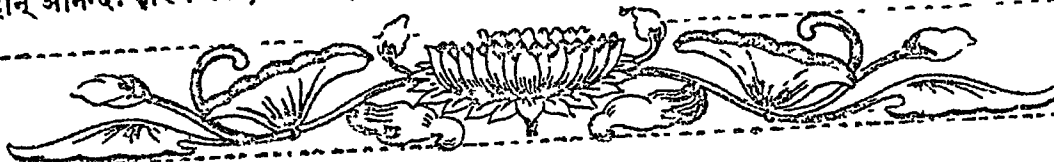
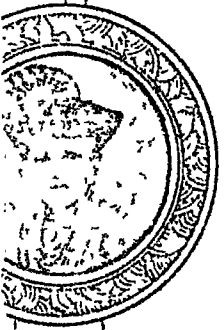
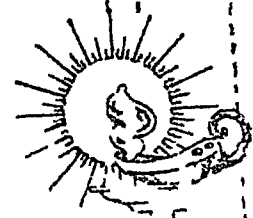
ॐ ह्रीं सर्वज्ञायै नमः स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः स्वाहा । १०२ । ॐ ह्रीं सर्व-दर्शिने नमः स्वाहा । १०३ । ॐ ह्रीं सर्वावलोकनायै नमः स्वाहा । १०४ । ॐ ह्रीं अनन्तविक्रमायै नमः स्वाहा । १०५ । ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यायै नमः स्वाहा । १०६ । ॐ ह्रीं अनन्तसुखार्त्तकायै नमः स्वाहा ।

१—निर्गत मम यस्य स, अथवा निः—निश्चितं मा—प्रमाणं यस्य स एवंभूतः सन् यः पदार्थान् माति-भिन्नोतीति निर्ममः । २—निर्मत भयं यस्य, वा भव्याना यस्मात् स, यद्वा निश्चिन्ता भा दीतिर्यस्य तन्निर्भ-केवलख्य ज्योतिः तत् याति—प्राप्नोति इति निर्भयः । ३—वीतो विनष्टोऽद्भुतरसो मदो वा यस्य, अथवा वीतो वेगंरुडस्य स्मयो—गर्वोयस्मात्, गरुडादयधिकतर विपहरणसामर्थ्यवत्त्वाद्भवतः । ४—अविद्यमानः स्वप्नः निद्रा प्रमादो वा यस्य, अथवा असूय प्राणिनोऽप्यो जीवन नयतीति अस्वप्नः । ५—निर्गतः श्रमात्—खेदात्, निश्चितः श्रमस्तपो यस्येति वा । ६—स्वेदरहितः, निःस्वाना—दरिद्राणामिम् काम ददातीति वा । ७—पश्चात्तापरहितः, निर्विष पापरहितं सुखमानन्दामृतमतीति वा निर्विषादः । ८—त्रिपष्टिकर्मणा जेता । ९—अनन्तपराक्रमः, अनन्ते अलोके विक्रमो ज्ञानद्वारा गमनं यस्य, अनन्ताः शेषनागा धरणीन्द्रादयो विशेषेण क्रमयोर्नम्रीभूता यस्येति वा १०—अनन्तसुखमात्मा यस्य, अनन्तसुखमात्मानं कायति—कथयति ।



१०७ । ॐ ह्रीं अनन्तसौख्याय नमः स्वाहा । १०८ । ॐ ह्रीं विश्वज्ञाय नमः स्वाहा । १०९ । ॐ ह्रीं विश्वदृश्यने नमः स्वाहा । ११० । ॐ ह्रीं अरिवलार्थदर्शने नमः स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं न्यक्तदर्शने नमः स्वाहा । ११२ । ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः स्वाहा । ११३ । ॐ ह्रीं विश्वचक्षुषे नमः स्वाहा । ११४ । ॐ ह्रीं अशेषविदे नमः स्वाहा । ११५ । ॐ ह्रीं आनन्दाय नमः स्वाहा । ११६ । ॐ ह्रीं परमानन्दाय नमः स्वाहा । ११७ । ॐ ह्रीं सदानन्दाय नमः स्वाहा । ११८ । ॐ ह्रीं सद्बोद्धाय नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं नित्यानन्दाय नमः स्वाहा । १२० । ॐ ह्रीं महानन्दाय नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ह्रीं परानन्दाय नमः स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं परोदयाय नमः स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं परमोजसे नमः स्वाहा । १२४ । ॐ ह्रीं परंतेजसे नमः स्वाहा । १२५ । ॐ ह्रीं परधाम्ने नमः स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं परमहसे नमः स्वाहा । १२७ । ॐ ह्रीं प्रत्यग्ज्योतिषे नमः स्वाहा । १२८ । ॐ ह्रीं परज्योतिषे नमः स्वाहा । १२९ । ॐ ह्रीं परंब्रह्मणे नमः स्वाहा । १३० । ॐ ह्रीं परंरहसे नमः स्वाहा । १३१ । ॐ ह्रीं प्रत्यगात्मने नमः स्वाहा । १३२ । ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः स्वाहा । १३३ । ॐ ह्रीं महात्मने नमः स्वाहा । १३४ । ॐ ह्रीं आत्ममहोदयाय नमः स्वाहा । १३५ । ॐ ह्रीं परमात्मने नमः स्वाहा । १३६ । ॐ ह्रीं प्रज्ञान्तात्मने नमः स्वाहा । १३७ । ॐ ह्रीं परात्मने नमः स्वाहा । १३८ । ॐ ह्रीं आत्मनिकेतनाय नमः स्वाहा । १३९ । ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः स्वाहा । १४० । ॐ ह्रीं महिष्ठात्मने नमः स्वाहा । १४१ । ॐ ह्रीं श्रेष्ठात्मने नमः स्वाहा । १४२ ।

१—अतीन्द्रियदृष्टा । २—सदा उदयो यस्य, सदाउत्-उत्कृष्टम् अयः शुभावहो विधिर्यस्येति वा ।  
३—महान् आनन्दः सौख्यं यस्य, महेन-पूजया आनन्दः यस्मादिति वा ।



ॐ ह्रीं स्वात्मनिष्ठिताय नमः स्वाहा । १४३ । ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः स्वाहा । १४४ । ॐ ह्रीं महानिष्ठाय नमः स्वाहा । १४५ । ॐ ह्रीं निरूढात्मने नमः स्वाहा । १४६ । ॐ ह्रीं दृढात्मदशे नमः स्वाहा । १४७ । ॐ ह्रीं एकविधाय नमः । १४८ । ॐ ह्रीं महाविधाय नमः स्वाहा । १४९ । ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः स्वाहा । १५० । ॐ ह्रीं पञ्चब्रह्ममयाय नमः स्वाहा । १५१ । ॐ ह्रीं सार्वाय नमः स्वाहा । १५२ । ॐ ह्रीं सर्वविधेश्वराय नमः स्वाहा । १५३ । ॐ ह्रीं सुभुवे नमः स्वाहा । १५४ । ॐ ह्रीं अनन्तधिये नमः स्वाहा । १५५ । ॐ ह्रीं अनन्तात्मने नमः स्वाहा । १५६ । ॐ ह्रीं अनन्तशक्तये नमः स्वाहा । १५७ । ॐ ह्रीं अनन्तदशे नमः स्वाहा । १५८ । ॐ ह्रीं अनन्तानन्तर्धाशक्तये नमः स्वाहा । १५९ । ॐ ह्रीं अनन्तविदे नमः स्वाहा । १६० । ॐ ह्रीं अनन्तमुदे नमः स्वाहा । १६१ । ॐ ह्रीं सदाप्रकाशाय नमः स्वाहा । १६२ । ॐ ह्रीं सर्वार्थसाक्षात्कारिणे नमः स्वाहा । १६३ । ॐ ह्रीं समग्रधिये नमः स्वाहा । १६४ । ॐ ह्रीं कर्मसाक्षिणे नमः स्वाहा । १६५ । ॐ ह्रीं जगच्चक्षुषे नमः स्वाहा । १६६ । ॐ ह्रीं अलक्ष्यात्मने नमः स्वाहा । १६७ । ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः स्वाहा । १६८ । ॐ ह्रीं निरावाधाय नमः स्वाहा । १६९ । ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः स्वाहा । १७० । ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः स्वाहा । १७१ । ॐ ह्रीं विदावराय नमः स्वाहा । १७२ । ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः स्वाहा । १७३ । ॐ ह्रीं सहजज्योतिषे नमः स्वाहा । १७४ । ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः स्वाहा । १७५ । ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय नमः स्वाहा । १७६ । ॐ ह्रीं केवलिने नमः स्वाहा । १७७ । ॐ ह्रीं केवलालोकाय नमः स्वाहा ।

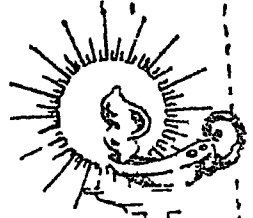
१—गोभना—ममवसरणरूपा, मोक्षरूपा, ईश्वरभाग्यारनाम्नी भूः स्थान यस्य ।



# सिद्ध चक्र हीं मंडल विधान

१७८ । ॐ हीं लोकालोकविलोकनाय नमः स्वाहा । १७९ । ॐ हीं विविक्ताय नमः स्वाहा । १८० ।  
 ॐ हीं केवलाय नमः स्वाहा । १८१ । ॐ हीं अग्र्यक्ताय नमः स्वाहा । १८२ । ॐ हीं गरण्याय नमः  
 स्वाहा । १८३ । ॐ हीं अचिन्त्यवैभवाय नमः स्वाहा । १८४ । ॐ हीं विश्वभृते नमः स्वाहा । १८५ ।  
 ॐ हीं विश्वरूपात्मने नमः स्वाहा । १८६ । ॐ हीं विश्वात्मने नमः स्वाहा । १८७ । ॐ हीं विश्वतो-  
 मुखाय नमः स्वाहा । १८८ । ॐ हीं विश्वव्यापिने नमः स्वाहा । १८९ । ॐ हीं स्वयंज्योतिषे नमः स्वाहा ।  
 १९० । ॐ हीं अचिन्त्यात्मने नमः स्वाहा । १९१ । ॐ हीं अमितप्रभाय नमः स्वाहा । १९२ । ॐ हीं  
 महौदार्याय नमः स्वाहा । १९३ । ॐ हीं महाबोधये नमः स्वाहा । १९४ । ॐ हीं महालाभाय नमः स्वाहा  
 । १९५ । ॐ हीं महोदयाय नमः स्वाहा । १९६ । ॐ हीं महोपभोगाय नमः स्वाहा । १९७ । ॐ हीं  
 सुगतये नमः स्वाहा । १९८ । ॐ हीं महाभोगाय नमः स्वाहा । १९९ । ॐ हीं महात्रलाय नमः स्वाहा । २०० ।  
 ॐ हीं यज्ञार्हाय नमः स्वाहा । २०१ । ॐ हीं भगवते नमः स्वाहा । २०२ । ॐ हीं अर्हते  
 नमः स्वाहा । २०३ । ॐ हीं महार्हाय नमः स्वाहा । २०४ । ॐ हीं मघवार्चिताय नमः स्वाहा । २०५ ।  
 ॐ हीं भूतार्थयज्ञपुरुषाय नमः स्वाहा । २०६ । ॐ हीं भूतार्थक्रतुपुरुषाय नमः स्वाहा । २०७ । ॐ

१—असहायः—सर्वथा स्वतन्त्रः, के—आत्मनि बल यस्येतिवा । २—विश्वतः—चतुर्दिक्षु मुख यस्य,  
 अथवा विश्वतोमुख जलमुच्यते तद्धर्म साधर्म्यात् भगवानपि विश्वतोमुखः अमितपातकप्रक्षालनात् विषयसुखदाहनिवारकत्वात्  
 प्रसक्तिरूपत्वाच्च, विश्व तस्यनि स्वमौंक्षयोर्नयति मुखं यस्य, विश्वतः सर्वांगेषु मुख यस्येतिवा, सहस्रगीर्षः सहस्रपा-  
 दित्यभिधानात् ।



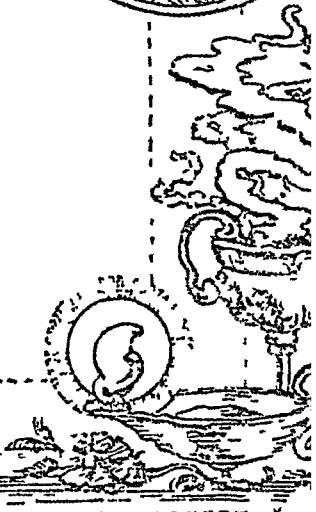
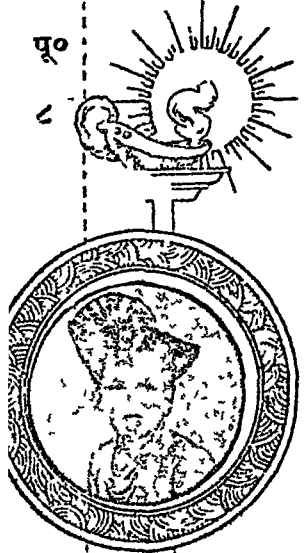


# — ( सिद्ध चक्र ह्रीं मङ्गलाविधान ) —

पू०

स्वाहा । २४० । ॐ ह्रीं सर्वशक्रनमस्कृताय नमः स्वाहा । २४१ । ॐ ह्रीं हर्षकुलामरखगाय नमः स्वाहा । २४२ । ॐ ह्रीं चारुणार्षिमतोत्सवाय नमः स्वाहा । २४३ । ॐ ह्रीं व्यवार्य नमः स्वाहा । २४४ । ॐ ह्रीं विष्णुपदारक्षाय नमः स्वाहा । २४५ । ॐ ह्रीं स्नानपीठायितादिराजे नमः स्वाहा । २४६ । ॐ ह्रीं तीर्थ-शंमन्यदुग्धाब्धये नमः स्वाहा । २४७ । ॐ ह्रीं स्नानाम्बुस्नातवासवाय नमः स्वाहा । २४८ । ॐ ह्रीं गंधाम्बुपूत-त्रैलोक्याय नमः स्वाहा । २४९ । ॐ ह्रीं वज्रसूचीशुचिश्रवसे नमः स्वाहा । २५० । ॐ ह्रीं कृतार्थितशचीहस्ताय नमः स्वाहा । २५१ । ॐ ह्रीं शक्रोद्घुष्टेष्टनैमिकाय नमः स्वाहा । २५२ । ॐ ह्रीं शक्रारब्धानन्दनृत्याय नमः स्वाहा । २५३ । ॐ ह्रीं शचीविस्मापिताम्बिकाय नमः स्वाहा । २५४ । ॐ ह्रीं इन्द्रनृत्यन्तपितृकाय नमः स्वाहा । २५५ । ॐ ह्रीं रैदैनपूर्णमनोरथाय नमः स्वाहा । २५६ । ॐ ह्रीं आज्ञार्थीन्द्रकृतासेवाय

१—श्रुतसागरटीकाया “ व्योम ” शब्द उपलभ्यते, तैः स, विशेषेण अवति-रक्षति प्राणिगणानिति व्योम इति निरुक्तश्च । किन्तु विपूर्वकादव् धातोर्व्यवशब्द एव भवितुमर्हति न व्योम इति । अतएवेह व्यवशब्द एव व्यवहृतः । “ व्योम ” इति मूलपाठे तु एव निरुक्तिः संभवति—“ व्यो ” इति वीजार्थकोऽव्ययः, त-ससारमोक्षयोर्मूल मन्यते जानातीति व्योम इति । २ अस्य, “ विष्णुपदा रक्षा ” इत्यग्निमशब्दस्य च श्रुतसागरैराविष्ट लिङ्गत्व सूचितम् । वेवेष्टि-व्याप्नोति लोकमिति विष्णु-प्राणिवर्गः । तेषां पदानि-गुणस्थानानि मार्गणास्थानानि वा तेषामासमन्ताद् रक्षा, करुणारूपत्वान्द्रगवतः । ३—शक्रणोद्घुष्टमुच्चरितम् इष्ट-सर्वमानित नाम यस्य । ४—इन्द्रस्य नृतिर्नर्तनम् अन्ते अग्रे पितुर्यस्य । यस्य भगवतः पितुरग्रे इन्द्रः नृत्यति तस्मै इत्यर्थः । भगवतोऽभिषेकात्प्राक् पश्चाच्चेति वारद्वयं पितुरग्रे इन्द्रः नृत्य करोतीति सूचनार्थं नामद्वयेनेह स्मरणम् । ५—रैदैन-कुबेरनामकेन यक्षेन्द्रेण पूर्णाः-पूर्तिनीता मनोरथाः ( भोगोपभोगसम्पन्ननिधनः ) यस्य । ६—आज्ञाया अर्थी-अभिलाषकः सचासौ इन्द्रश्च तेन कृता-विहिता आ-ममन्तात् सेवा-पर्युपासन यस्य स ।





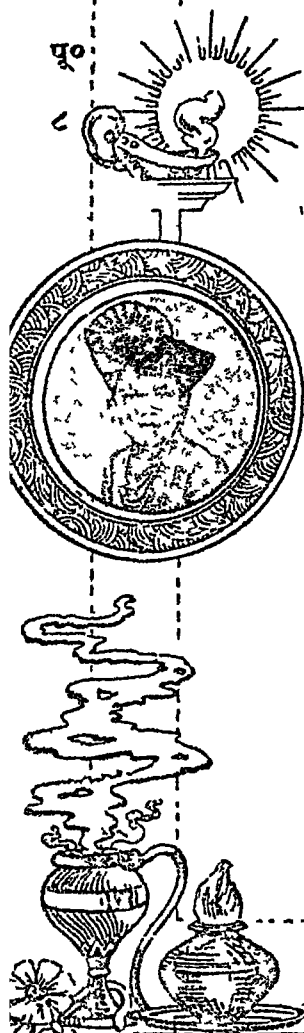
# — ( सिद्ध चक्र ह्रीं मंडलविधान ) —

११५

पू०

ॐ ह्रीं पद्मयानाय नमः स्वाहा । २८९ । ॐ ह्रीं जय-वज्रिने नमः स्वाहा । २९० । ॐ ह्रीं भामण्डलिने नमः स्वाहा । २९१ । ॐ ह्रीं चतुःपष्टिचामराय नमः स्वाहा । २९२ । ॐ ह्रीं देवदुन्दुभये नमः स्वाहा । २९३ । ॐ ह्रीं वागस्पृष्टासनाय नमः स्वाहा । २९४ । ॐ ह्रीं छत्रत्रयराजे नमः स्वाहा । २९५ । ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिभाजे नमः स्वाहा । २९६ । ॐ ह्रीं दिव्याशोकाय नमः स्वाहा । २९७ । ॐ ह्रीं मानमर्दिने नमः स्वाहा । २९८ । ॐ ह्रीं संगीतार्हाय नमः स्वाहा । २९९ । ॐ ह्रीं अष्टमगलाय नमः स्वाहा । ३०० । ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः स्वाहा । ३०१ । ॐ ह्रीं तीर्थसृजे नमः स्वाहा । ३०२ । ॐ ह्रीं तीर्थकराय नमः स्वाहा । ३०३ । ॐ ह्रीं तीर्थकराय नमः स्वाहा । ३०४ । ॐ ह्रीं सुदृशे नमः स्वाहा । ३०५ । ॐ ह्रीं तीर्थकर्त्रे नमः स्वाहा । ३०६ । ॐ ह्रीं तीर्थभर्त्रे नमः स्वाहा । ३०७ । ॐ ह्रीं तीर्थेशाय नमः स्वाहा । ३०८ । ॐ ह्रीं तीर्थनायकाय नमः स्वाहा । ३०९ । ॐ ह्रीं वर्मतीर्थकराय नमः स्वाहा । ३१० । ॐ ह्रीं तीर्थप्रणेत्रे नमः स्वाहा । ३११ । ॐ ह्रीं तीर्थकारकाय नमः स्वाहा । ३१२ । ॐ ह्रीं तीर्थप्रवर्तकाय नमः स्वाहा । ३१३ । ॐ ह्रीं तीर्थवेधसे नमः स्वाहा । ३१४ । ॐ ह्रीं तीर्थत्रिधायकाय नमः स्वाहा । ३१५ । ॐ ह्रीं सत्यतीर्थकराय नमः स्वाहा । ३१६ । ॐ ह्रीं तीर्थसेव्याय नमः स्वाहा । ३१७ । ॐ ह्रीं तैर्थिकतारकाय नमः स्वाहा । ३१८ । ॐ ह्रीं सत्यवाक्याधिपाय नमः स्वाहा । ३१९ । ॐ ह्रीं

१—वाग्भिरस्पृष्टमासनमुर. प्रभृत्युच्चारणस्थान यस्य ( अष्टौ स्थानानि ) वर्णानामुरः कण्ठ शिरस्तथा जिह्वामूलं-चदन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालुच ” । २—ये तीर्थे-शान्ते नियुक्ताः, ये च तीर्थे-गुरौ नियुक्ताः सेवापराः, यद्वा तीर्थे-जिनपूजने नियुक्ताः अथवा तीर्थे-पुण्यक्षेत्रे नियुक्ता—यात्राकारकाः, तथैव तीर्थे-पात्रं तस्य दानादिकर्मणि ये नियुक्ताः ते सर्वे तैर्थिका उच्यन्ते । तेषां तारकस्तस्मै ।



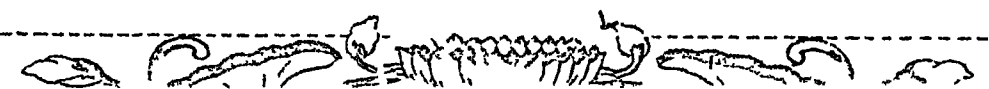
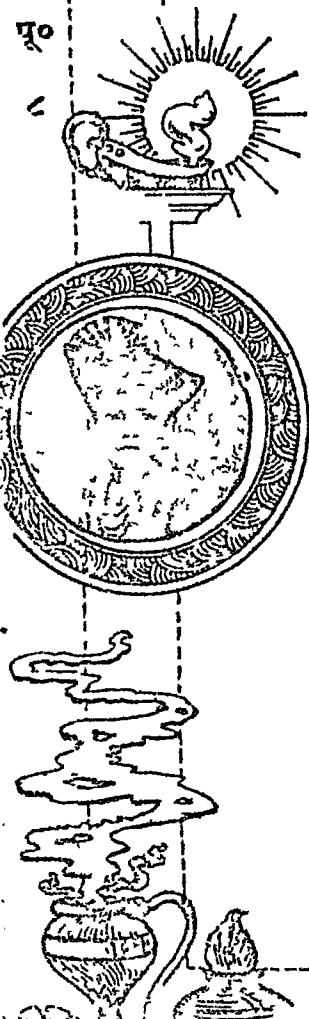
सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान

११६

सत्यशासनाय नमः स्वाहा । ३२० । ॐ ह्रीं अप्रतिशासकाय नमः स्वाहा । ३२१ । ॐ ह्रीं स्याद्वादिने  
नमः स्वाहा । ३२२ । ॐ ह्रीं दिव्यगिरे नमः स्वाहा । ३२३ । ॐ ह्रीं दिव्यव्यनये नमः स्वाहा । ३२४ ।  
ॐ ह्रीं अव्याहृतार्थवाचे नमः स्वाहा । ३२५ । ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः स्वाहा । ३२६ । ॐ ह्रीं अर्घ्यवाचे  
नमः स्वाहा । ३२७ । ॐ ह्रीं अर्द्धमागधीयोक्तये नमः स्वाहा । ३२८ । ॐ ह्रीं इन्द्रवाचे नमः स्वाहा  
। ३२९ । ॐ ह्रीं अनेकान्तदिशे नमः स्वाहा । ३३० । ॐ ह्रीं एकान्तध्वान्तभिदे नमः स्वाहा । ३३१ ।  
ॐ ह्रीं दुर्नयान्तकृते नमः स्वाहा । ३३२ । ॐ ह्रीं सार्थवाचे नमः स्वाहा । ३३३ । ॐ ह्रीं अप्रयत्नोक्तये  
नमः स्वाहा । ३३४ । ॐ ह्रीं प्रतितीर्थमदघ्नवाचे नमः स्वाहा । ३३५ । ॐ ह्रीं स्यात्कारध्वजवाचे नमः  
स्वाहा । ३३६ । ॐ ह्रीं ईहापेतवाचे नमः स्वाहा । ३३७ । ॐ ह्रीं अचलौष्ठवाचे नमः स्वाहा । ३३८ ।  
ॐ ह्रीं अपौरुषेयवाक्छास्त्रे नमः स्वाहा । ३३९ । ॐ ह्रीं रुद्रवाचे नमः स्वाहा । ३४० । ॐ ह्रीं सप्तभंगि-  
वाचे नमः स्वाहा । ३४१ । ॐ ह्रीं अवर्णागिरे नमः स्वाहा । ३४२ । ॐ ह्रीं सर्वभापामयगिरे नमः स्वाहा  
। ३४३ । ॐ ह्रीं व्यक्तवर्णागिरे नमः स्वाहा । ३४४ । ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः स्वाहा । ३४५ । ॐ ह्रीं  
अक्रमवाचे नमः स्वाहा । ३४६ । ॐ ह्रीं अवाच्यानन्तवाचे नमः स्वाहा । ३४७ । ॐ ह्रीं अवाचे नमः  
स्वाहा । ३४८ । ॐ ह्रीं अद्वैतगिरे नमः स्वाहा । ३४९ । ॐ ह्रीं सूनृतगिरे नमः स्वाहा । ३५० ।  
ॐ ह्रीं सत्यानुभयगिरे नमः स्वाहा । ३५१ । ॐ ह्रीं सुगिरे नमः स्वाहा । ३५२ । ॐ ह्रीं योजनव्यापि-  
गिरे नमः स्वाहा । ३५३ । ॐ ह्रीं क्षीरगौरगिरे नमः स्वाहा । ३५४ । ॐ ह्रीं तीर्थकृत्वगिरे नमः स्वाहा  
। ३५५ । ॐ ह्रीं भव्यैकश्रव्यगवे नमः स्वाहा । ३५६ । ॐ ह्रीं सद्रवे नमः स्वाहा । ३५७ । ॐ ह्रीं





चित्रगवे नमः स्वाहा । ३५८ । ॐ ह्रीं परमार्थगवे नमः स्वाहा । ३५९ । ॐ ह्रीं प्रशातगवे नमः स्वाहा । ३६० । ॐ ह्रीं प्राश्निकगवे नमः स्वाहा । ३६१ । ॐ ह्रीं सुगवे नमः स्वाहा । ३६२ । ॐ ह्रीं नियत-  
कालगवे नमः स्वाहा । ३६३ । ॐ ह्रीं सुश्रुतये नमः स्वाहा । ३६४ । ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः स्वाहा । ३६५ ।  
ॐ ह्रीं याज्यश्रुतये नमः स्वाहा । ३६६ । ॐ ह्रीं सुश्रुते नमः स्वाहा । ३६७ । ॐ ह्रीं महाश्रुतये  
नमः स्वाहा । ३६८ । ॐ ह्रीं वर्मश्रुतये नमः स्वाहा । ३६९ । ॐ ह्रीं श्रुतिपतये नमः स्वाहा । ३७० ।  
ॐ ह्रीं श्रुत्युद्धर्त्रे नमः स्वाहा । ३७१ । ॐ ह्रीं ध्रुवश्रुतये नमः स्वाहा । ३७२ । ॐ ह्रीं निर्वाणमार्गदेशे  
नमः स्वाहा । ३७३ । ॐ ह्रीं मार्गदेशकाय नमः स्वाहा । ३७४ । ॐ ह्रीं सर्वमार्गदेशे नमः स्वाहा ।  
। ३७५ । ॐ ह्रीं सारस्वतपथाय नमः स्वाहा । ३७६ । ॐ ह्रीं तीर्थपरमोत्तमतीर्थकृते नमः स्वाहा । ३७७ ।  
ॐ ह्रीं देष्ट्रे नमः स्वाहा । ३७८ । ॐ ह्रीं वाग्मीश्वराय नमः स्वाहा । ३७९ । ॐ ह्रीं धर्मशासकाय  
नमः स्वाहा । ३८० । ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः स्वाहा । ३८१ । ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः स्वाहा । ३८२ ।  
ॐ ह्रीं त्रयीनाथाय नमः स्वाहा । ३८३ । ॐ ह्रीं त्रिभंगीशाय नमः स्वाहा । ३८४ । ॐ ह्रीं गिरापतये  
नमः स्वाहा । ३८५ । ॐ ह्रीं सिद्धाज्ञाय नमः स्वाहा । ३८६ । ॐ ह्रीं सिद्धवाचे नमः स्वाहा । ३८७ ।  
ॐ ह्रीं आज्ञासिद्धाय नमः स्वाहा । ३८८ । ॐ ह्रीं सिद्धैकशासनाय नमः स्वाहा । ३८९ । ॐ ह्रीं जगत्प्रसि-  
द्धसिद्धान्ताय नमः स्वाहा । ३९० । ॐ ह्रीं सिद्धमंत्राय नमः स्वाहा । ३९१ । ॐ ह्रीं सुसिद्धवाचे नमः  
स्वाहा । ३९२ । ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नमः स्वाहा । ३९३ । ॐ ह्रीं निरुक्तये नमः स्वाहा । ३९४ । ॐ  
ह्रीं तत्रकृते नमः स्वाहा । ३९५ । ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते नमः स्वाहा । ३९६ । ॐ ह्रीं महिषवाचे नमः



शिव-मन्त्र

ॐ

महेश्वर-मन्त्रः

म्याहा । ३९७ । ॐ ही महानादाय नमः स्वाहा । ३९८ । ॐ ही कवीन्द्राय नमः स्वाहा । ३९९ ।  
ॐ ही वृन्दुभिस्वनाय नमः स्वाहा । ४०० ।

ॐ ही नाट्या(न्ना)य नमः स्वाहा । ४०१ । ॐ ही पतये नमः म्याहा । ४०२ । ॐ ही  
परिवृढाय नमः म्याहा । ४०३ । ॐ ही स्वामिने नमः स्वाहा । ४०४ । ॐ ही भर्ते नमः स्वाहा  
। ४०५ । ॐ ही विभने नमः स्वाहा । ४०६ । ॐ ही प्रभवे नमः स्वाहा । ४०७ । ॐ ही ईश्वराय नमः  
म्याहा । ४०८ । ॐ ही अभीश्वराय नमः स्वाहा । ४०९ । ॐ ही अभीशाय नमः स्वाहा । ४१० ।  
ॐ ही अभीशानाय नमः म्याहा । ४११ । ॐ ही अभीशिन्ने नमः स्वाहा । ४१२ । ॐ ही ईशिन्ने नमः  
म्याहा । ४१३ । ॐ ही ईशाय नमः म्याहा । ४१४ । ॐ ही अधिपतये नमः स्वाहा । ४१५ । ॐ ही  
ईशानाय नमः म्याहा । ४१६ । ॐ ही इनाय नमः म्याहा । ४१७ । ॐ ही इन्द्राय नमः स्वाहा  
। ४१८ । ॐ ही अधिपाय नमः म्याहा । ४१९ । ॐ ही अधिभुवे नमः म्याहा । ४२० । ॐ ही  
महेत्तराय नमः म्याहा । ४२१ । ॐ ही महेशानाय नमः स्वाहा । ४२२ । ॐ ही महेशाय नमः म्याहा  
। ४२३ । ॐ ही परमेशिन्ने नमः स्वाहा । ४२४ । ॐ ही अधिदेवाय नमः म्याहा । ४२५ । ॐ ही  
महादेवाय नमः म्याहा । ४२६ । ॐ ही देवाय नमः स्वाहा । ४२७ । ॐ ही त्रिभुवनेश्वराय नमः म्याहा  
। ४२८ । ॐ ही त्रिमैत्राय नमः म्याहा । ४२९ । ॐ ही विश्वभूतेशाय नमः स्वाहा । ४३० ।  
ॐ ही त्रिमैत्रे नमः म्याहा । ४३१ । ॐ ही विश्वेश्वराय नमः स्वाहा । ४३२ । ॐ ही अधिराजे  
नमः म्याहा । ४३३ । ॐ ही लोकेश्वराय नमः म्याहा । ४३४ । ॐ ही लोकोपतये नमः म्याहा



४३५ । ॐ हीं लोकनाथाय नमः स्वाहा । ४३६ । ॐ हीं जगत्पतये नमः स्वाहा । ४३७ । ॐ हीं त्रैलोक्यनाथाय नमः स्वाहा । ४३८ । ॐ हीं लोकेशाय नमः स्वाहा । ४३९ । ॐ हीं जगन्नाथाय नमः स्वाहा । ४४० । ॐ हीं जगत्प्रभवे नमः स्वाहा । ४४१ । ॐ हीं पित्रे नमः स्वाहा । ४४२ । ॐ हीं पराय नमः स्वाहा । ४४३ । ॐ हीं परतराय नमः स्वाहा । ४४४ । ॐ हीं जेत्रे नमः स्वाहा । ४४५ । ॐ हीं जिष्णवे नमः स्वाहा । ४४६ । ॐ हीं अनीश्वराय नमः स्वाहा । ४४७ । ॐ हीं कर्त्रे नमः स्वाहा । ४४८ । ॐ हीं प्रभूष्णवे नमः स्वाहा । ४४९ । ॐ हीं भ्राजिष्णवे नमः स्वाहा । ४५० । ॐ हीं प्रभ-  
 विष्णवे नमः स्वाहा । ४५१ । ॐ हीं स्वयंप्रभवे नमः स्वाहा । ४५२ । ॐ हीं लोकजिते नमः स्वाहा । ४५३ । ॐ हीं विश्वजिते नमः स्वाहा । ४५४ । ॐ हीं विश्वविजेत्रे नमः स्वाहा । ४५५ । ॐ हीं विश्वजित्वराय नमः स्वाहा । ४५६ । ॐ हीं जगज्जेत्रे नमः स्वाहा । ४५७ । ॐ हीं जगज्जेत्राय नमः स्वाहा । ४५८ । ॐ हीं जगज्जिष्णवे नमः स्वाहा । ४५९ । ॐ हीं जगज्जयिने नमः स्वाहा । ४६० । ॐ हीं अग्रण्यै नमः स्वाहा । ४६१ । ॐ हीं ग्रामण्यै नमः स्वाहा । ४६२ । ॐ हीं नेत्रे नमः स्वाहा । ४६३ । ॐ हीं भूर्भुवःस्वरर्धाश्वराय नमः स्वाहा । ४६४ । ॐ हीं धर्मनायकाय नमः स्वाहा । ४६५ । ॐ हीं ऋद्धीशाय नमः स्वाहा । ४६६ । ॐ हीं भूतनाथाय नमः स्वाहा । ४६७ । ॐ हीं भूतभृते नमः स्वाहा । ४६८ । ॐ हीं गतये<sup>१</sup> नमः स्वाहा । ४६९ । ॐ हीं पात्रे<sup>२</sup> नमः स्वाहा । ४७० । ॐ हीं वृषाय नमः

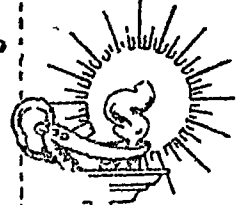
१—ग्राम-सिद्धसमूह नमतीति ग्रामणीः । २—गमन, जानमात्र, सर्वेषामर्तिहरणसमर्थो वा गतिः ।  
 आविष्टलिंग गतिः—शरणम् । ३—पानि-रक्षतिदु खातिपाता तस्मै ।



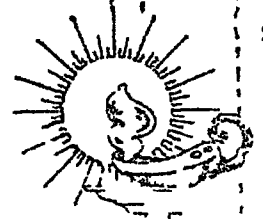


# सिद्ध चक्र हीं मंडलविधान

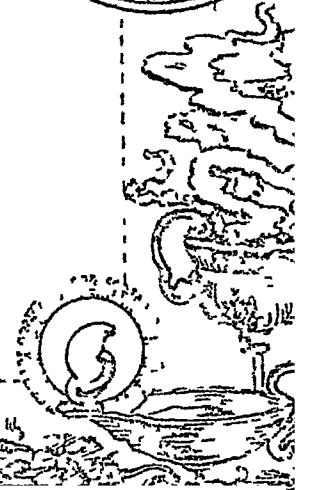
५०



साम्यारोहणतत्पराय नमः स्वाहा । ५०३ । ॐ हीं सामायिकिने नमः स्वाहा । ५०४ । ॐ हीं सामायिकाय नमः स्वाहा । ५०५ । ॐ हीं निःप्रमादाय नमः स्वाहा । ५०६ । ॐ हीं अप्रतिक्रमाय नमः स्वाहा । ५०७ । ॐ हीं यमाय नमः स्वाहा । ५०८ । ॐ हीं प्रधाननियमाय नमः स्वाहा । ५०९ । ॐ हीं स्वभ्यस्तपरमासनाय नमः स्वाहा । ५१० । ॐ हीं प्राणायामचरणाय नमः स्वाहा । ५११ । ॐ हीं सिद्ध-प्रत्याहाराय नमः स्वाहा । ५१२ । ॐ हीं जितेन्द्रियाय नमः स्वाहा । ५१३ । ॐ हीं वारणावीद्वराय नमः स्वाहा । ५१४ । ॐ हीं धर्मध्याननिष्ठाय नमः स्वाहा । ५१५ । ॐ हीं समाधिराजे नमः स्वाहा । ५१६ । ॐ हीं स्फुरत्समरसीभावाय नमः स्वाहा । ५१७ । ॐ हीं एकिने नमः स्वाहा । ५१८ । ॐ हीं करणनायकाय नमः स्वाहा । ५१९ । ॐ हीं निर्ग्रन्थनाथाय नमः स्वाहा । ५२० । ॐ हीं योगीन्द्राय नमः स्वाहा । ५२१ । ॐ हीं ऋषये नमः स्वाहा । ५२२ । ॐ हीं साधवे नमः स्वाहा । ५२३ । ॐ हीं यतये नमः स्वाहा । ५२४ । ॐ हीं मुनये नमः स्वाहा । ५२५ । ॐ हीं महर्षये नमः स्वाहा । ५२६ । ॐ हीं साधुधौरैयाय नमः स्वाहा । ५२७ । ॐ हीं यतिनाथाय नमः स्वाहा । ५२८ । ॐ हीं मुनीश्वराय नमः स्वाहा । ५२९ । ॐ हीं महामुनये नमः स्वाहा । ५३० । ॐ हीं महामौनिने नमः स्वाहा । ५३१ । ॐ हीं महाध्यानिने नमः स्वाहा । ५३२ । ॐ हीं महाव्रतिने नमः स्वाहा । ५३३ । ॐ हीं महान्नामाय नमः स्वाहा । ५३४ । ॐ हीं महाशीलाय नमः स्वाहा । ५३५ । ॐ हीं महाशान्ताय नमः स्वाहा । ५३६ । ॐ हीं महादमाय नमः स्वाहा । ५३७ । ॐ हीं निर्लेपाय नमः स्वाहा । ५३८ । ॐ हीं

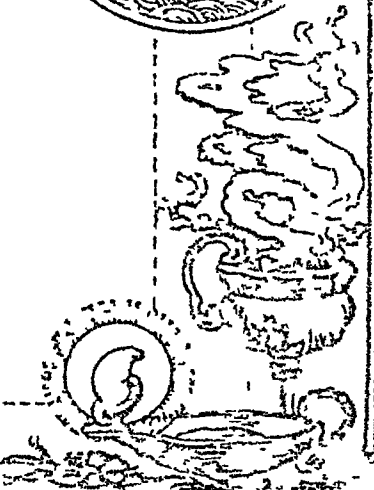
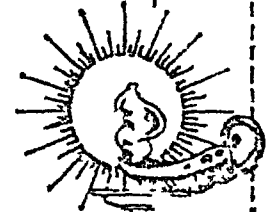
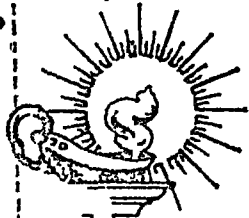


१—हस्तलिखित कापीमें 'चणाय' ऐसा पाठ है ।



निर्भ्रमस्यान्ताय नमः स्वाहा । ५३९ । ॐ ह्रीं धर्माव्यक्ताय नमः स्वाहा । ५४० । ॐ ह्रीं दयाव्यजाय नमः स्वाहा । ५४१ । ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनिने नमः स्वाहा । ५४२ । ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः स्वाहा । ५४३ । ॐ ह्रीं ब्रह्मज्ञाय नमः स्वाहा । ५४४ । ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वविदे नमः स्वाहा । ५४५ । ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः स्वाहा । ५४६ । ॐ ह्रीं ज्ञातकाय नमः स्वाहा । ५४७ । ॐ ह्रीं दान्ताय नमः स्वाहा । ५४८ । ॐ ह्रीं भद्रान्ताय नमः स्वाहा । ५४९ । ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः स्वाहा । ५५० । ॐ ह्रीं धर्मवृक्षायुधाय नमः स्वाहा । ५५१ । ॐ ह्रीं अन्नोभ्याय नमः स्वाहा । ५५२ । ॐ ह्रीं प्रपूतात्मने नमः स्वाहा । ५५३ । ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः स्वाहा । ५५४ । ॐ ह्रीं मंत्रमूर्त्तये नमः स्वाहा । ५५५ । ॐ ह्रीं स्वस्रीभ्यात्मने नमः स्वाहा । ५५६ । ॐ ह्रीं स्वतंत्राय नमः स्वाहा । ५५७ । ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नमः स्वाहा । ५५८ । ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः स्वाहा । ५५९ । ॐ ह्रीं गुणाभोधये नमः स्वाहा । ५६० । ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यविरोधकाय नमः स्वाहा । ५६१ । ॐ ह्रीं सुसवृत्ताय नमः स्वाहा । ५६२ । ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः स्वाहा । ५६३ । ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः स्वाहा । ५६४ । ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय नमः स्वाहा । ५६५ । ॐ ह्रीं महोदकाय नमः स्वाहा । ५६६ । ॐ ह्रीं महोपायाय नमः स्वाहा । ५६७ । ॐ ह्रीं जगदेकपितामहाय नमः स्वाहा । ५६८ । ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः स्वाहा । ५६९ । ॐ ह्रीं गुण्याय नमः स्वाहा । ५७० । ॐ ह्रीं महाह्मेगाकुशाय नमः स्वाहा । ५७१ । ॐ ह्रीं शुचये नमः स्वाहा । ५७२ । ॐ ह्रीं अरिजयाय नमः स्वाहा । ५७३ । ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः स्वाहा । ५७४ । ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः स्वाहा । ५७५ । ॐ ह्रीं सदाधृतये नमः स्वाहा । ५७६ । ॐ ह्रीं परमोदासिन्ने

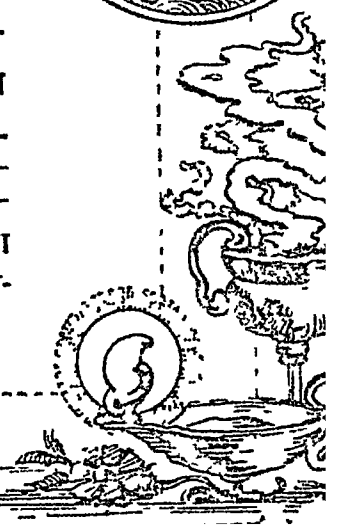
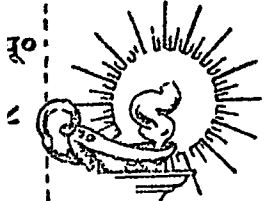
पू०



नमः स्वाहा । ५७७ । ॐ ह्रीं अनायुषे नमः स्वाहा । ५७८ । ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः स्वाहा । ५७९ ।  
 ॐ ह्रीं शातनायकाय नमः स्वाहा । ५८० । ॐ ह्रीं अपूर्ववैद्याय नमः स्वाहा । ५८१ । ॐ ह्रीं योगज्ञाय  
 नमः स्वाहा । ५८२ । ॐ ह्रीं धर्ममूर्तये नमः स्वाहा । ५८३ । ॐ ह्रीं अधर्मदहे नमः स्वाहा । ५८४ ।  
 ॐ ह्रीं ब्रह्मेशे नमः स्वाहा । ५८५ । ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः स्वाहा । ५८६ । ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः  
 स्वाहा । ५८७ । ॐ ह्रीं कृतकृतये नमः स्वाहा । ५८८ । ॐ ह्रीं गुणाकराय नमः स्वाहा । ५८९ । ॐ ह्रीं  
 गुणोच्छेदिने नमः स्वाहा । ५९० । ॐ ह्रीं निर्निषाय नमः स्वाहा । ५९१ । ॐ ह्रीं निराश्रयाय नमः  
 स्वाहा । ५९२ । ॐ ह्रीं सूरये नमः स्वाहा । ५९३ । ॐ ह्रीं सुनयतत्वज्ञाय नमः स्वाहा । ५९४ । ॐ  
 ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः स्वाहा । ५९५ । ॐ ह्रीं शमिने नमः स्वाहा । ५९६ । ॐ ह्रीं प्रक्षीणबन्धाय  
 नमः स्वाहा । ५९७ । ॐ ह्रीं निर्द्वन्दाय नमः स्वाहा । ५९८ । ॐ ह्रीं परमर्षये नमः स्वाहा । ५९९ ।  
 ॐ ह्रीं अनन्तगाय नमः स्वाहा । ६०० ।

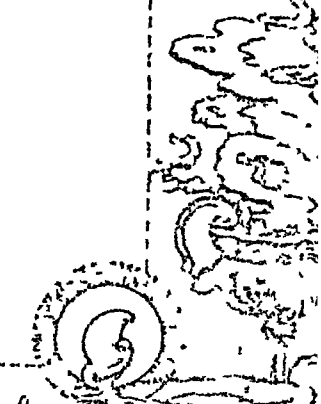
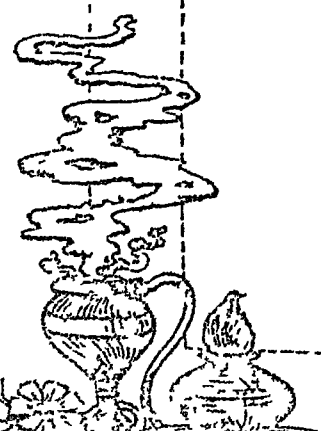
ॐ ह्रीं निर्वाणाय नमः स्वाहा । ६०१ । ॐ ह्रीं सागराय नमः स्वाहा । ६०२ । ॐ ह्रीं महा-  
 साधवे नमः स्वाहा । ६०३ । ॐ ह्रीं विमलामायै नमः स्वाहा । ६०४ । ॐ ह्रीं शुद्धाभाय नमः स्वाहा  
 । ६०५ । ॐ ह्रीं श्रीधराय नमः स्वाहा । ६०६ । ॐ ह्रीं दत्ताय नमः स्वाहा । ६०७ । ॐ ह्रीं अमला-

१—सुखीभूतः, कामवाणरहितः, आयुधरहितः, निश्चितो वन एव निवासोपस्थ स जिनकल्पित्वात् । २—सा-  
 लक्ष्मी गरः विषसदृशी यस्य, सगरो घरणेन्द्रस्तेनोत्सगे वृत्तः, सया लक्ष्म्योपलक्षितोऽगः—मेरुस्तीराति गृह्णाति, सागा  
 दरिद्रास्तान् राति । ३—विमला—कर्ममलरहिता आभा यस्य, वि-विशिष्टा मा-लक्ष्मीर्यत्र स एवंभूतो लाभोयस्य, उपराग-  
 रहिता आ समंतात् मा-दीप्तिर्यस्य स ।



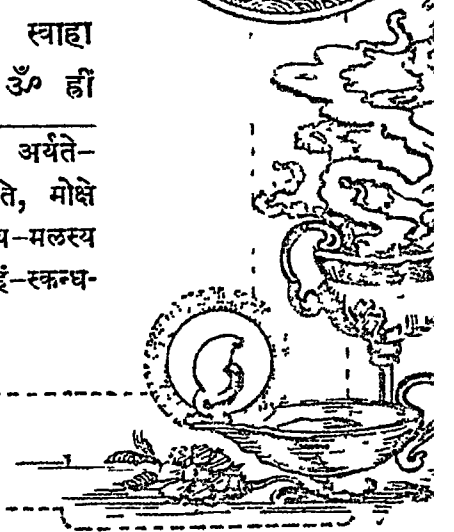
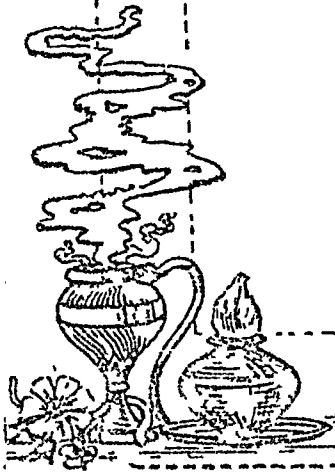
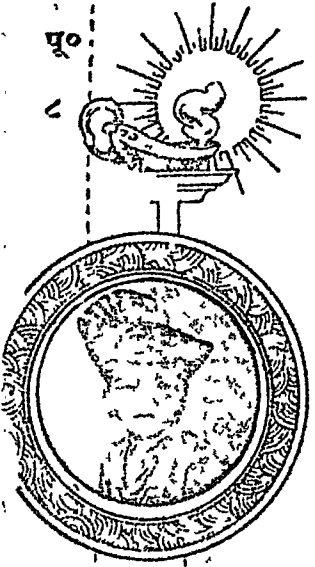
मौय नमः स्वाहा । ६०८ । ॐ ह्रीं उद्धराय नमः स्वाहा । ६०९ । ॐ ह्रीं अग्रये नमः स्वाहा । ६१० ।  
 ॐ ह्रीं संयमाय नमः स्वाहा । ६११ । ॐ ह्रीं शिवाय नमः स्वाहा । ६१२ । ॐ ह्रीं पुष्पाजलये नमः स्वाहा  
 । ६१३ । ॐ ह्रीं शिवगणाय नमः स्वाहा । ६१४ । ॐ ह्रीं उत्साहाय नमः स्वाहा । ६१५ । ॐ ह्रीं  
 ज्ञानसंज्ञकाय नमः स्वाहा । ६१६ । ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः स्वाहा । ६१७ । ॐ ह्रीं विमलेशाय नमः  
 स्वाहा । ६१८ । ॐ ह्रीं यशोधराय नमः स्वाहा । ६१९ । ॐ ह्रीं कृष्णार्थे नमः स्वाहा । ६२० । ॐ ह्रीं  
 ज्ञानमतये नमः स्वाहा । ६२१ । ॐ ह्रीं शुद्धमतये नमः स्वाहा । ६२२ । ॐ श्रीभद्राय नमः स्वाहा  
 । ६२३ । ॐ ह्रीं शान्ताय नमः स्वाहा । ६२४ । ॐ ह्रीं वृषभाय नमः स्वाहा । ६२५ । ॐ ह्रीं  
 अजिताय नमः स्वाहा । ६२६ । ॐ ह्रीं सभवाय नमः स्वाहा । ६२७ । ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय नमः स्वाहा  
 । ६२८ । ॐ ह्रीं सुमतये नमः स्वाहा । ६२९ । ॐ ह्रीं पद्मप्रभाय नमः स्वाहा । ६३० । ॐ ह्रीं  
 सुपाश्र्वाय नमः स्वाहा । ६३१ । ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभाय नमः स्वाहा । ६३२ । ॐ ह्रीं पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा  
 । ६३३ । ॐ ह्रीं शीतलाय नमः स्वाहा । ६३४ । ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः स्वाहा । ६३५ । ॐ ह्रीं वासु-  
 पूत्र्याय नमः स्वाहा । ६३६ । ॐ ह्रीं विमलाय नमः स्वाहा । ६३७ । ॐ ह्रीं अनन्तजिते नमः स्वाहा

१—अविद्यमानः मलस्य-पापस्याभा-अगोपियस्य, अमा दीनास्तेषां लाभो यन्मात्, अमान्-निग्रहान्  
 मूर्धानलाति-स्वीकुरुवन्ति तैर्गणधरैर्योयानि-शोभते । २—अगनि-ऊर्ध्वं व्रजतीति अग्निः । ३—पुष्पावत्-रुमलवत् अजन्तिः-  
 इन्द्रादीनां कर्गसपुटो य प्रति स, पुष्पाणां भजलय. यन्मिन्-द्वादशयोजनप्रमाणपुष्पवृष्टिः । ४—रुपेति-यानिकर्माणि  
 नूलादुन्मूलयति । ५— स-समीचीनो भवो-जन्म यस्य, अभव इत्यपि पाठस्तत्र स-सुखभवति यन्मात् इति । ६—यो-  
 मत्र ॐ ह्रीं श्री वासुपूत्र्याय नमः इति मंत्रेण सुदु पृथ्यः ।



। ६३८ । ॐ ह्रीं अर्माय नमः स्वाहा । ६३९ । ॐ ह्रीं शातये नमः स्वाहा । ६४० । ॐ ह्रीं कुंभये नमः स्वाहा । ६४१ । ॐ ह्रीं अर्याय नमः स्वाहा । ६४२ । ॐ ह्रीं मैल्लये नमः स्वाहा । ६४३ । ॐ ह्रीं सुव्रताय नमः स्वाहा । ६४४ । ॐ ह्रीं नैमये नमः स्वाहा । ६४५ । ॐ ह्रीं नेमये नमः स्वाहा । ६४६ । ॐ ह्रीं पार्श्वाय नमः स्वाहा । ६४७ । ॐ ह्रीं बर्धमानाय नमः स्वाहा । ६४८ । ॐ ह्रीं महावीराय नमः स्वाहा । ६४९ । ॐ ह्रीं वीराय नमः स्वाहा । ६५० । ॐ ह्रीं सन्मतये नमः स्वाहा । ६५१ । ॐ ह्रीं महेंतिमहावीराय नमः स्वाहा । ६५२ । ॐ ह्रीं महापद्माय नमः स्वाहा । ६५३ । ॐ ह्रीं सूर्यदेवाय नमः स्वाहा । ६५४ । ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः स्वाहा । ६५५ । ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः स्वाहा । ६५६ । ॐ ह्रीं सर्वायुवाय नमः स्वाहा । ६५७ । ॐ ह्रीं जयदेवाय नमः स्वाहा । ६५८ । ॐ ह्रीं उदयदेवाय नमः स्वाहा । ६५९ । ॐ ह्रीं प्रभादेवाय नमः स्वाहा । ६६० । ॐ ह्रीं उदंकाय नमः स्वाहा । ६६१ । ॐ ह्रीं प्रश्नकीर्तये नमः स्वाहा । ६६२ । ॐ ह्रीं जयाय नमः स्वाहा । ६६३ । ॐ ह्रीं पूर्णबुद्धये नमः स्वाहा । ६६४ । ॐ ह्रीं निःकषायाय नमः स्वाहा । ६६५ । ॐ ह्रीं विमलप्रभाय नमः स्वाहा । ६६६ । ॐ ह्रीं बहूलाय नमः स्वाहा । ६६७ । ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः स्वाहा । ६६८ । ॐ ह्रीं

१—कुंथति—तपः करोतीति कुथु । २ अरति—लोकालोक जानाति इयति—त्रैलोक्यशिखरमारुहतीति, अर्यते—मोक्षार्थिभिः प्राग्यते इतिवाअर । धर्मरथप्रवृत्तिहेतुत्वादरद्वचक्रागभृतोवा । ३—मल्लते—भव्यजीवान् धारयति, मोक्षे स्थापयतीतिवा मल्लिः । देवेन्द्रादिभिर्मल्लयते—धार्यते इतिवा । ४—नम्यते देवेन्द्राभिरिति नमिः । ५—मस्य—मलस्य पापस्य वा हतिर्विध्वंसनतत्र महावीर—महासुभटः । ६—सुराणा देवः आराध्यः । शूरदेव इत्यपि पाठः । ७—बहू—स्कन्ध-देगंलाति—ददाति इतिवहलः—सयममारोद्धरणे शक्तः । बहति—मोक्ष प्रापयति इतिवा ।



चित्रगुप्ताय नमः स्वाहा । ६६९ । ॐ ह्रीं समाधिगुप्ताय नमः स्वाहा । ६७० । ॐ ह्रीं स्वयमुवे नमः स्वाहा । ६७१ । ॐ ह्रीं कन्दर्पाय नमः स्वाहा । ६७२ । ॐ ह्रीं जयनाथाय नमः स्वाहा । ६७३ । ॐ ह्रीं श्रीविमलाय नमः स्वाहा । ६७४ । ॐ ह्रीं दिव्यवादाय नमः स्वाहा । ६७५ । ॐ ह्रीं अनन्तवीराय नमः स्वाहा । ६७६ । ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः स्वाहा । ६७७ । ॐ ह्रीं सुविद्ये नमः स्वाहा । ६७८ । ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय नमः स्वाहा । ६७९ । ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः स्वाहा । ६८० । ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः स्वाहा । ६८१ । ॐ ह्रीं धर्मसारथ्ये नमः स्वाहा । ६८२ । ॐ ह्रीं शिवकीर्तनाय नमः स्वाहा । ६८३ । ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः स्वाहा । ६८४ । ॐ ह्रीं अक्षराय नमः स्वाहा । ६८५ । ॐ ह्रीं अच्छन्ने नमः स्वाहा । ६८६ । ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः स्वाहा । ६८७ । ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नमः स्वाहा । ६८८ । ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः स्वाहा । ६८९ । ॐ ह्रीं निरातकाय नमः स्वाहा । ६९० । ॐ ह्रीं निरारेकाय नमः स्वाहा । ६९१ । ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः स्वाहा । ६९२ । ॐ ह्रीं इष्टव्रताय नमः स्वाहा । ६९३ ।

१—चित्रवत्—आकाशवत् गुप्तः—अलक्ष्यः । चित्राः—विचित्राः—मुनीनामथाश्चर्यकारिण्योगुप्तयो यस्य सा । चित्रं—तिलकदान प्रतिष्ठावसरे गुप्त—गुरूपदेशप्राप्त्यं यस्य स, चित्रा आश्चर्यकरा गुप्तयः सवसरणेचित्रः प्राकारा यस्य स इति वा । २—दिव्यः—अमानुषः वादो—व्यनिर्यस्य, दिव्या—देवानामपि वा—वेदना अति-खण्डयति, दिव्यं वा मंत्रंददाति-इति वा दिव्यवादः । ३—युर्महान् देवानामप्याराध्यो देवः, पुरवः—प्रचुरा देवा यस्य—असख्यातदेवसेवितः, पुरोः—स्वर्गस्यदेवः इति वा । ४—धर्मस्याहिंसालक्षणस्य सारथिः—प्रवर्तकः, धर्माणा मध्ये सारः—उत्कृष्टस्तत्र तिष्ठति स्थाघातोः मकारलोपः कि प्रत्ययश्च । ५—विश्वं कृच्छ्र कष्टमेव कर्म यस्य मते, विश्वेषु—देवविशेषेषु कर्म—सेवा यस्य, विश्वस्मिन्—कर्म—लोकजीवनकरी क्रिया यस्येति वा । ६—विश्वस्मिन्भवति—विश्वभूः । “ सत्ताया मगले वृद्धौ निवासे व्याप्तिसंपदोः । अभिप्राये च शक्तौच प्रादुर्भावे गती च भूः ”

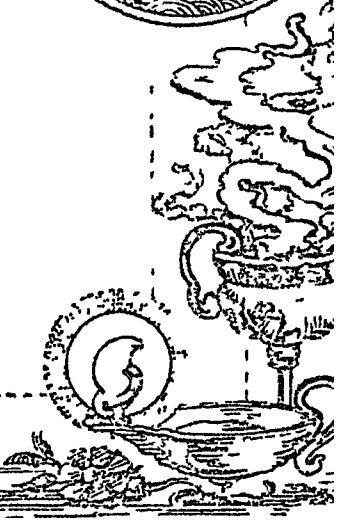
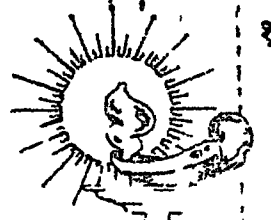
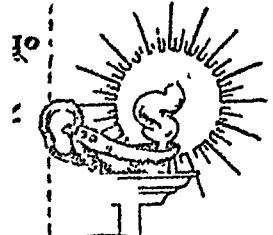




ॐ ह्रीं नयोतुंगाय नमः स्वाहा । ६९४ । ॐ ह्रीं निःकलंकाय नमः स्वाहा । ६०५ । ॐ ह्रीं अकलावराय  
नमः स्वाहा । ६९६ । ॐ ह्रीं सर्वकेशापहाय नमः स्वाहा । ६९७ । ॐ ह्रीं अक्षय्याय नमः स्वाहाः  
। ६९८ । ॐ ह्रीं ज्ञान्ताय नमः स्वाहा । ७९९ । ॐ ह्रीं श्रीवृत्तलक्षणाय नमः स्वाहा । ७०० ।

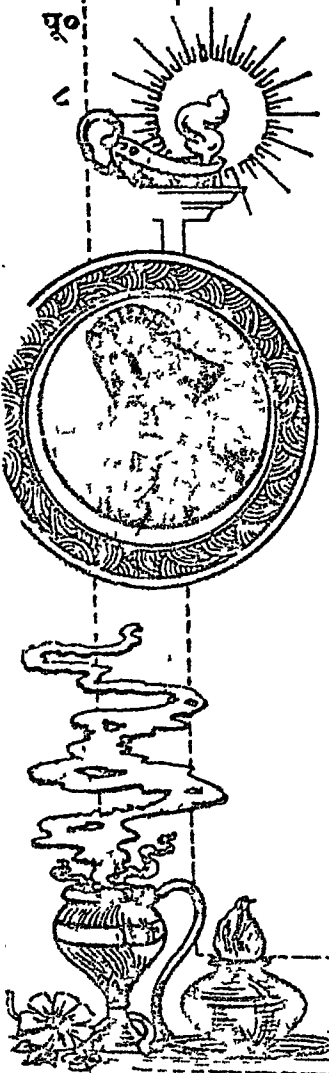
ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः स्वाहा । ७०१ । ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः स्वाहा । ७०२ । ॐ ह्रीं धात्रे  
नमः स्वाहा । ७०३ । ॐ ह्रीं विधात्रे नमः स्वाहा । ७०४ । ॐ ह्रीं कमलासनाय नमः स्वाहा । ७०५ ।  
ॐ ह्रीं अब्जभुवे नमः स्वाहा । ७०६ । ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः स्वाहा । ७०७ । ॐ ह्रीं स्रष्ट्रे नमः स्वाहा  
। ७०८ । ॐ ह्रीं सुरज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ७०९ । ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः स्वाहा । ७१० । ॐ ह्रीं  
हिरण्यगर्भाय नमः स्वाहा । ७११ । ॐ ह्रीं वेदज्ञाय नमः स्वाहा । ७१२ । ॐ ह्रीं वेदागाय नमः स्वाहा  
। ७१३ । ॐ ह्रीं वेदपारगाय नमः स्वाहा । ७१४ । ॐ ह्रीं अजाय नमः स्वाहा । ७१५ । ॐ ह्रीं मनवे  
नमः स्वाहा । ७१६ । ॐ ह्रीं शतानन्दाय नमः स्वाहा । ७१७ । ॐ ह्रीं हंसयानाय नमः स्वाहा । ७१८ ।  
ॐ ह्रीं त्रयीमयाय नमः स्वाहा । ७१९ । ॐ ह्रीं विष्णावे नमः स्वाहा । ७२० । ॐ ह्रीं त्रिविक्रमाय नमः

१—न कला धारयति—केनापि य कलयितु न शक्यः । अक—दुःख लाति—ददाति=अकलः—ससार त न भरति  
अकलः—ससारो—अधरो नीचो यस्य, न कल—शरीरम् आ समतात् धरति, न कला—चन्द्रकला शिरसि धरति । २—अब्जैः—  
कमलैरुपलक्षिता भू—जन्म भूमिर्यस्य, मातुरुदरे योनिमायस्पृष्ट्वा अष्टदलकमलकर्णिकाया नवमासान् स्थित्वा वृद्धिगत इति  
अब्जभू, अब्जस्य,—चन्द्रस्य भू—सेवास्थान, अब्जस्य—धन्वन्तरे भूः स्थानमायुर्वेदगुरुत्वात् । ३—हसे—परमात्मनि  
यान—गमन यस्य, हसैः—श्रेष्ठैः सह यान-विहारो यस्य, हंसः—श्रेष्ठं यानं यस्य, हंसः सूर्यस्तादृत् यान विहारो यस्य, हंसवत्—मद  
गमन यस्य ।



स्वाहा । ७२१ । ॐ ह्रीं सौरये नमः स्वाहा । ७२२ । ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः स्वाहा । ७२३ । ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय नमः स्वाहा । ७२४ । ॐ ह्रीं वैकुण्ठाय नमः स्वाहा । ७२५ । ॐ ह्रीं पुंडरीकाक्षाय नमः स्वाहा । ७२६ । ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः स्वाहा । ७२७ । ॐ ह्रीं हरये नमः स्वाहा । ७२८ । ॐ ह्रीं स्वमुने नमः स्वाहा । ७२९ । ॐ ह्रीं विश्वंभराय नमः स्वाहा । ७३० । ॐ ह्रीं असुरध्वंसिने नमः स्वाहा । ७३१ । ॐ ह्रीं माधवाय नमः स्वाहा । ७३२ । ॐ ह्रीं बलिवंधनाय नमः स्वाहा । ७३३ । ॐ ह्रीं अश्विनीजाय नमः स्वाहा । ७३४ । ॐ ह्रीं मवुद्रेपिणे नमः स्वाहा । ७३५ । ॐ ह्रीं केशवाय नमः स्वाहा । ७३६ । ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे नमः स्वाहा । ७३७ । ॐ ह्रीं श्रीवत्सलाङ्गनाय नमः स्वाहा । ७३८ । ॐ ह्रीं श्रीमते नमः स्वाहा । ७३९ । ॐ ह्रीं अच्युताय नमः स्वाहा । ७४० । ॐ ह्रीं नरकातकाय नमः स्वाहा । ७४१ । ॐ ह्रीं विश्वंक्षेनाय नमः स्वाहा । ७४२ । ॐ ह्रीं चक्रपाणये नमः स्वाहा । ७४३ । ॐ ह्रीं

१—सूरस्य—सुभटस्य—क्षत्रियस्यापत्य सौरिः । २—विकुण्ठा—तीर्थकरमाता तस्याअस्य, ३—पुंडरीकवत् अक्षिणी यस्य, पुंडरीकः—प्रधानभूत अक्ष आत्मा यस्य । ५—जितेन्द्रियः । ४—असुरोमोहस्तन्मते, अमून्—प्राणान् रानि-युहति असुरोयमस्तं वसते । ६—यस्य मते जीवस्य बलेः—कर्मणः बधन भवतीति प्रतिपादितम् । बलिन—बलवत्तरस्य-त्रैलोक्यक्षोभकारिण तीर्थकरास्योच्चगोत्रकर्मणश्च बंधन यस्य, बलिर्नुपदेयकरस्तस्य बंधन—निर्धारण यस्यावसरे । ७—अक्षज जानमधोमस्य । ८—प्रशस्ताकेशा यस्य केशाद्बोऽन्यतरस्यामिति व प्रत्ययः, के—परमब्रह्मणि ईशते महामुनयस्तेषा वो वासो यत्र । ९—विष्टर इव श्रवसी—रुर्णी यस्य, विस्तरे—सफलश्रुतजाने श्रवसी यस्य । १०—विश्वक-ममंतात् सेना-द्वादशविंशो गणो यस्य, विश्वकूममंतात् मा-लोकत्रयवर्णानी ल्मीस्तस्या इनः । ११—चक्रं—लक्षणविशेष उलक्षणत्वाद्वी-न्दुकुलिशादिनि लक्षणानि च पाणौ यस्य, चक्राणि—चक्ररा राजानस्तेषामणि.सीमा, चक्रपान् अणनि—धर्मापदेश करोति ।



पु०

८

पद्मनाभाय नमः स्वाहा । ७४४ । ॐ ह्रीं जनार्दनाय नमः स्वाहा । ७४५ । ॐ ह्रीं श्रीकंठाय नमः  
स्वाहा । ७४६ । ॐ ह्रीं शकराय नमः स्वाहा । ७४७ । ॐ ह्रीं शंभवे नमः स्वाहा । ७४८ ।  
ॐ ह्रीं कैपालिने नमः स्वाहा । ७४९ । ॐ ह्रीं बृषकेतनाय नमः स्वाहा । ७५० । ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः  
स्वाहा । ७५१ । ॐ ह्रीं विरूपीक्षाय नमः स्वाहा । ७५२ । ॐ ह्रीं वामदेवाय नमः स्वाहा । ७५३ ।  
ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः स्वाहा । ७५४ । ॐ ह्रीं उर्मापतये नमः स्वाहा । ७५५ । ॐ ह्रीं पशुपतये नमः  
स्वाहा । ७५६ । ॐ ह्रीं स्मरारये नमः स्वाहा । ७५७ । ॐ ह्रीं त्रिपुरार्तकाय नमः स्वाहा । ७५८ ।

१—जनान्—जनपदलोकान् अर्दति—सबोधनार्थं गच्छति, जना—भव्या अर्दना मोक्षयाचका यस्य, जनान् अर्द-  
यति—मोक्ष गमयति । २—कम्—आत्मानं पालयति, क—ब्रह्मस्वरूपमात्मानं पाति-रक्षन्ति ससारपतनादितिकपास्तानासमतात्  
लाति—भूषयतीति कपाली । ३—विरूप—सूक्ष्मस्वभावम्—अक्षि—केवलज्ञानलक्षणलोचनं यस्य “सक्थ्यङ्गीस्वागे” इत्यन्  
प्रत्ययः, विशिष्टरूपे—कर्णातविश्राते अक्षिणी यस्य, विरूपः केवलज्ञानगम्यः अक्षि—आत्मा यस्य । विगुरुङ्गस्तस्य रूप, ससार-  
विपनिषेधक एवंभूतोऽक्षि, आत्मा यस्य । ४—वामो—मनोहरो देवः, वामस्य—प्रतिकूलस्य—शत्रोरपि देव आराध्यः, इत्यादि ।  
५—त्रयाणालोकत्रयवर्तिभव्यानां नेत्रस्थानीयः, त्रिपुलोकेषुलोचने—ज्ञानदर्शनरूपे नेत्रे यस्य, जन्मारम्य मतिश्रुतावधिज्ञानानि-  
त्रीणिलोचनानि यस्य, त्रिषु—मनोवचनकायेषु विकरणशुद्धं वा लोचन—केशोत्पाटो यस्य, इत्यादि । ६—उमा—कान्तिः  
कीर्तिश्च अथवा उः—क्षीरसागरो मेरुर्वा तयोर्मा—लक्ष्मीः तस्याःपतिः । ७—पशयन्तिकर्मबन्धनैरिति पशवः ससारिणो  
जीवा वा पशवस्तेषापतिः । ८—तिसृणा—जन्मजरामरणरूपाणां पुरामन्तको—विनाशकः, परमौदारिकतैजसकामर्गशरीराणा-  
मन्तकः, त्रिपुरं—त्रैलोक्यं तस्याते क आत्मा यस्य ।

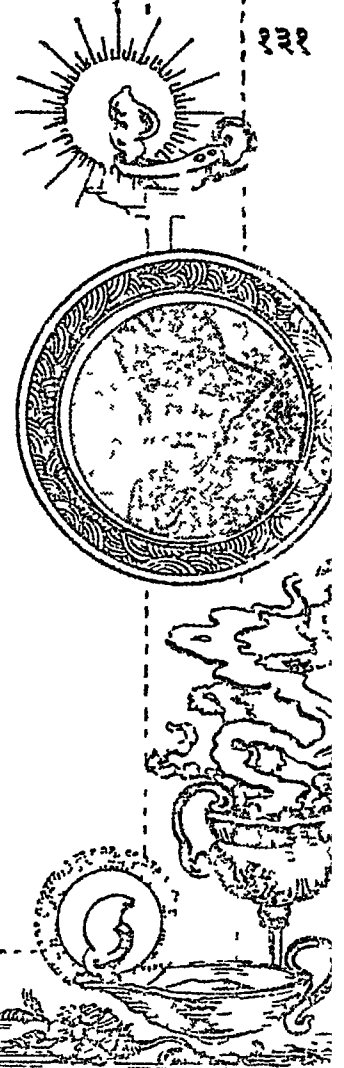
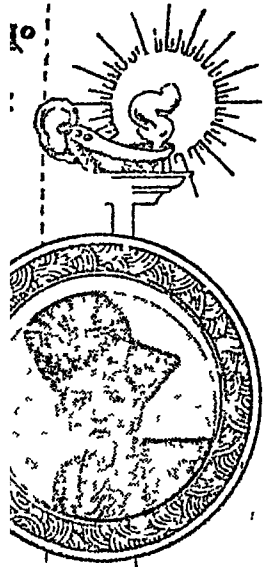


ॐ ह्रीं अर्धनारीश्वराय नमः स्वाहा । ७५९ । ॐ ह्रीं रुद्राय नमः स्वाहा । ७६० । ॐ ह्रीं भवाय नमः स्वाहा । ७६१ । ॐ ह्रीं भर्गाय नमः स्वाहा । ७६२ । ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः स्वाहा । ७६३ । ॐ ह्रीं जगत्कर्त्रे नमः स्वाहा । ७६४ । ॐ ह्रीं अंधकारांतये नमः स्वाहा । ७६५ । ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः स्वाहा । ७६६ । ॐ ह्रीं हूराय नमः स्वाहा । ७६७ । ॐ ह्रीं महासेनाय नमः स्वाहा । ७६८ । ॐ ह्रीं तारकजिते नमः स्वाहा । ७६९ । ॐ ह्रीं गणनाथाय नमः स्वाहा । ७७० । ॐ ह्रीं विनायकाय नमः स्वाहा । ७७१ । ॐ ह्रीं विरोचनाय नमः स्वाहा । ७७२ । ॐ ह्रीं वियद्वन्नाय नमः स्वाहा । ७७३ । ॐ ह्रीं द्वादशान्मने नमः स्वाहा । ७७४ । ॐ ह्रीं विभार्वसूत्रे नमः स्वाहा । ७७५ । ॐ ह्रीं द्विजाराध्याय

१—अर्द्धं न अरयो घातिकर्माणि यस्य सत्तासौ ईश्वरः । २ कर्मणा रौद्रमूर्तित्वाद्रौद्रः, आत्मदर्शने सति रोदिति—आनदाश्रुणिमुचति स । ३—भुज्यंते कामक्रोधादयो येन, विभर्ति—वारयति पोषयतीति वा भर्गः “ स्वसृत्यागः ” इति औणादिकः गप्रत्ययः । ४—सदा—मर्वकालं शिव परमकल्याण यस्य, सदा—दिवा रात्रौ चाद्वन्दति सदाशिनः तेषा वः समुद्रः—संसारः पतनमितिवचन यस्य । ५—जगता कर्ता—मर्यादाकारकः, जगतः कंसुखमियतिजानाति । ६—अंधः—सम्यग्दर्शनरहितः कः स्वरूपं यस्य तत् मोहकर्म तस्यारानिः शत्रुः । ७—अनतभवोशार्जितानिपापानिजीवाना हरति, हं—हर्षमनन्तसुखं हारविशेषं राति—ददाति धारयति वा, हस्य—हिमायाः रः—निरोधकः । ८—महनी—द्वादशलक्षगा सेना यस्य, महस्य—पूजाया आसमंतात् सा—लक्ष्मीस्तस्या इनःत्वामी, महा आस—आसनं तत्र इनः । ९—तारकान्—गणधरादीन् जितयान्, तारमत्युच्चैः शब्द कायति—ध्वनति स मेवोऽथवा सगर्जनः सागरः तान् निजेन ध्वनिना जितवान् । इत्यादि १०—विशिष्टाना गणधरादीना नायकः । विगतोनायको यस्य । ११—विशिष्ट रोचनसम्यक्त्वं यस्य, विशिष्टारोचना—मुक्तिस्त्री यस्य, विगत रोचन ससारप्रीतिर्यस्य । १२—कर्मन्धनदहनत्वादग्निः, मोहाथकारविनाशितत्वर्यः, नैत्रामृतवर्षित्वादिभावसुश्रन्द्रः, केवलज्ञानधन इत्यादि ।

नमः स्वाहा । ७७६ । ॐ ह्रीं बृहद्भानये नमः स्वाहा । ७७७ । ॐ ह्रीं चित्रमानवे' नमः स्वाहा । ७७८ ।  
 ॐ ह्रीं तनूनपाते नमः स्वाहा । ७७९ । ॐ ह्रीं द्विजराजाय नमः स्वाहा । ७८० । ॐ ह्रीं  
 सुवाशोचये नमः स्वाहा । ७८१ । ॐ ह्रीं औपधाशाय नमः ७८२ । ॐ ह्रीं कलानिधये नमः  
 स्वाहा । ७८३ । ॐ ह्रीं नक्षत्रनाथाय नमः स्वाहा । ७८४ । ॐ ह्रीं शुभ्राशवे नमः स्वाहा ।  
 । ७८५ । ॐ ह्रीं सोमोय नमः स्वाहा । ७८६ । ॐ ह्रीं कुमुदत्राधर्वाय नमः स्वाहा । ७८७ । ॐ ह्रीं  
 लेखर्षभाय नमः स्वाहा । ७८८ । ॐ ह्रीं अनिलाय नमः स्वाहा । ७८९ । ॐ ह्रीं पुण्यजनाय नमः  
 स्वाहा । ७९० । ॐ ह्रीं पुण्यजनेश्वराय नमः स्वाहा । ७९१ । ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः स्वाहा । ७९२ ।  
 ॐ ह्रीं भोगिराजाय नमः स्वाहा । ७९३ । ॐ ह्रीं प्रचेतसे नमः स्वाहा । ७९४ । ॐ ह्रीं भूमिर्नन्दनाय

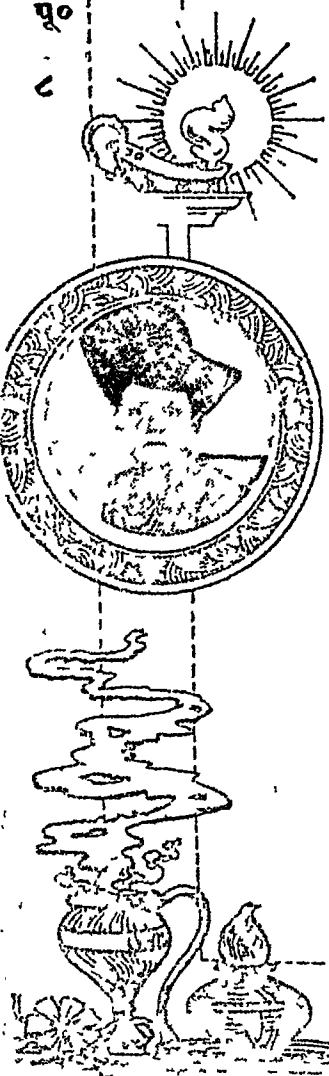
१—बृहत्-महत्तरोभानुः दिन पुण्यं यस्य, इत्यादि । २—आश्चर्यकारिणो मानवः-ज्ञानकिरणा यस्य ।  
 ३—तनू-काय न पातयति-छन्नस्थावस्थायामनुपवासात् केवलजाने जाते तु आहारमगृहीत्वापि न पातयति ।  
 ४—शारीरादिरोगनिवारण समर्थः । दुर्मरणहेतून् श्यति-इति वा । ५—सूतेऽमृतं-मोक्षमिति, सूयते मेरुमस्तकेऽभिषिच्यते  
 इति वा सोमः, सा-लक्ष्मी सरस्वती च ताभ्यामुमा कीर्तिर्यस्य, उमया-कान्त्या सहवर्तमानः सोम इतिवा । ६—भव्यकैर-  
 वाणामुपकारकः, कुपु-तिसृषु पृथिवीषु मुदा हर्षोयेषा ते कुमुदाइन्द्रादयस्तेषामुपकारकः, कुत्सितेकर्मणि मुत् हर्षोयेषाते-  
 षामवाधवः । ७—लेखेसु-देवेषु ऋषभ. श्रेष्ठः ८—न विद्यते इला-भूमिर्यस्य त्यक्तराज्यः तनुवातवलये निराधार स्थायी ।  
 ९—पुण्या जनाः सेवका यस्य, पुण्यजनमयतीतिवा । १०—भोगिनामिन्द्राणाचक्रिणा वा राजा । ११—प्रकृष्टं सर्वेषा-  
 दारिद्र्यादिनाशनपरचेतो यस्य, प्रणष्टचेता-विकल्परहितो वा । १२—भूमी-लोकत्रयवर्तिजनान् नदयति ।



नमः स्वाहा । ७९५ ॐ ह्रीं सिंहीकातनयाय नमः स्वाहा । ७९६ । ॐ ह्रीं छायानन्दनाय नमः स्वाहा । ७९७ । ॐ ह्रीं बृहतापनये नमः स्वाहा । ७९८ । ॐ ह्रीं पूर्वदेवोर्पदेष्टे नमः स्वाहा । ७९९ । ॐ ह्रीं द्विजराजसमुद्रवोय नमः स्वाहा । ८०० ।

ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः स्वाहा । ८०१ ॐ ह्रीं दशवर्लाय नमः स्वाहा । ८०२ । ॐ ह्रीं शांक्र्याय नमः स्वाहा । ८०३ । ॐ ह्रीं पडभिर्ज्ञाय नमः स्वाहा । ८०४ । ॐ ह्रीं तथोगत्याय नमः स्वाहा । ८०५ । ॐ ह्रीं समन्तभद्राय नमः स्वाहा । ८०६ । ॐ ह्रीं सुगताय नमः स्वाहा । ८०७ । ॐ ह्रीं श्रीवनाय नमः स्वाहा । ८०८ । ॐ ह्रीं भूर्तकोटिदिशे नमः स्वाहा । ८०९ । ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः स्वाहा । ८१० ।

१—सिंहिका-तीर्थकर-जननीस्तस्यास्तनय । सिंहिकातनयो गहुरिति वा-गपक्रमसु क्रचित्त्रयात् । २—छाया-शोभा नन्दयति-वर्धयति, अशोक्रतरुच्छायायालोकनन्दयति । ३—बृहता-नरेन्द्रसुरेन्द्रमुनीन्द्राणां पतिः । ४—पूर्वदेवानाम्-असुराणामुपदेष्टा-सङ्केतनिषेधकः, पूर्वैश्वरुर्दशभिः—श्रुतार्थविशेषैरुपदेष्टा, पूर्व-प्रथमदेवानामिन्द्रियाणां मुपदेष्टा—तद्विषय-निवर्तकः, गणधराणामुपदेष्टा इतिवा । ५—द्विजानां राजा च समुत्-सहर्षो भवोजन्म यस्य, द्विजेपुराजन्ते तानि सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र्याणि तेभ्यः समुद्रवो यस्य-रत्नत्रययोनिः—अयोनिमभवः इत्यर्थः । ६—दशानां धर्माणामुत्तमक्षमादीनां बलं यस्य, दः—दया बोधश्चतेन शवलः—समर्थः । ७—अकनोतीति अकः—तीर्थकरपिता तस्यापत्यम्, शम्—अनन्तसुखम् आकः केवलज्ञानतयोर्नियुक्तः । ८—पट्ट-द्रव्यसजान् अभितो जानाति । ९—तथा-सत्यभूतं गतं-ज्ञान यस्य । १०—भूतानां प्राणिनां कोटीः दिशति, भूतानामतीतभवान्तराणां कोटीः दिशति, भूतान्-जीवान् कोटयन्तिकुटिलान् कुर्वन्ति-मिथ्यात्वं कारयन्ति ते जैमिनिकपिलादयस्तान् दिशति, भूतकोटीनां विश्रामस्थानं, भूतानां-जीवानां कोटि-परमप्रकर्षं गुणातिशयं दिशति ।

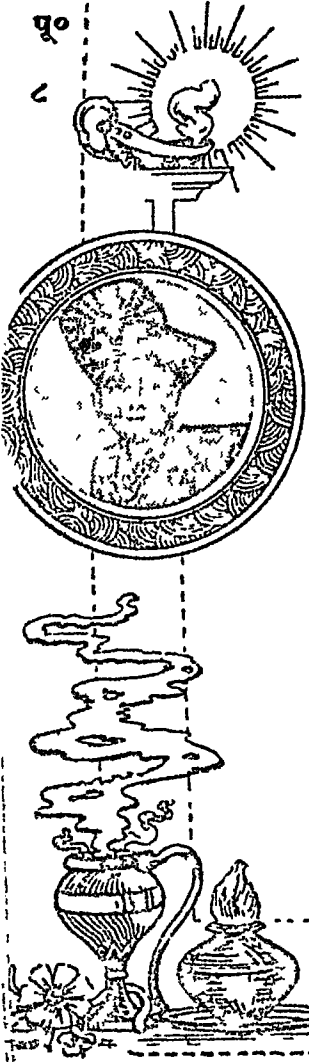


# — (सिद्ध चक्र हा मङ्गलावधान) —

१३३

ॐ ह्रीं मारजिते नमः स्वाहा । ८११ । ॐ ह्रीं शाले नमः स्वाहा । ८१२ । ॐ ह्रीं क्षणिकैकसुलक्षणाय नमः स्वाहा । ८१३ । ॐ ह्रीं बोधिसत्त्वाय नमः स्वाहा । ८१४ । ॐ ह्रीं निर्विकल्पदर्शनाय नमः स्वाहा । ८१५ । ॐ ह्रीं अर्द्धयवादिने नमः स्वाहा । ८१६ । ॐ ह्रीं महाकृपालत्रे नमः स्वाहा । ८१७ । ॐ ह्रीं नैराल्म्यवादिने नमः स्वाहा । ८१८ । ॐ ह्रीं संतानशोसकाय नमः स्वाहा । ८१९ । ॐ ह्रीं सामान्य-लक्षणचरणाय नमः स्वाहा । ८२० । ॐ ह्रीं पंचस्कन्धमयात्मदृशे नमः स्वाहा । ८२१ । ॐ ह्रीं भूतार्थ-भावनासिद्धाय नमः स्वाहा । ८२२ । ॐ ह्रीं चतुर्भूमिकशासनाय नमः स्वाहा । ८२३ । ॐ ह्रीं चतुरार्य सत्यवक्त्रे नमः स्वाहा । ८२४ । ॐ ह्रीं निराश्रयचिते नमः स्वाहा । ८२५ । ॐ ह्रीं अन्वयाय नमः स्वाहा । ८२६ । ॐ ह्रीं योगाय नमः स्वाहा । ८२७ । ॐ ह्रीं वैशेषिकाय नमः स्वाहा । ८२८ । ॐ ह्रीं तुच्छाभावभिदे नमः स्वाहा । ८२९ । ॐ ह्रीं पट्पदार्थदृशे नमः स्वाहा । ८३० । ॐ ह्रीं नैयार्यिकाय नमः

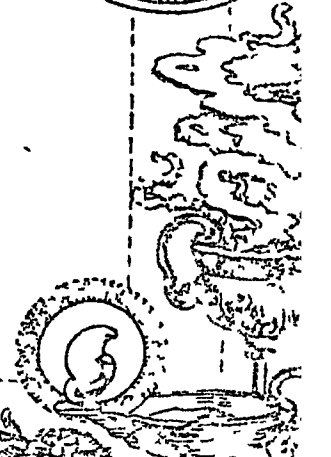
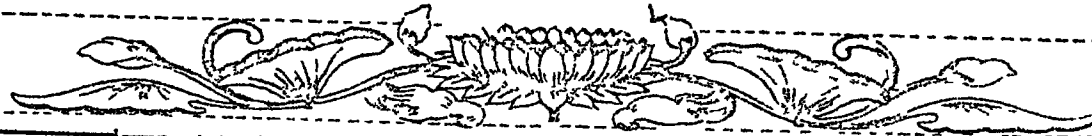
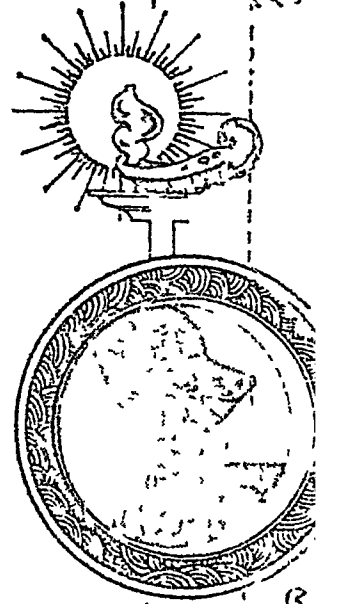
१—सर्वे पदार्था एकस्मिन् क्षणे उत्पादव्ययध्रौवालक्षणेनयुक्ताः क्षणिकाश्च इति मतं यस्य, क्षणिक एकमद्वितीय शोभन लक्षणं यस्येतिवा २—निर्विकल्प दर्शनं यस्य, निर्विकल्पानि दर्शनानि—अपरमतानि यस्य । ३—मोक्षप्राप्तये रागद्वेषयोर्द्वयन वदति, “ब्रह्ममोक्षावितिद्वेषौ कर्मात्मानौ शुभाशुभौ, इति द्वैताश्रिताबुद्धिरसिद्धिरभिधीयते” । ४—नीरस्य-जलस्य भावो नैर-तत्र उपलक्षणात्स्थावरेषु शक्तिरूपतया केवलज्ञानादिलक्षण आत्मास्ति—इति वदतीति । ५—अनादि सतानवान् जीव इति शास्ति । ६—निश्चयनयेन सामान्यलक्षणेचणः—विचक्षणः । ७—अनु-पृष्ठतोलम-अयः पुण्य यस्य । ८—व्यानयोगात् मनोवाक्काययोगाद्वा योगः, याः सूर्यचन्द्रादयः उः-शकर एते य गच्छन्तिइतिवा । ९—विशेषेण-केवलज्ञानेन ( ऐन्द्रियज्ञानस्यसामान्यात्मकत्वात् ) ससृष्टो भगवान् वैशेषिकः । १०-न्याये-स्याद्वादे नियुक्तः ।



स्वाहा । ८३१ । ॐ ह्रीं षोडशार्थवादिने नमः स्वाहा । ८३२ । ॐ ह्रीं पंचार्थवर्णाकार्य नमः स्वाहा । ८३३ । ॐ ह्रीं ज्ञानान्तराव्यक्तबोधाय नमः स्वाहा । ८३४ । ॐ ह्रीं समवायवशार्थभिदे नमः स्वाहा । ८३५ । ॐ ह्रीं भुक्तैकसाध्यकर्मन्ताय नमः स्वाहा । ८३६ । ॐ ह्रीं निर्विशेषगुणामृताय नमः स्वाहा । ८३७ । ॐ ह्रीं साख्यायै नमः स्वाहा । ८३८ । ॐ ह्रीं समर्क्ष्याय नमः स्वाहा । ८३९ । ॐ ह्रीं कपिलाय नमः स्वाहा । ८४० । ॐ ह्रीं पंचविंशतितत्त्वविदे नमः स्वाहा । ८४१ । ॐ ह्रीं व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानिते नमः स्वाहा । ८४२ । ॐ ह्रीं ज्ञानचैतन्यभेददृशे नमः स्वाहा । ८४३ । ॐ ह्रीं अस्वसविदितज्ञानवादिने नमः

१—दर्शनविशुद्धयादीन् शोडशार्थान् यो वदति । २—कुदादिकः शुभ्रः नीलमण्यादिः कृष्णः बन्धूकपुण्यादी रक्तः प्रियंगुपरिणतादिनीलः सतप्तकनकच पचमोऽर्थ इति पंचार्थैः समानो वर्णो यस्य, पचानामर्थानामस्तिकायाना वर्णकः प्रतिपादकः, पचाना नैयायिकादिमिथ्यादर्शनानामपिवर्णकः । ३—भुक्तेन-अनुभवनेन एकेन-अद्वितीयेन साध्यः कर्मणामन्तः स्वभावो यस्य । यद्वा अनादौ ससारे कर्मफलं मुजानो जीवः कदाचित्सामग्रीविशेष प्राप्य कर्मणामन्त करोतीति मत यस्य । ४—तीर्थकरणामन्येपाचकेवल्लिना निर्विशेषा गुणाएव अमृतं यस्य जरामरणादिनिवार- कत्वात् । ५—सख्यायानियुक्तः साख्यः “ स साख्यो यः प्रसंख्यावान् ” इति निरुक्तिः सख्याते प्रथमोमध्यमोऽन्त्यो भगवानेव । ६—सम्यक्-ईक्षितु योग्यः, समिनामीध्य इति वा । ७—कपिरिव कपि-मनोमर्कटस्तलाति-कपायेपुगच्छन्त निश्चलीकरोति यः, क-परमंत्रहास्वरूपमपिलाति गृह्णाति इति वा अपेरलोपः । ८—अहिसादिमहाव्रतेपुप्रत्येकस्यपचरइति मिलितः पंचविंशतिभावना, त्रयोदशक्रिया ( पडावश्यकानि पंच नमस्कारा निसही असहीचेति ) द्वादश तपासि इतिवा, तासा पंचविंशतिक्रियाणा वा यः तत्त्व वेति । ९—व्यक्ताः ससारिणः अव्यक्ताः केवलज्ञानगम्याः जा जीवातेपा विविष्ट ज्ञान यस्य । १०—चेतना त्रिविधा-ज्ञानकर्मकर्मफलभेदात्, तत्र ज्ञानस्य चैतन्यस्यच यः भेद पश्यति, उभयत्र सामान्यविशेषो- दिकृतं भेदं यः पश्यतीत्यादि वा । ११—न स्वो विदितो येन ( निर्विकल्पसमाधिदशापन्नज्ञानेन ) एवंभूत ज्ञान यः वदति ।

पू०  
८



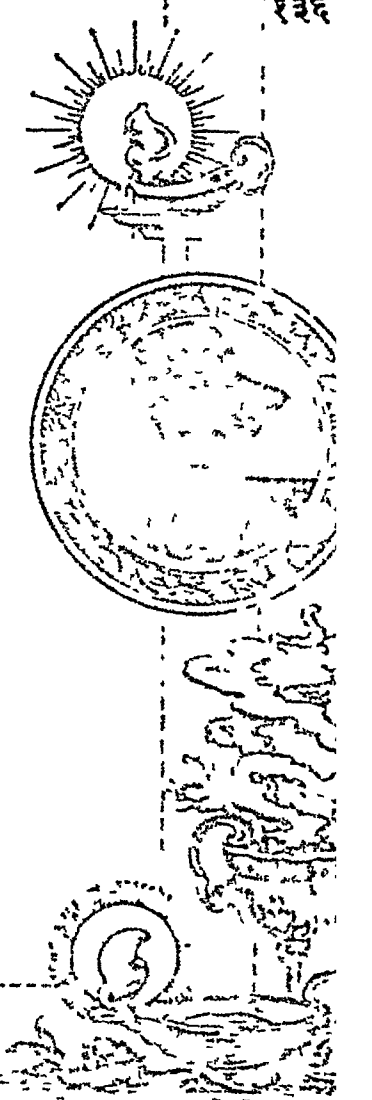
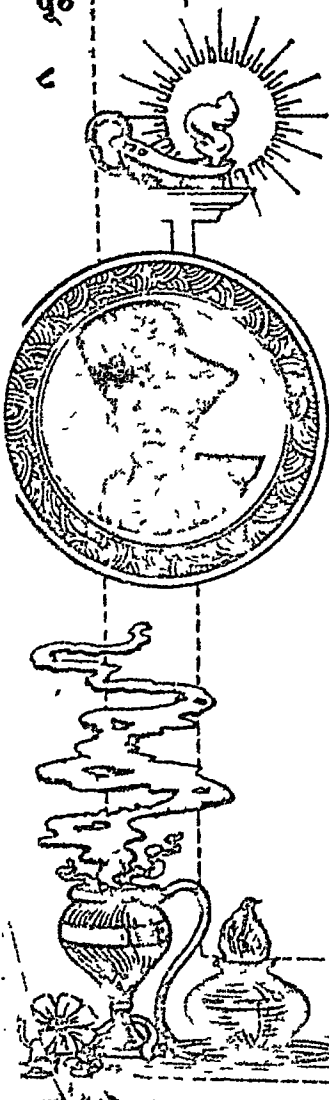


स्वाहा । ८४४ । ॐ ह्रीं सत्कार्यवादासात् नमः स्वाहा । ८४५ । ॐ ह्रीं त्रिप्रमाणाय नमः  
 स्वाहा । ८४६ । ॐ ह्रीं अर्धप्रमाणाय नमः स्वाहा । ८४७ । ॐ ह्रीं स्याद्वाहंकारिका-  
 क्षदिशे नमः स्वाहा । ८४८ । ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः स्वाहा । ८४९ । ॐ ह्रीं आत्मने नमः स्वाहा  
 । ८५० । ॐ ह्रीं पुरुषाय नमः स्वाहा । ८५१ । ॐ ह्रीं नर्याय नमः स्वाहा । ८५२ । ॐ ह्रीं त्रे नमः  
 स्वाहा । ८५३ ॐ ह्रीं चेतनाय नमः स्वाहा । ८५४ । ॐ ह्रीं पुसे नमः स्वाहा । ८५५ । ॐ ह्रीं अकर्त्रे  
 नमः स्वाहा । ८५६ । ॐ ह्रीं निर्गुणाय नमः स्वाहा । ८५७ । ॐ ह्रीं अमूर्ताय नमः स्वाहा । ८५८ ।  
 ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः स्वाहा । ८५९ । ॐ ह्रीं सर्वगताय नमः स्वाहा । ८६० । ॐ ह्रीं अक्रियाय नमः  
 स्वाहा । ८६१ । ॐ ह्रीं द्रष्ट्रे नमः स्वाहा । ८६२ । ॐ ह्रीं तटस्थाय नमः स्वाहा । ८६३ । ॐ ह्रीं  
 कूटस्थाय नमः स्वाहा । ८६४ । ॐ ह्रीं ज्ञात्रे नमः स्वाहा । ८६५ । ॐ ह्रीं निर्व्वनाय नमः स्वाहा  
 । ८६६ । ॐ ह्रीं अभवाय नमः स्वाहा । ८६७ । ॐ ह्रीं वहिर्विकाराय नमः स्वाहा । ८६८ । ॐ ह्रीं  
 निर्मोक्षाय नमः स्वाहा । ८६९ । ॐ ह्रीं प्रधानाय नमः स्वाहा । ८७० । ॐ ह्रीं ब्रह्मध्वानकाय नमः स्वाहा

१—सत् समीचीन कार्य—सवरादि लक्षण तस्य वादः शास्त्र यस्य । असत्कार्यवादः सन् सत्कार्यवादोभवतीति  
 सत्कार्यवादसात् भगवान् । सात् प्रत्ययान्तत्वेनाव्यपत्वम् । २—स्याद्वाहकारिकमक्षमात्मान य दिशति । ( स्याच्छब्दपूर्व-  
 क्रमहमहित्याकारेणान्तर्मुखज्ञानेन वेद्य अक्ष या दिशति । ) ३—पुरुणि—महति—इन्द्रादिपूजिते पदे शेते । ४—नृणाति—  
 नयकरोति, न राति-न क्रिमपि गृह्णाति प्रतिहार्येष्वपि निरतत्वात्, न रा-रमणीया यस्येतिवा । ५—नयति—समर्थतया भव्य  
 जीव मोक्षमिति ना । ६—निश्चितोमोक्षोयस्य—स्तद्भव एव मोक्ष्यमाणः । ७—बहु—प्रचुरनिर्जरोपलक्षित धानक शुक्लध्यानम्  
 तद्योगात् भगवानपि तथोच्यते, बहुधा—बहुप्रकारा आनकाः पट्टरा यत्र समवसरणे, तद्योगाद्भगवानपि तथा, इत्यादि ।

। ८७१ । ॐ हां प्रकृतये नमः स्वाहा । ८७२ । ॐ हां स्वातये नमः स्वाहा । ८७३ । ॐ हां आरूढप्रकृतये नमः स्वाहा । ८७४ । ॐ हां प्रकृतिप्रियाय नमः स्वाहा । ८७५ । ॐ हां प्रवॉनभोज्याय नमः स्वाहा । ८७६ । ॐ हां अर्प्रकृतये नमः स्वाहा । ८७७ । ॐ हां विरम्याय नमः स्वाहा । ८७८ । ॐ हां विकृतये नमः स्वाहा । ८७९ । ॐ हां कृतिने नमः स्वाहा । ८८० । ॐ हां मीमांसकाय नमः स्वाहा । ८८१ । ॐ हां अस्तसर्वज्ञाय नमः स्वाहा । ८८२ । ॐ हां श्रुतिपूताय नमः स्वाहा । ८८३ । ॐ हां सदोत्सवाय नमः स्वाहा । ८८४ । ॐ हां परोक्षज्ञानवादिने नमः स्वाहा । ८८५ । ॐ हां दर्शपावकाय नमः स्वाहा । ८८६ । ॐ हां सिद्धकर्मकाय नमः स्वाहा । ८८७ । ॐ हां चोर्विकाय नमः स्वाहा ।

१—प्रकृष्टा—त्रैलोक्यलोकहितकारिणी कृति. नीर्यप्रवर्तन यत्संज्ञादि । २—स्थान—प्रकृष्ट कथन—यथावत्तन्-स्वरूपनिरूपण ख्याति, आविष्टलिंगमिदं नाम । ३—आ—नमतात् रुढा—विभवन प्रसिद्धा प्रकृति—तीर्थरूपनामकर्म यस्य । ४—प्रकृत्या—स्वभावेन प्रिय., प्रकृतीना—सर्वलोकानां प्रिय, -प्रजगदलभ. । ५—प्रकृष्ट धानमेवाप्यनितन भोज्यास्वात् यस्य । ६—दुष्टानां विपश्चिप्रकृतीनां प्रक्षयात् अवातिप्रकृतीनां च मत्त्वेऽप्यसमर्थत्वात् सर्वेषां प्रभुत्वात् भगवान् प्रकृति. । ७—विशेषेण रम्यः । ८—विशिष्टा कृतिर्यस्य, विनष्टा कृति. कर्म यन्नेति वा कृतकृत्य इत्यर्थे. । ९—स्यसमयपरसमय-तत्वानि मीमांसते इति मीमांसक. ( पदद्वयाणि पंचास्तिकाया. मनतरत्त्वानि नवप्रदायां इतिस्वनमयतत्वानि, नैयायिकमते प्रमाणप्रमेयादिषोडशतत्वानि—बौद्धमते चत्वार्यार्यसंन्यनामानितत्वानि—हाणादे-द्रव्यगुणारिण्यत् तत्वानि—जैमिनीये चोदना-लक्षणो धर्मस्तत्त्व, साख्ये प्रकृत्यादिपंचविंशतितत्वानि—नास्तिके चत्वारि भूतानि ) । १०—सर्वं चते ज्ञा—सर्वज्ञाः सर्व-विद्वान्सः । अस्ता.—प्रत्युक्ताः सर्वज्ञाः—सर्वविद्वान्सः—कपिलरूपनगरदयो येन । ११—इन्द्रियाणां पर परोक्ष कैवल्यान वदतीति । १२—इष्टाः—अभीष्टाः पावका—पवित्रताकारका. गणवरादयो देवा यस्य, अथवा भगवानेवेष्ट. सन् पावक. । १३—सिद्ध-समार्ति गतं कर्म—क्रिया—चारित्र्य यस्य । १४—चाक—मलापहरः—सर्वमल्यचितानदकारहो वा आक.—केवलज्ञान यस्य ( अकनमाक. —स्वादिगण गत्यर्थकादकू धातो. ) ।



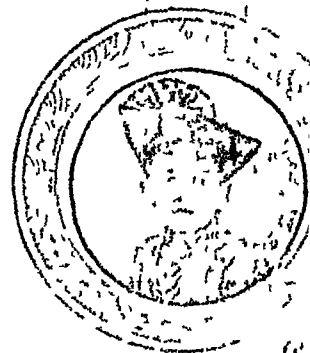
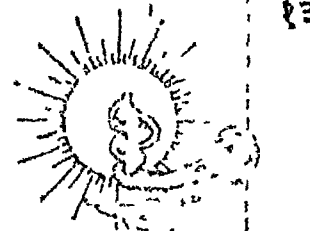
। ८८८ । ॐ ह्रीं भौतिकज्ञानाय नमः स्वाहा । ८८९ । ॐ ह्रीं भूताभिव्यक्तचेतनाय नमः स्वाहा । ८९० ।  
 ॐ ह्रीं प्रत्यक्षैकप्रमाणाय नमः स्वाहा । ८९१ । ॐ ह्रीं अस्तपरलोकाय नमः स्वाहा । ८९२ । ॐ ह्रीं गुरुश्रुतये  
 नमः स्वाहा । ८९३ । ॐ ह्रीं पुरंदरविद्धकर्णाय नमः स्वाहा । ८९४ । ॐ ह्रीं वेदान्तिने नमः स्वाहा । ८९५ ।  
 ॐ ह्रीं सविद्वयिने नमः स्वाहा । ८९६ । ॐ ह्रीं शब्दाद्वैतिने नमः स्वाहा । ८९७ । ॐ ह्रीं स्फोटवादिने नमः  
 स्वाहा । ८९८ । ॐ ह्रीं पाषंडघ्नाय नमः स्वाहा । ८९९ । ॐ ह्रीं नयौघयुजे नमः स्वाहा । ९०० ।

ॐ ह्रीं अन्तकृते नमः स्वाहा । ९०१ । ॐ ह्रीं पारकृते नमः स्वाहा । ९०२ । ॐ ह्रीं तीर-  
 प्राप्ताय नमः स्वाहा । ९०३ । ॐ ह्रीं परेतमःस्थिताय नमः स्वाहा । ९०४ । ॐ ह्रीं त्रिदंडिने नमः स्वाहा  
 । ९०५ । ॐ ह्रीं दंडितारातये नमः स्वाहा । ९०६ । ॐ ह्रीं ज्ञानकर्मसमुच्चयिने नमः स्वाहा । ९०७ ।  
 ॐ ह्रीं संहतध्वनये नमः स्वाहा । ९०८ । ॐ ह्रीं उत्सन्नयोगाय नमः स्वाहा । ९०९ । ॐ ह्रीं सुसार्णवोप-  
 माय नमः स्वाहा । ९१० । ॐ ह्रीं योगस्तेहापहाय नमः स्वाहा । ९११ । ॐ ह्रीं योगकिट्टिर्लेपनोधताय  
 नमः स्वाहा । ९१२ । ॐ ह्रीं स्थितस्थूलवपुर्योगाय नमः स्वाहा । ९१३ । ॐ ह्रीं गीर्मनोयोगकार्श्यकाय

१—भौतिक समवसरणादिविभूतियुक्तं ज्ञानं यस्य । २—भूतेषु अभिव्यक्ता प्रकटीकृताचेतना येन ।  
 ३—सर्वमपि पुद्गलद्रव्यं शब्द एवेति यो वदति । शक्तिरूपतयागदहेतुत्वात्तस्य । ४—स्फुटति—प्रकटीभवति केवलज्ञान  
 यस्मादिति शुद्धबुद्धैकस्वभावतयात्मानमेव यो मोक्षहेतुतया वदति । ५—त्रीणि शल्याति ( योगत्रयं वा ) दण्डयति ।  
 ६—ज्ञानस्य यथाख्यातचारित्रस्य च समुच्चयो विद्यते यस्य । ७—सुप्तः—कल्लोलरहितः सचासौ अर्णवः—समुद्रस्तस्योपमा  
 यस्य मनोवाक्कायव्यापाररहितत्वात् ।

नमः स्वाहा । ०,१४ । ॐ ह्रीं मूढमवाक्चित्तयोगस्थाय नमः स्वाहा । ०,१५ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मीकृतवपुःक्रियाय  
नमः स्वाहा । ०,१६ । ॐ ह्रीं मूढमकायक्रियास्थाधिने नमः स्वाहा । ०,१७ । ॐ ह्रीं मूढमवाक्चित्तयोगत्रे  
नमः स्वाहा । ०,१८ । ॐ ह्रीं ऐकदाडिने नमः स्वाहा । ०,१९ । ॐ ह्रीं परमहंसाय नमः स्वाहा । ०,२० ।  
ॐ ह्रीं परमसंवागय नमः स्वाहा । ०,२१ । ॐ ह्रीं नैष्कर्म्यसिद्धाय नमः स्वाहा । ०,२२ । ॐ ह्रीं परम-  
निर्जराय नमः स्वाहा । ०,२३ । ॐ ह्रीं प्रज्वलप्रभाय नमः स्वाहा । ०,२४ । ॐ ह्रीं मोघकर्मणे नमः  
स्वाहा । ०,२५ । ॐ ह्रीं वृद्धकर्मपाशाय नमः स्वाहा । ०,२६ । ॐ ह्रीं शैलेइयलंकृताय नमः स्वाहा । ०,२७ ।  
ॐ ह्रीं एकाकाररमास्वादाय नमः स्वाहा । ०,२८ । ॐ ह्रीं विश्वाकाररसाकुलाय नमः स्वाहा । ०,२९ ।  
ॐ ह्रीं अर्जावते नमः स्वाहा । ०,३० । ॐ ह्रीं अमृताय नमः स्वाहा । ०,३१ । ॐ ह्रीं अजाप्रते नमः  
स्वाहा । ०,३२ । ॐ ह्रीं अमुंमाय नमः स्वाहा । ०,३३ । ॐ ह्रीं शून्यतामयाय नमः स्वाहा । ०,३४ ।  
ॐ ह्रीं प्रेयसे नमः स्वाहा । ०,३५ । ॐ ह्रीं अयोगिने नमः स्वाहा । ०,३६ । ॐ ह्रीं  
चतुरशीतिलक्षगुणाय नमः स्वाहा । ०,३७ । ॐ ह्रीं अगुणाय नमः स्वाहा । ०,३८ ।  
ॐ ह्रीं निःपीतानन्तपर्याय नमः स्वाहा । ०,३९ । ॐ ह्रीं अविद्यासस्कोरनाशकाय नमः स्वाहा । ०,४० ।

१—एक—अमहाय· दण्डः—मूढमकाययोगो यस्य । २—मोघानि—फलदानासमर्थानि कर्माणि—अमद्रेद्यादीनि  
यस्य । ३—जीवनाधार प्राणवायुरहितत्वात् । ४—न जागर्ति—योगनिद्रास्थितत्वात् । ५—आत्ममन्येमात्रधानत्वात् यो  
न मोहनिद्रा प्राप्तः । ६—अतिशयेन प्रियः । ७—न विद्यन्ते गुणाः—विभावपणितिरूपारागादयो यस्य । ८—नि पीताः  
केवलज्ञाने प्रवेशिता अनन्तपर्याया येन । ९—अनित्रा अजानं तस्य सन्कारः अनुभवन तस्य नाशकः । ( अविद्यानाशकाः  
नमः प्राग अपि श्री हायामश्रुचत्तारिन्द्रि वानेया ) ।

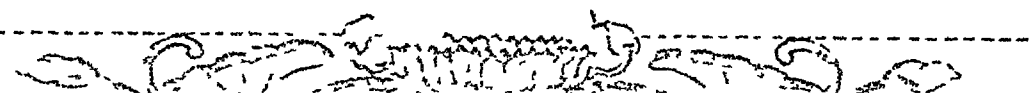
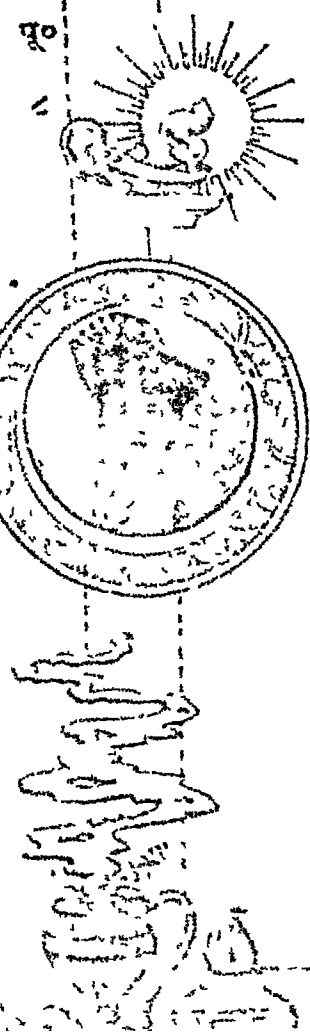


ॐ ह्रीं बृद्धाय नमः स्वाहा । ९४१ । ॐ ह्रीं निर्वचनीयैय नमः स्वाहा । ९४२ । ॐ ह्रीं अणवे<sup>३</sup> नमः स्वाहा । ९४३ । ॐ ह्रीं अणीयसे नमः स्वाहा । ९४४ । ॐ ह्रीं अनणुप्रियाय नमः स्वाहा । ९४५ । ॐ ह्रीं प्रेषाय नमः स्वाहा । ९४६ । ॐ ह्रीं स्थैर्यसे नमः स्वाहा । ९४७ । ॐ ह्रीं स्थिराय नमः स्वाहा । ९४८ । ॐ ह्रीं निष्ठाय नमः स्वाहा । ९४९ । ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नमः स्वाहा । ९५० । ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ९५१ । ॐ ह्रीं सुनिष्ठिताय नमः स्वाहा । ९५२ । ॐ ह्रीं भूतार्थगूराय नमः स्वाहा । ९५३ । ॐ ह्रीं भूतार्थदूराय नमः स्वाहा । ९५४ । ॐ ह्रीं परमनिर्गुणाय नमः स्वाहा । ९५५ । ॐ ह्रीं व्यवहारसुषुप्ताय नमः स्वाहा । ९५६ । ॐ ह्रीं अतिजागरूकाय नमः स्वाहा । ९५७ । ॐ ह्रीं अतिसुस्थिताय नमः स्वाहा । ९५८ । ॐ ह्रीं उदितोदितमाहात्म्याय नमः स्वाहा । ९५९ । ॐ ह्रीं निरुपाधये नमः स्वाहा । ९६० । ॐ ह्रीं अकृत्रिमाय नमः स्वाहा । ९६१ । ॐ ह्रीं अमेयमहिम्ने नमः स्वाहा । ९६२ । ॐ ह्रीं अत्यन्तशुद्धाय नमः स्वाहा । ९६३ । ॐ ह्रीं सिद्धिस्वयवराय नमः स्वाहा । ९६४ । ॐ ह्रीं सिद्धानुजाय

१—केवलजानापेक्षया लोकालोक व्याप्य व्याप्नोति स्म, समुद्धातापेक्षया लोकप्रमाण यो वर्द्धते स्म ।  
२—निर्वक्तुं-निरुक्तिमानेतु शक्यः, निर्गतंवचनीयमपकीर्तिर्यस्येति वा । ३—अणति-शब्द करोति इति अणुः, अणुसदृशत्वाद् वा अणु. -अविभागित्व परमसूक्ष्मत्वाद्योगिनामप्यगम्यत्व सादृश्यम् । ४—अनणवो महान्तः इन्द्रादयस्तेषां प्रियोऽभीष्टः । अथवा न अणुः—पुद्गलकर्माणुः प्रियो यस्य परमनिर्जरकत्वात् । ५—अतिशयेन प्रियः—प्रेष्ठः ६—अतिशयेन स्थिरः स्थैर्यान् । ७—नि-नितरामतिशयेन वा तिष्ठति । ८—भूता-अतीता ये अर्थाः—पचेन्द्रियविषयास्तेभ्योदूरः । ९—निर्गताः गुणा रागद्वेषादयोऽशुद्धपरिणामा यस्मात्, परमश्र्वासौ निर्गुणश्चेति परा उत्कृष्टा मा लक्ष्मी यस्य—निश्चिता निर्धारिता वा गुणाः केवलजानादयो यस्य-परमश्र्वासौ निर्गुणश्चेति ।

नमः स्वाहा । ९६५ । ॐ ह्रीं सिद्धपुरीपाथाय नमः स्वाहा । ९६६ । ॐ ह्रीं सिद्धगणातिथये नमः स्वाहा । ९६७ । ॐ ह्रीं सिद्धसंगोन्मुखाय नमः स्वाहा । ९६८ । ॐ ह्रीं सिद्धालिंग्याय नमः स्वाहा । ९६९ । ॐ ह्रीं सिद्धोपग्रहकाय नमः स्वाहा । ९७० । ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः स्वाहा । ९७१ । ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रशीलास्याय नमः स्वाहा । ९७२ । ॐ ह्रीं पुण्यसंवलाय नमः स्वाहा । ९७३ । ॐ ह्रीं व्रताप्रयुग्माय नमः स्वाहा । ९७४ । ॐ ह्रीं परमशुक्लेश्याय नमः स्वाहा । ९७५ । ॐ ह्रीं अपचारकृते नमः स्वाहा । ९७६ । ॐ ह्रीं क्षेपिष्ठाय नमः स्वाहा । ९७७ । ॐ ह्रीं अन्त्यक्षणासखाय नमः स्वाहा । ९७८ । ॐ ह्रीं पंचलक्ष्मणस्थितये नमः स्वाहा । ९७९ । ॐ ह्रीं द्विसप्ततिप्रकृत्यासिने नमः स्वाहा । ९८० । ॐ ह्रीं त्रयोदशकलिप्रणुते नमः स्वाहा । ९८१ । ॐ ह्रीं अवेदाय नमः स्वाहा । ९८२ । ॐ ह्रीं अयाजकाय नमः स्वाहा । ९८३ । ॐ ह्रीं अयज्याय नमः स्वाहा । ९८४ । ॐ ह्रीं अयाज्याय नमः स्वाहा । ९८५ । ॐ ह्रीं अनग्निपरिग्रहाय नमः स्वाहा । ९८६ ।

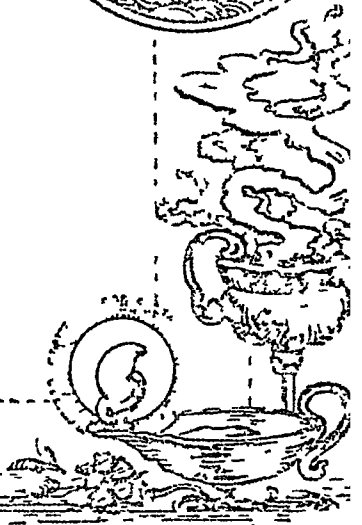
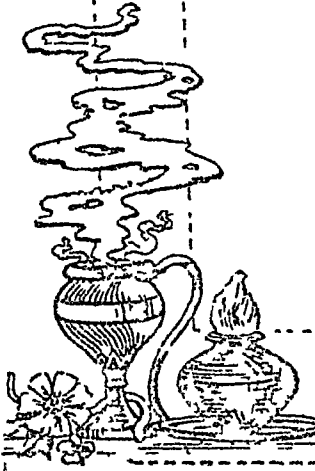
१—अशुभते-क्षणेन स्वाभिनमभीष्टस्थान नयन्तीति अशुभाः अष्टादशसहस्रशीलान्येव अशुभा यस्य ।  
 २—पुण्य सङ्ख्यादि एव सखल—पश्यदन यस्य । ३—वृत्तं चारित्रमग्र मुख्य युग्मं वाहन यस्य । ४—अपचरणमपचारो मारण यः कर्मशत्रूणा मारणाध्यानमत्रविप्रयोगेण मारणमकरोत् । ५—अतिगयेन शिप्रः—शीघ्रतर. क्षणमात्रेण त्रैलोक्य शिघ्ररगामित्वात् । ६—अन्त्यक्षण.—मसारत्यपदिचमः ममयस्तस्य सखा—सहगामुकः अन्त्यक्षणः सखा—मित्र यस्य ।  
 ७—न याजकः—यो निजा पूजा न कारयति । ८—यष्टु ग्रन्थो यज्यः न यज्यः अयज्यः—अलक्ष्यरूपत्वात्स्वाभिनः ।  
 ९—इत्यते इति याज्यः न याज्यः अयाज्यः । शक्याथे विना सामान्ये ध्यम् । हेतुस्तु अलक्ष्यरूपत्वमेव । १०—कर्मसमिधा भस्मीकरणे न अग्ने परिग्रहो यस्य, अग्निद्वय परिग्रहश्च ( स्त्रीच ) इति अग्निपरिग्रहो न अग्नि परिग्रहो यस्य । अन्यर्षीणामग्ने भार्गवाश्च परिग्रहो भवति । भगवास्तु न तथा केवल व्यानाग्निनिर्दग्धकर्मन्धनत्वात्तस्य ।



ॐ ह्रीं अनग्निहोत्रिणे नमः स्वाहा । ९८७ । ॐ ह्रीं परमनिःस्पृहाय नमः स्वाहा । ९८८ । ॐ ह्रीं अत्यन्तनिर्दयाय नमः स्वाहा । ९८९ । ॐ ह्रीं अशिष्याय नमः स्वाहा ९९० । ॐ ह्रीं अशासकाय नमः स्वाहा । ९९१ । ॐ ह्रीं अदीक्ष्याय नमः स्वाहा । ९९२ । ॐ ह्रीं अदीक्षकाय नमः स्वाहा । ९९३ । ॐ ह्रीं अदीक्षिताय नमः स्वाहा । ९०४ । ॐ ह्रीं अक्षमाय नमः स्वाहा । ९९५ । ॐ ह्रीं अग्रम्याय नमः स्वाहा । ९९६ । ॐ ह्रीं अग्रमकाय नमः स्वाहा । ९९७ । ॐ ह्रीं अरम्याय नमः स्वाहा । ९९८ । ॐ ह्रीं अरमकाय नमः स्वाहा । ९९९ । ॐ ह्रीं ज्ञाननिर्भगय नमः स्वाहा । १००० ।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धाय नमः स्वाहा । १००१ । ॐ ह्रीं आभीक्षणज्ञानोपयोगाय नमः स्वाहा । १००२ । ॐ ह्रीं व्यावृत्तिरूपाय नमः स्वाहा । १००३ । ॐ ह्रीं साधुसमाधये नमः स्वाहा । १००४ । ॐ ह्रीं सन्मार्गप्रभावकाय नमः स्वाहा । १००५ । ॐ ह्रीं उत्तमक्षमरूपाय नमः स्वाहा । १००६ । ॐ ह्रीं मार्दवाय नमः स्वाहा । १००७ । ॐ ह्रीं आर्जवाय नमः स्वाहा । १००८ । ॐ ह्रीं शुचिस्वरूपाय नमः स्वाहा । १००९ । ॐ ह्रीं सत्याय नमः स्वाहा । १०१० । ॐ ह्रीं संयमाय नमः स्वाहा । १०११ । ॐ ह्रीं तपाय नमः स्वाहा । १०१२ । ॐ ह्रीं त्यागाय नमः स्वाहा । १०१३ । ॐ ह्रीं आकिञ्चन्याय

१—परमकारुणिकत्वाद्भागवतः कथं निर्दयत्वमितितेत् परिह्रियते-अतिगतो-विनष्टोऽन्तो विनाशो यस्येत्यन्तः-निश्चिता दया (सगुणनिर्गुण प्राणिवर्गरक्षणलक्षणा करुणा) यस्येति निर्दय-अत्यन्तदृचासौ निर्दयश्चेत्यन्तनिर्दयः । अथवा अति-अतिशयेन अन्ते-अन्तके यमे निर्दयः । यद्वा अतिशयेन अन्त विनाश प्राप्ता निर्दया यस्मात् । अथवा-अतिशयेन अन्ते मोक्षगमने निश्चिता दया यस्य । २—दर्शनविशुद्ध्यादिसमन्तभद्रान्तानि षोडशनामानि पूजापाठे उपरिष्ठात् संग्रहीतानि ।





नमः स्वाहा । १०१४ । ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्याय नमः स्वाहा । १०१५ । ॐ ह्रीं रामन्तभद्राय नमः स्वाहा । १०१६ । ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय नमः स्वाहा । १०१७ । ॐ ह्रीं ब्रह्मरिष्याय नमः स्वाहा । १०१८ । ॐ ह्रीं ब्रह्मदेहाय नमः स्वाहा । १०१९ । ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः स्वाहा । १०२० । ॐ ह्रीं ज्ञानेकभिने नमः स्वाहा । १०२१ । ॐ ह्रीं जीवनाय नमः स्वाहा । १०२२ । ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः स्वाहा । १०२३ । ॐ ह्रीं लोकाप्रगामुक्ताय नमः स्वाहा । १०२४ ।

परिमलविमलाहयैरिन्दुकाशपीरामिश्रै-

निखिलमिलितद्रव्यैश्चन्द्रनैर्घ्राणपेयैः ।

शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,

दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥ चन्दनम् ॥

मुराभितहरिताग्रैर्निस्तुपैःशालिजातैः,

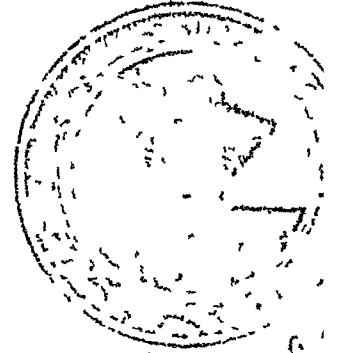
रजतसदृशवर्णैरक्षतैरक्षतैः ।

शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,

दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥ अक्षतान् ॥

सरसिजकुमुदोद्यैः गिञ्जयत्पट्टपद्मैः,

वरवकुलमुपुष्पैः बालेभूजातजातैः ।





शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,  
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥ पुष्पाणि ॥

रजतगिरिनिकामैः शारदाब्जापमानैः,  
चरुभिरमृतमिश्रैर्वाष्पपूरैरुदारैः ।

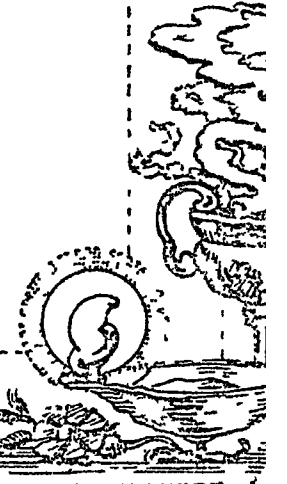
शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,  
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥ नैवेद्यम् ॥

रविभिरिवसुदीप्तैः स्वर्णकान्तैः प्रदीपैः,  
रविकुक्कुभविलोपि त्रासितं यैस्तमौघम् ।

शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,  
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥ दीपम् ॥

सुरभिरचितगंधैर्व्यामनीव्याप्तधूपैः  
मिलितसुरभिद्रव्यैर्नासिकाप्रीणयद्भिः ।

शिवसदननिविष्टं नाद्यनन्तं प्रमुक्तम्,  
दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ७ ॥ धूपम् ॥



रुचिरकनकवर्णैश्चोचमोचैः फलैर्वै,

रभिनवफलपर्णैस्तजितं मोदयद्भिः ।

शिवसदननिविष्टं नाचनन्तं प्रमुक्तम्,

दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥ फलम् ॥

वरजलफलपुष्पैश्चन्द्रनैरक्षताद्यै,—

निरचितकृतभक्त्यायुक्तपुष्पांजलीभिः ।

शिवसदननिविष्टं नाचनन्तं प्रमुक्तम्,

दशशतजिनचारं चर्चये सिद्धचक्रम् ॥ ९ ॥ अर्घम् ॥

“ ३० ॥ श्री आक्षिप्या उसा नमः ” अतिमन्त्रेणाद्योत्तरशतप्रमाणं जाप्यदेवम्

इत्थं सिद्धमुपास्य शर्मसहितं संसारवाद्यपहं,

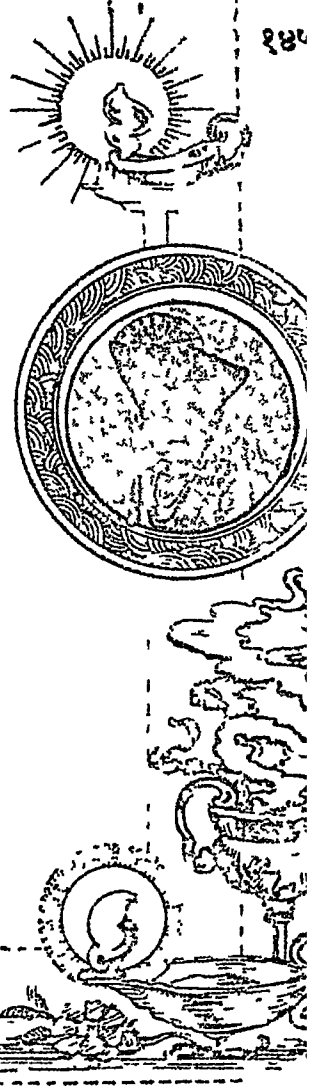
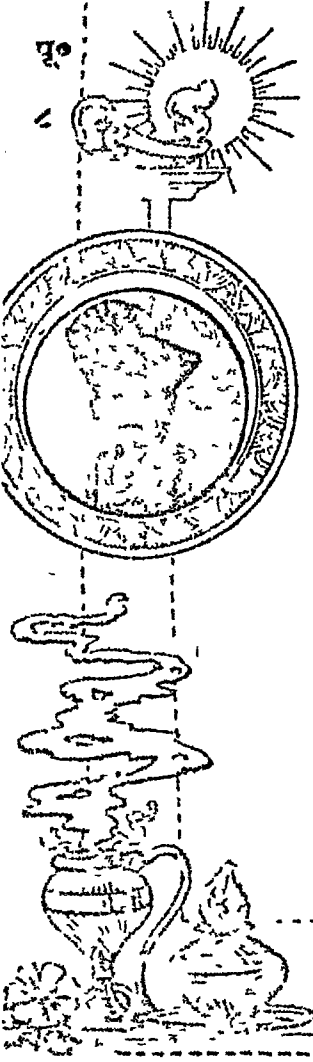
नाद्रव्याशुभभावकर्मकलितं सन्नव्यपयपिहम् ।

योश्चायेत्फलमश्नुते शिवमयंसांमं स हित्वाऽशिवम्,

संभुक्त्वाखिलमंडलेशविबुधस्वामिस्थितिं सर्वतः ॥ १० ॥ पूर्णार्घम् ॥

अथ जयमाला ।

त्रिभुवनपतिपूज्यं पुण्यपापाद्विमुक्तं,  
 विगतकलुपभावं छिन्नसंसारभावम् ।  
 जगतिपतिसुसेव्यं संयजे भक्तिपूर्वम्,  
 वरशिवसुगुणं तं लोकमूर्धावभासम् ॥ १ ॥  
 अपारजवंजवर्जावनकर्मप्रभेदविदारणकेशरिधर्म ।  
 त्रिलोकशिरोयुतपुण्यविबुद्ध महासुखमग्नमहो जयरिद्ध ॥ २ ॥  
 अखण्डितचिन्मयशांतिकरण्ड घनैकपरोन्नतशक्तिसुपिंड ।  
 समुद्भवभीतिविमुक्त समृद्ध, महासुखमग्नमहोजयरिद्ध ॥ ३ ॥  
 सुरासुरमानुपनागपरीज, सुदूरितदुर्भरभावसमीज ।  
 मुनेवलबोध मुदृष्टिसमृद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ४ ॥  
 दिवारविचन्द्रविमृष्टविकाश, महोभरभूषित सहजनिरास ।  
 विपत्कुलकंदकुटार विक्रुद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ५ ॥  
 जिनाधिपमाननिरूपितभाव सुसूक्ष्मगुणेश विरूप विराव ।  
 विवाध विक्रस्वरदूरविरुद्ध, महासुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ६ ॥



तपांतरमूपितनिर्मलयोग, समाप्तविवाध विशोक विरंग ।  
 प्रदुःखदवानलमेघ विरुद्ध, महामुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ७ ॥  
 चिरंतनकालकलाकृतवास, भवोदधिसातनशुद्धसमास ।  
 मनोऽतिहृषीकविमुक्त विशुद्ध, महामुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ८ ॥  
 अनादिनिरंतपदस्थितरूप, रसादिविमुक्त त्रिविक्त विधूप ।  
 जरादिदशादलनार्थविशुद्ध, महामुखमग्न महो जयरिद्ध ॥ ९ ॥  
 महेश सुशंकर निर्जर शक्त, मुनीन्द्र सुचन्द्र सुभास्करचक्र ।  
 पराच्युतभाव सुशीतलशुद्ध, महामुखमग्नमहोजयरिद्ध ॥ १० ॥  
 समयरससमग्रं पूर्णभाव विभावम्,  
 जनितशिवसुसारं यःस्मरेत् सिद्धचक्रम् ।  
 अखिलनरसुपूज्यं शौभचन्द्रादिसंव्यम्,  
 भजति शिवसुशान्तिं संविभुज्याखिलार्थम् ॥ ११ ॥  
 इति श्रीशुभचन्द्रकृतसहस्रनामगुणितपूजा संपूर्णा ॥

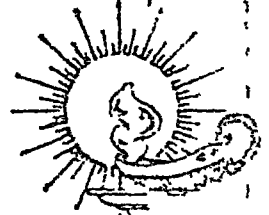
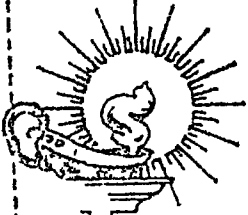
॥ भद्रं भूयात् ॥

## आठवीं जयमालाका अर्थ ।

मैं उनकी भक्तिपूर्वक पूजा-स्तुति करता हूँ जो कि त्रिभुवनके पतियों—सुरेन्द्रों व असुरेन्द्रों के द्वारा पूज्य हैं, पुण्य और पाप दोनों ही से रहित हैं, कलुषता जिनकी नष्ट हो चुकी है, संसार पर्यायको जिन्होंने छेद डाला है, जगतीपतियों नरेन्द्रोंके द्वारा जो सेव्य हैं, उत्तम कल्याणरूप सभीचीनगुणों से युक्त और लोकके शिरोभागापर प्रकाशमान हैं ॥ १ ॥

अपार ससारके जीवनरूप कर्मोंके समस्त भेदोंका विदारण करनेमें सिंहसमान, तीन लोकके शिखरपर विराजमान, पवित्र, विबुद्ध, महानसुखमें निमग्न तेजःस्वरूप सिद्धपरमेशिन् आप जयवन्त रहे ॥ २ ॥ कभी भी खण्डित न होनेवाली चित्स्वरूप शक्तिके करण्ड—पिटारे, धनरूप अद्वितीय सर्वोत्कृष्ट शक्तिके पिंड, उत्पत्तिके भयसे रहित, महासुखमें मग्न तेजः स्वरूप समृद्ध सिद्धदेव आप जयवन्त रहे ॥ ३ ॥ सुर असुर मनुष्य और वरणादिके द्वारा पूज्य, दुर्भरभावोंसे दूर, भलेप्रकार पूज्य, सम्यक् केवलज्ञान दर्शनसे समृद्ध, महानसुखमें निमग्न तेजः स्वरूप सिद्धभगवन् आपजयवन्त रहे ॥ ४ ॥ दिनमें दिखाई पड़नेवाले सूर्य और चन्द्रमाके समान या उससे भी अधिक विशुद्ध है विकाश जिनका, तेजोभारसे भूषित, स्वभावसे ही स्थिर, क्रोधरहित होकर भी विपत्तिरूपी वृत्तोंके कन्द-तनेका उच्छेदन करनेके लिए कुठारके समान महान सुखमें निमग्न तेजः स्वरूप सिद्ध परमेशिन् आप जयवन्त रहे ॥ ५ ॥ जिनाधिप अर्हन्तके ज्ञानके द्वारा जिनके भावका निरूपण किया गया है, अतिशय मूक्षमत्वगुणके स्वामी, नीरूप, शब्दरहित, वाधारहित, विकस्वर-दुष्प्राप्ति या थकावट

पु०

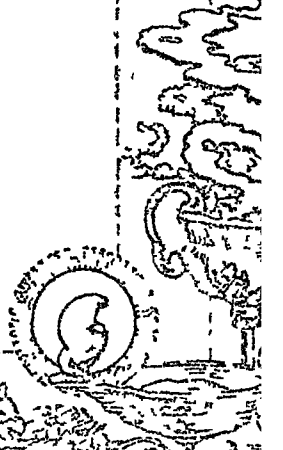
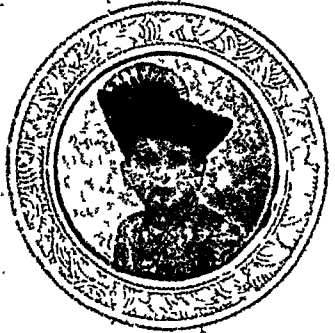
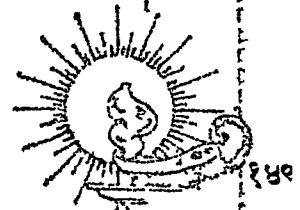


के विरुद्ध, महानसुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्ध भगवान् आप जयवंत रहें ॥ ६ ॥ विभिन्नतपश्चरणोंके द्वारा भूषित हो चुका है योग जिनका, समाप्त हो गई हैं बाधाएँ जिनकी, बीतशोक, रोगरहित, महानदुःखस्वरूप दावानलके लिये मेघके समान, महासुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्धदेव आप जयवंत रहें ॥ ७ ॥ शास्वतिक कालकलामें निवास करनेवाले संसाररूप समुद्रको सुखादेनेवाले शुद्ध, प्रकाशयुक्त, मन और इन्द्रियोसे रहित, विशुद्ध महानसुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्ध भगवान् आप जयवंत रहें ॥ ८ ॥ अनादि और अनन्त पदमें स्थित है रूप-आकृति जिनकी, रसादिसेरहित, समस्त अन्यपदार्थोंसे पृथग्भूत, सब पदार्थोंको विशेषरूपसे प्रकाशित करनेवाले अथवा सम्पूर्ण विभावभावों या दोषोंको कम्पितकर देनेवाले जरा जीर्णता-वृद्धत्व आदि अवस्थाओंका ढलन करनेवाले, विशुद्ध महासुखमें निमग्न तेजोरूप सिद्धदेव आप जयवंत रहे ॥ ९ ॥ हे महेश-महान् ऐश्वर्ययुक्त, हे मुशकर-समीचीन कल्याणके कर्ता, हे निर्जर-कभी जीर्ण न होनेवाले, हे शक्र-अनन्तशक्ति युक्त, हे मुनीन्द्र-मुनियोंके नाथ, हे सुचन्द्र-भले प्रकार सबको चन्द्रमाके समान आन्हादित करनेवाले, हे सुभास्करचक्र-कोटिसूर्यसमान तेजके धारक, हे पराच्युतभाव-उत्कृष्ट और कभी भी च्युत न होनेवाले हे भाव जिनके, हे अत्यन्तशीतल ज्ञानस्वरूप, महान् सुखमे निमग्न तेजोरूप सिद्धपरमेष्ठिन् आप जयवंत रहे ॥ १० ॥ इस तरह आत्मरससे पूर्णभावरूप, पुनरुत्पत्तिसे रहित, प्राप्त कर लिया है कल्याणरूप समीचीन सार जिन्होंने सम्पूर्ण मनुष्योंके द्वारा पूज्य तथा शुभचन्द्रादिकेद्वारा सेव्य ऐसे सिद्ध परमेष्ठियोंके समूहका जो मन्थ स्मरण करता है वह समस्त अभ्युदयोको भोगकर अन्तमे मुक्तिरूप समीचीन शान्तिको भी प्राप्त किया करता है ॥ ११ ॥



श्रीभगवज्जिनसेनाचार्यकृत-  
सहस्रनामगर्भितमन्त्राणि.

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं वृषभाय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं सभवाय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं शभवे नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं स्वयंभवाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं प्रभवे नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं अक्षराय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं विश्वदृश्यने नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं विभवे नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं धात्रे नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं विश्वेगाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं विश्वन्यापिने नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं विधये नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं वेधसे नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं शास्त्रताय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं जगज्ज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये नमः स्वाहा । ३२ ।

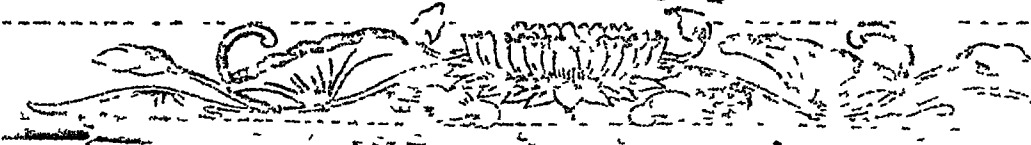
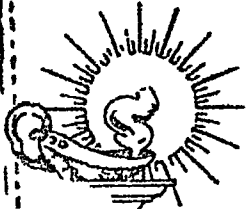


सिद्ध अक्षर

ह्रीं

संस्कृत विद्यालय

ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं विश्वदृशे नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं जिनाय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं अभैयात्मने नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं अनन्तजिते नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं भव्यबन्धवे नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं अब्रन्धनाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं शिवाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं पराय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं परतराय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं मूढमाय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं सनातनाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं स्वयज्योतिषे नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं अजाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं अजन्मने नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनेये नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं जेत्रे नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं प्रशान्तारये नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अनन्तात्मने नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं योगिने नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं





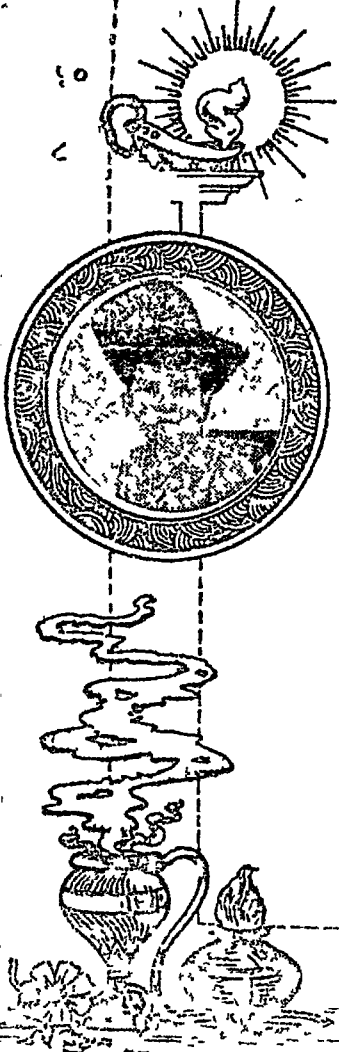
सिद्ध ज्ञान

ह्रीं

सिद्धेश्वर

बुद्धाय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं प्रबुद्धान्मने नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः स्वाहा । ७६ ।  
ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं सिद्धान्तविदे  
नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं ध्येयाय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय नमः स्वाहा । ८१ ।  
ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं सहिष्णवे नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं अच्युताय नमः  
स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं  
भवोद्भवाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं अजराय नमः स्वाहा  
। ८९ । ॐ ह्रीं अजय्याय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं धीश्वराय  
नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं विभावसवे नमः स्वाहा । ९४ ।  
ॐ ह्रीं असभूष्णवे नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं स्वयभूष्णवे नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं पुरातनाय नमः  
स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं परमात्मने नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं परज्योतिषे नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं  
त्रिजगत्परमेश्वराय नमः स्वाहा । १०० ।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नमः स्वाहा । १०१ । ॐ ह्रीं दिव्याय नमः स्वाहा । १०२ । ॐ ह्रीं  
पूतवाचे नमः स्वाहा । १०३ । ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः स्वाहा । १०४ । ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः स्वाहा  
। १०५ । ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः स्वाहा । १०६ । ॐ ह्रीं वर्माध्यक्षाय नमः स्वाहा । १०७ । ॐ ह्रीं  
दमीश्वराय नमः स्वाहा । १०८ । ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः स्वाहा । १०९ । ॐ ह्रीं भगवते नमः स्वाहा



शिव चक्र

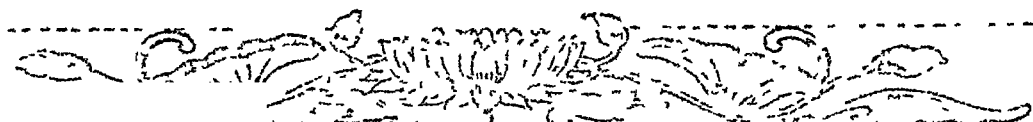
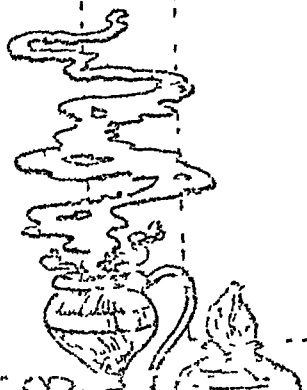
ह्रीं

मंडल विधान

। ११० । ॐ ह्रीं अहने नमः स्वाहा । १११ । ॐ ह्रीं अरजसे नमः स्वाहा । ११२ । ॐ ह्रीं विरजसे  
नमः स्वाहा । ११३ । ॐ ह्रीं शुचये नमः स्वाहा । ११४ । ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः स्वाहा । ११५ ।  
ॐ ह्रीं केवलिने नमः स्वाहा । ११६ । ॐ ह्रीं ईशानाय नमः स्वाहा । ११७ । ॐ ह्रीं पूजाहाय नमः  
स्वाहा । ११८ । ॐ ह्रीं म्नातकाय नमः स्वाहा । ११९ । ॐ ह्रीं अमलाय नमः स्वाहा । १२० ।  
ॐ ह्रीं अनन्तदीप्तये नमः स्वाहा । १२१ । ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः स्वाहा । १२२ । ॐ ह्रीं स्वयंबुद्राय  
नमः स्वाहा । १२३ । ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः स्वाहा । १२४ । ॐ ह्रीं मुक्ताय नमः स्वाहा । १२५ ।  
ॐ ह्रीं शक्ताय नमः स्वाहा । १२६ । ॐ ह्रीं निगत्राधाय नमः स्वाहा । १२७ । ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः  
स्वाहा । १२८ । ॐ ह्रीं भुवनेश्वरार्चिताय नमः स्वाहा । १२९ । ॐ ह्रीं निरजनाय नमः स्वाहा । १३० ।  
ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः स्वाहा । १३१ । ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये नमः स्वाहा । १३२ । ॐ ह्रीं अनामयाय  
नमः स्वाहा । १३३ । ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः स्वाहा । १३४ । ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः स्वाहा  
। १३५ । ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः स्वाहा । १३६ । ॐ ह्रीं स्थायिने नमः स्वाहा । १३७ । ॐ ह्रीं  
अक्षयाय नमः स्वाहा । १३८ । ॐ ह्रीं अग्रण्यै नमः स्वाहा । १३९ । ॐ ह्रीं ग्रामण्यै नमः स्वाहा  
। १४० । ॐ ह्रीं नेत्रे नमः स्वाहा । १४१ । ॐ ह्रीं प्रणेत्रे नमः स्वाहा । १४२ । ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते  
नमः स्वाहा । १४३ । ॐ ह्रीं शास्त्रे नमः स्वाहा । १४४ । ॐ ह्रीं धर्मपतये नमः स्वाहा । १४५ ।  
ॐ ह्रीं धर्म्याय नमः स्वाहा । १४६ । ॐ ह्रीं धर्मात्मने नमः स्वाहा । १४७ । ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृत नमः  
स्वाहा । १४८ । ॐ ह्रीं वृषध्वजाय नमः स्वाहा । १४९ । ॐ ह्रीं वृशाधीशाय नमः स्वाहा । १५० ।

पृ०

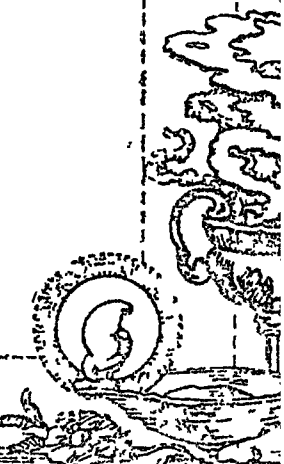
१५२



ॐ ह्रीं वृषकेतवे नमः स्वाहा । १५१ । ॐ ह्रीं वृषायुधाय नमः स्वाहा । १५२ । ॐ ह्रीं वृषाय नमः  
 स्वाहा । १५३ । ॐ ह्रीं वृषपतये नमः स्वाहा । १५४ । ॐ ह्रीं भर्त्रे नमः स्वाहा । १५५ । ॐ ह्रीं  
 वृषभाकाय नमः स्वाहा । १५६ । ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय नमः स्वाहा । १५७ । ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये नमः  
 स्वाहा । १५८ । ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः स्वाहा । १५९ । ॐ ह्रीं भूतभृते नमः स्वाहा । १६० । ॐ ह्रीं  
 भूतभावनाय नमः स्वाहा । १६१ । ॐ ह्रीं प्रभवाय नमः स्वाहा । १६२ । ॐ ह्रीं विभवाय नमः स्वाहा ।  
 । १६३ । ॐ ह्रीं भास्वते नमः स्वाहा । १६४ । ॐ ह्रीं भवाय नमः स्वाहा । १६५ । ॐ ह्रीं भावाय  
 नमः स्वाहा । १६६ । ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः स्वाहा । १६७ । ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः स्वाहा  
 । १६८ । ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नमः स्वाहा । १६९ । ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नमः स्वाहा । १७० । ॐ ह्रीं  
 अभवाय नमः स्वाहा । १७१ । ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः स्वाहा । १७२ । ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः स्वाहा  
 । १७३ । ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः स्वाहा । १७४ । ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे नमः स्वाहा । १७५ । ॐ ह्रीं  
 सर्वादये नमः स्वाहा । १७६ । ॐ ह्रीं सर्वदशे नमः स्वाहा । १७७ । ॐ ह्रीं सार्वाय नमः स्वाहा । १७८ ।  
 ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः स्वाहा । १७९ । ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः स्वाहा । १८० । ॐ ह्रीं सर्वात्मने नमः  
 स्वाहा । १८१ । ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय नमः स्वाहा । १८२ । ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः स्वाहा । १८३ ।  
 ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते नमः स्वाहा । १८४ । ॐ ह्रीं सुगतये नमः स्वाहा । १८५ । ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः  
 स्वाहा । १८६ । ॐ ह्रीं सुश्रुते नमः स्वाहा । १८७ । ॐ ह्रीं सुवाचे नमः स्वाहा । १८८ । ॐ ह्रीं  
 मूरये नमः स्वाहा । १८९ । ॐ ह्रीं बहुश्रुताय नमः स्वाहा । १९० । ॐ ह्रीं विश्रुताय नमः स्वाहा ।

पृ०

८

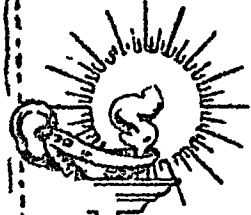


सिद्ध यज्ञ

ह्रीं

मंडलविधान

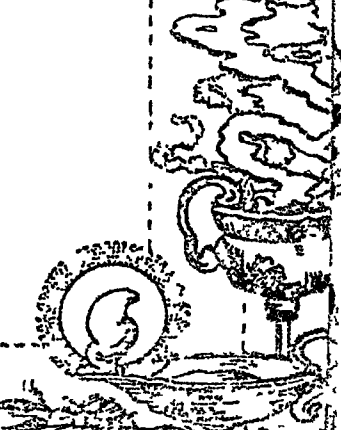
५०

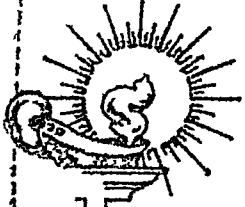


। १९१ । ॐ ह्रीं विश्वत.पादाय नम स्वाहा । १९२ । ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय नम स्वाहा । १९३ ।  
ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नम. स्वाहा । १९४ । ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय नम. स्वाहा । १९५ । ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय  
नम. स्वाहा । १९६ । ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय नम. स्वाहा । १९७ । ॐ ह्रीं सहस्रपादे नम. स्वाहा । १९८ ।  
ॐ ह्रीं मृतभव्यभवद्भर्त्रे नम. स्वाहा । १९९ । ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय नमः स्वाहा । २०० ।

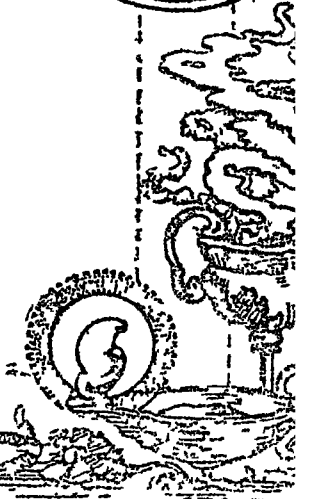


ॐ ह्रीं स्थवित्राय नम. स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं स्थविगय नम. स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय नमः  
स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं पृष्ठाय नम. स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नम. स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये नम  
स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं गरिष्ठाय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं वहिष्ठाय  
नम. स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नम स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं अणिष्ठाय नम. स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं  
गरिष्ठगिरे नम. स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं विश्वमुपे नम. स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं विश्वसृजे नम स्वाहा  
। १४ । ॐ ह्रीं विश्वेशे नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं विश्वभुजे नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं विश्वनायकाय  
नम. स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं विश्वासिने नम. स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नम. स्वाहा । १९ ।  
ॐ ह्रीं विश्वजिते नम. स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं विजितान्तकाय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं विभावाय  
नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं विभयाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं वीराय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं  
विशोकाय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं विजराय नम स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं जरते नम स्वाहा । २७ ।  
ॐ ह्रीं विरागाय नम. स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं विरताय नम. स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं असङ्गाय नम. स्वाहा

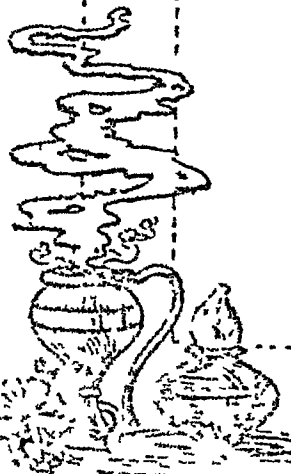
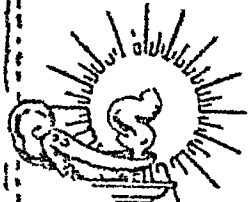




। ३० । ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं वीतमन्सराय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं विनेयजनतावन्धवे नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मपाय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं वियोगाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं योगविदे नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं विदुषे नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं विधात्रे नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं सुविद्ये नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं सुविद्ये नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं ज्ञातिभाजे नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्तये नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं शातिभाजे नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं वायुमूर्तये नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं असङ्गात्मने नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं वह्निमूर्तये नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं अश्वर्मदहे नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं सुयज्वने नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं यजमानात्मने नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं सुत्वने नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं सुत्रामपूजिताय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं ऋत्विजे नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं यज्ञपतये नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं यज्ञ्याय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं यज्ञागाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं अमृताय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं हविषे नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं व्योममूर्तये नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं अमूर्तात्मने नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं अचलाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं सोममूर्तये नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं सुसौम्यात्मने नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं मूर्यभूर्तये नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं महाप्रभाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं मत्रविदे नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं मत्रकृते नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं मत्रिणे नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं मत्रमूर्तये नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं अनन्तगाय नमः स्वाहा ।

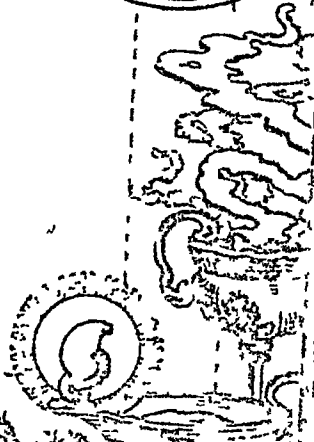
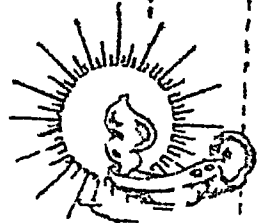


१०



। ७२ । ॐ ह्रीं स्वत्राय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं तन्त्रकृते नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं स्वान्ताय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं कृतान्तान्ताय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं कृतान्तकृते नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं कृतिने नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं कृतार्थाय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं सत्कृत्याय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं कृतकृत्ये नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं नित्याय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं अमृतात्मने नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं ब्रह्मसभवाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं ब्रह्मेशे नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभये नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं प्रशमात्मने नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः स्वाहा । ३०० ।

। १ ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं अशोकाय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं काय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं लष्टे नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं पद्मविष्टराय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं पद्मेशाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं पद्मसभृतये नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं पद्मनाभये नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं अनुत्तराय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं पद्मयोनये नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं जगद्योनये नमः स्वाहा ।

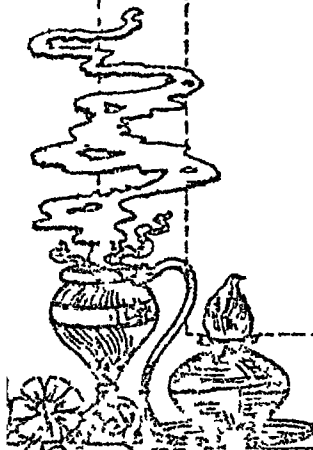
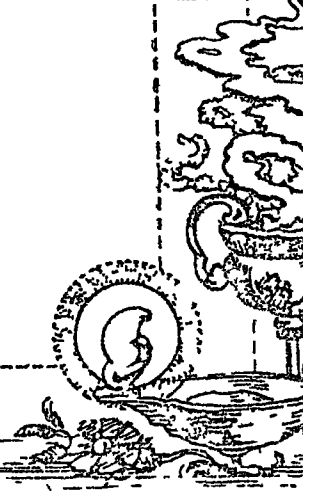


— सिद्ध चक्र

ह्रीं

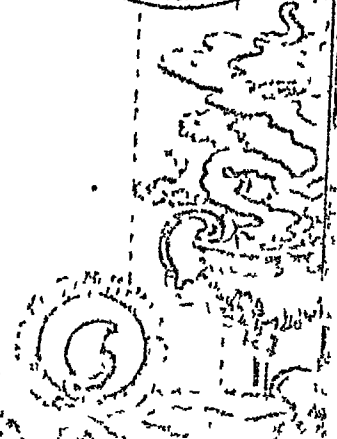
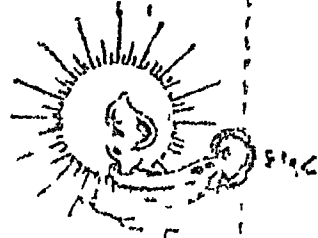
मंडल विधान —

स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं इत्याय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं स्तुत्याय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं स्तुती-  
श्वराय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं हर्षाकेशाय नमः स्वाहा  
। १७ । ॐ ह्रीं जितजेयाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं कृतक्रियाय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं गणा-  
धिपाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं गणाय्येष्टाय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं गण्याय नमः स्वाहा । २२ ।  
ॐ ह्रीं पुण्याय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं गणाग्रण्यै नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं गुणाक्राय नमः  
स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं गुणाम्भोव्ये नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं गुणज्ञाय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं  
गुणनायकाय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं गुणादरिणे नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने नमः स्वाहा  
। ३० । ॐ ह्रीं निर्गुणाय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं पुण्यगिरे नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं गुणाय नमः  
स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं शरण्याय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं  
पूनाय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं व्रेण्याय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं पुण्यनायकाय नमः स्वाहा  
। ३८ । ॐ ह्रीं अगण्याय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं पुण्यधिष्ठे नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं गुण्याय  
नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं पुण्यकृते नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं पुण्यशासनाय नमः स्वाहा । ४३ ।  
ॐ ह्रीं धर्मरामाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं गुणप्रामाय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं पुण्यापुण्य-  
निरोधकाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं पापापेनाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं विपापात्मने नमः स्वाहा  
। ४८ । ॐ ह्रीं विपाप्मने नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं  
निर्द्वन्दाय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं निर्मदाय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं शाताय नमः स्वाहा





। ५३ । ॐ ह्रीं निर्माहाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं निर्निमेषाय  
 नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं निराहागय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं निःक्रियाय नमः स्वाहा । ५८ ।  
 ॐ ह्रीं निरुपस्रवाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं निष्कलङ्काय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं निग्मत्तेनरो  
 नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं निर्धृतागमे नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं निरास्रवाय नमः स्वाहा । ६३ ।  
 ॐ ह्रीं विशालाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं त्रिपुलञ्चोनिषे नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अतुलाय  
 नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं अचिंत्यवैभवाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं सुसंवृत्ताय नमः स्वाहा । ६८ ।  
 ॐ ह्रीं सुगुमात्मने नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं सुभृते नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं सुनयनत्वचिंदे नमः  
 स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं एकविधाय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं महाविधाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं  
 मुनये नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं पण्डिताय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं पत्य नमः स्वाहा । ७६ ।  
 ॐ ह्रीं वीशाय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं त्रिधाविद्यय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं गान्धिणे नमः स्वाहा  
 । ७९ । ॐ ह्रीं विनेत्रे नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं विह्वलान्तकाय नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं पित्रे नमः  
 स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं पितामहाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं पात्रे नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं पवित्राय  
 नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं पावनाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं गतये नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं  
 वात्रे नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं गिणवगय नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं वर्याय नमः स्वाहा । ९० ।  
 ॐ ह्रीं वरदाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं परमाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं पुरो नमः स्वाहा  
 । ९३ । ॐ ह्रीं कवये नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं पुण्डरापुरुषाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं वर्पायमे





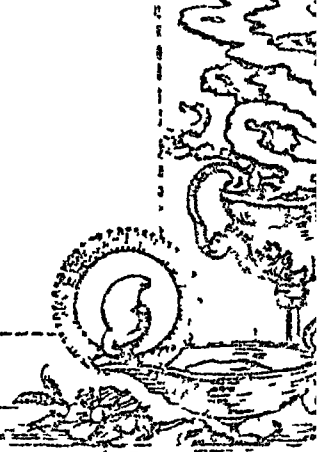
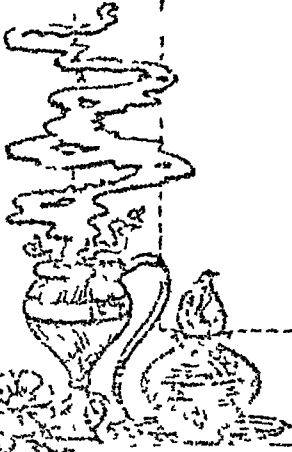
सिद्ध यज्ञ

ह्रीं

सिद्धविद्या

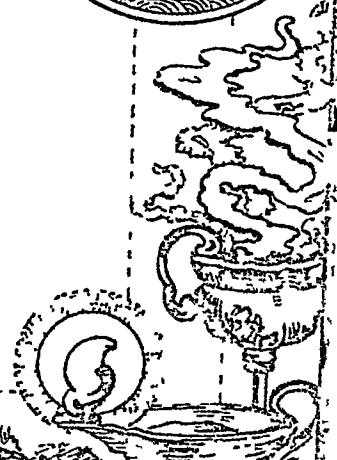
नमः स्वाहा । ०६ । ॐ ह्रीं वृषभाय नमः स्वाहा । ०७ । ॐ ह्रीं पुरवे नमः स्वाहा । ०८ । ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रसवाय नमः स्वाहा । ०९ । ॐ ह्रीं हेतवे नमः स्वाहा । १०० । ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय नमः स्वाहा । ४०० ।

ॐ ह्रीं श्रीवृत्तलक्षणाय नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं श्लक्ष्णाय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं लक्ष्णाय नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं निग्लक्षाय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं पुडरीमाक्षाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं पुष्कलाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं सिद्धसङ्कल्पाय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं महाबोधये नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं वर्धमानाय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं वेदाज्ञाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं वेदविदे नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं वेद्याय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं जातरूपाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं विदाकराय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं वेदवेद्याय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं स्वसवेद्याय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं विवेदाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं वदनावगय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं अव्यक्ताय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं अव्यक्तवाचे नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं युगादिकृते नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं युगाधाराय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं युगादये नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं जगदादिजाय नमः स्वाहा । ३३ ।





ॐ ह्रीं अनीन्द्राय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं अनीन्द्रियाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं वीन्द्राय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं महेन्द्राय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदशे नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं अनिन्द्रियाय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं अहमिन्द्रार्च्यय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं महेन्द्रमहिताय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं महते नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं उद्भवाय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं कारणाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं पारगाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं भवतारकाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं अगाढ्याय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं गहनाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं गुह्याय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं पगर्ध्याय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं अनन्तर्द्रये नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं अमेयर्द्रये नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं अचिन्त्यर्द्रये नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं समग्रविये नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं प्राग्रयाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं प्राग्रहाय नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं अभ्यग्रयाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं अग्रयाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं अग्रिमाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं अग्रजाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं महातपसे नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं महानेजसे नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं महोदकाय नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं महोदयाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं महायशसे नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं महाधाम्ने नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं महासत्त्वाय नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं महावृतये नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं महावैर्याय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं महावीर्याय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं महासम्पदं नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं महाबलाय नमः स्वाहा ।



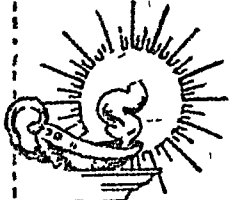
— सिद्ध चक्र

हीं

मंडल विधान —

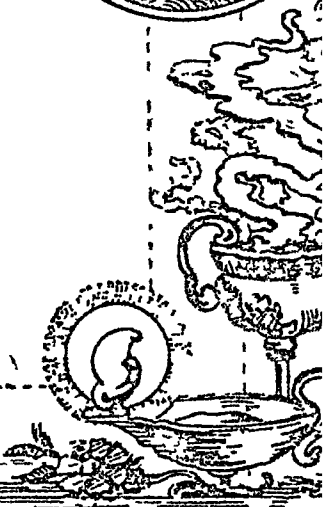
पृ०

८



। ७५ । ॐ ही महाशक्तये नमः स्वाहा । ७६ । ॐ हीं महाज्योतिषे नमः स्वाहा । ७७ । ॐ हीं  
महाभूतये नमः स्वाहा । ७८ । ॐ हीं महाद्युतये नमः स्वाहा । ७९ । ॐ हीं महामतये नमः स्वाहा  
। ८० । ॐ हीं महानीतये नमः स्वाहा । ८१ । ॐ हीं महाज्ञान्तये नमः स्वाहा । ८२ । ॐ हीं  
महादयाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ हीं महाप्राज्ञाय नमः स्वाहा । ८४ । ॐ हीं महाभागाय नमः स्वाहा  
। ८५ । ॐ हीं महानन्दाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ हीं महारुचये नमः स्वाहा । ८७ । ॐ हीं  
महामहसे नमः स्वाहा । ८८ । ॐ हीं महाकर्तव्ये नमः स्वाहा । ८९ । ॐ हीं महामान्तये नमः स्वाहा  
। ९० । ॐ हीं महावपुषे नमः स्वाहा । ९१ । ॐ हीं महादानाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ हीं महाज्ञानाय  
नमः स्वाहा । ९३ । ॐ हीं महायोगाय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ हीं महागुणाय नमः स्वाहा । ९५ ।  
ॐ हीं महामहपतये नमः स्वाहा । ९६ । ॐ हीं प्राप्तमहाकल्याणपत्रमाय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ हीं  
महाप्रभवे नमः स्वाहा । ९८ । ॐ हीं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ हीं महेश्वराय  
नमः स्वाहा । १०० ।=। ५०० ।

ॐ हीं महामुनये नमः स्वाहा । १ । ॐ हीं महामौनिने नमः स्वाहा । २ । ॐ हीं महाव्यानिने  
नमः स्वाहा । ३ । ॐ हीं महादमाय नमः स्वाहा । ४ । ॐ हीं महाक्षमाय नमः स्वाहा । ५ । ॐ हीं  
महाशीलाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ हीं महायज्ञाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ हीं महामखाय नमः स्वाहा  
। ८ । ॐ हीं महाव्रतपतये नमः स्वाहा । ९ । ॐ हीं महाय नमः स्वाहा । १० । ॐ हीं महाकान्तिधराय



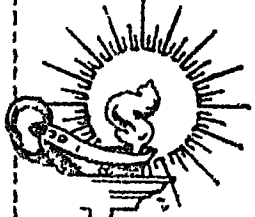
सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडलविधान

पृ०

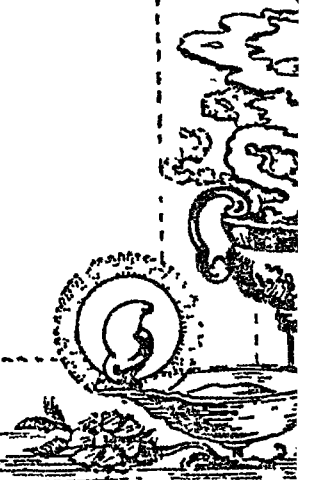
८



नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं अधिपाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः स्वाहा । १३ ।  
ॐ ह्रीं अमेयाय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं महोपायाय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं महोमयाय नमः स्वाहा  
। १६ । ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं मन्त्रे नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं महामन्त्राय  
नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं महायतये नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं महानादाय नमः स्वाहा । २१ ।  
ॐ ह्रीं महाघोषाय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं महेश्याय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं महसांपतये नमः  
स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं महाध्वरवराय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं धुर्याय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं  
महौदार्याय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं महिष्ठ्याय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं महान्मने नमः स्वाहा  
। २९ । ॐ ह्रीं महसाधने नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं महर्षये नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं महिनोदयाय  
नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं महाक्लेशकुशाय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं शूराय नमः स्वाहा । ३४ ।  
ॐ ह्रीं महाभूतपतये नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं गुरवे नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं महापराक्रमाय नमः  
स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं महाक्रोवरिपत्रे नमः स्वाहा । ३९ ।  
ॐ ह्रीं वशिणे नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं महाभवाच्चिसतारिणे नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं महामोहाद्रि-  
भूदनाय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं महागुणाकराय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं क्षान्ताय नमः स्वाहा  
। ४४ । ॐ ह्रीं महायोगेश्वराय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं शमिने नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं  
महाव्यानपतये नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं ध्यातमहाधर्माय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं महात्रनाय नमः  
स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं महाकर्मारिपत्रे नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं आन्मज्ञाय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं



महादेवाय नम. स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं महेशिंत्रि नम स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं सर्वज्ञेगापहाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं साग्ने नम स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं सर्वज्ञेगोपहाय नम स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं हगय नम. स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं असन्ध्येयाय नम. स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं अप्रमेयात्मने नम स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं शमात्मने नम. स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं प्रशमाकराय नम स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं सर्वयोगीश्वराय नम. स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं अचिन्त्याय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं श्रुतात्मने नम. स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं त्रिष्टरश्रवणे नम स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं दान्तात्मने नम. स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं दमनीर्येशाय नम. स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं योगात्मने नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं ज्ञानसर्वगाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं प्रवानाय नम. स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं आत्मने नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं प्रकृतये नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं परमाय नम. स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं परमोदयाय नम स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं प्रक्षीणवन्धाय नम स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं कर्मारये नम. स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं क्षेमकृते नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं क्षेमशासनाय नम. स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं प्रणवाय नम स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं प्रणवाय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं प्राणाय नम. स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं प्राणदाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं प्रणतेश्वराय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं प्रमाणाय नम. स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं प्रणधये नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं दक्षाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं दक्षिणाय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं अर्च्यवे नम. स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं अर्च्यगय नम. स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं आनन्दाय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं नन्दनाय नम. स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं नन्दाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं वन्द्याय नम. स्वाहा । ९३ ।



— सिद्ध चक्र

ह्रीं

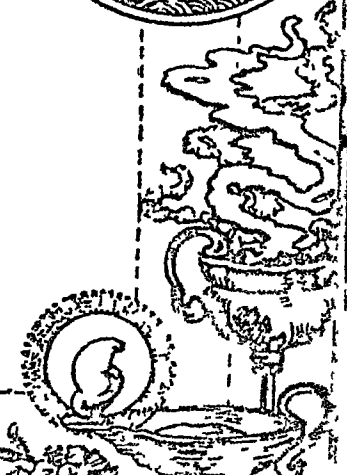
मंडलविधान —

५०

८

ॐ ह्रीं अनिन्द्याय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं कामत्रे नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं कामदाय नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं काम्याय नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं कामधेनवे नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं अरिंजयाय नमः स्वाहा । १०० । =६००

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं अप्राकृताय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं वैकृतान्तकृते नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं अनन्तकृते नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं कान्तगवे नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं कान्ताय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं चिन्तामणये नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं अभीष्टदाय नमः स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं अजिताय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं जितकामारये नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं अमिताय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं अभितशासनाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं जितक्रोधाय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं जितामित्राय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं जितहेशाय नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं जितान्तकाय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं जिनेन्द्राय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं परमानन्दाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं मुनीन्द्राय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं दुन्दुभिस्यनाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं महेन्द्रवन्द्याय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं योगीन्द्राय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं यतीन्द्राय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं नाभिनन्दनाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं नाभेयाय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं नाभिजाय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं अज्ञानाय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं सुव्रताय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं मनवे नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं उत्तमाय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं अभेद्याय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं



विष्णु चक्र

ह्रीं

संस्कृतविद्यालय

५०

८



अनत्ययाय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं अनारवते नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं अधिकाय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं अविगुरवे नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं सुगिरे नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं सुमेवसे नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं विक्रमिणे नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं स्वामिने नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं दुराधर्षाय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं विशिष्टाय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं शिष्टभुजे नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं शिष्टाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं प्रत्ययाय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं कामनाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं अनर्वाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं क्षेमिणे नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं क्षेमकराय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं अक्षय्याय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं क्षेमवर्मपतये नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं क्षमिणे नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं अग्राहाय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं ज्ञाननिग्राहाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं ध्यानगम्याय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं निरुत्तराय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं सुकृतिने नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं धातवे नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं इज्यार्हाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं सुनयाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं चतुराननाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं श्रीनिवासाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं चतुरास्याय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं सत्यात्मने नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं सत्यविज्ञानाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं सत्यवाचे नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं

१ सहस्रनाम पूजनमे " यनवाय " श्री जगद् " नयाय " पाठ पाया जाता है ।



सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान

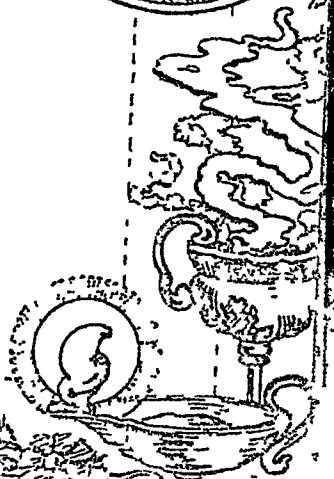
५०



मत्स्यशासनाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं सत्यसंधानाय नमः  
स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं सत्याय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं सत्यपरायणाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं  
स्थेयसे नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं स्थवीयसे नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं नेदीयसे नमः स्वाहा । ७६ ।  
ॐ ह्रीं दवीयसे नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं दूरदर्शनाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं अणोरणीयसे नमः  
स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं अनरात्रे नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं गरीयसामाचगुरवे नमः स्वाहा । ८१ ।  
ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं सदातृप्ताय  
नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं सदागतये नमः स्वाहा । ८६ ।  
ॐ ह्रीं सदासौख्याय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं सदाविद्याय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं सदोदयाय  
नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं सुघोषाय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं सुमुखाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं  
सोम्याय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं सुखदाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं सुहिताय नमः स्वाहा । ९४ ।  
ॐ ह्रीं सुहृदे नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं सुगुप्ताय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं गुप्तिभृते नमः स्वाहा  
। ९७ । ॐ ह्रीं गोपत्रे नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं दमेश्वराय  
नमः स्वाहा । १०० । =७००

ॐ ह्रीं बृहद्बृहस्पतये नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं वाग्मिने नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं वाचस्पतये

१ स पूजा में बृहते और बृहस्पतये अलहदा २ नाम हैं और आगे चलकर निर्मलामोघशासनाय एकही नाम रखना है परन्तु आदि पुराण का हिंदी टीका बृहद्बृहस्पतये एक और निर्मलाय तथा अमोघशासनाय भिन्न २ नाम हैं ।





सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान

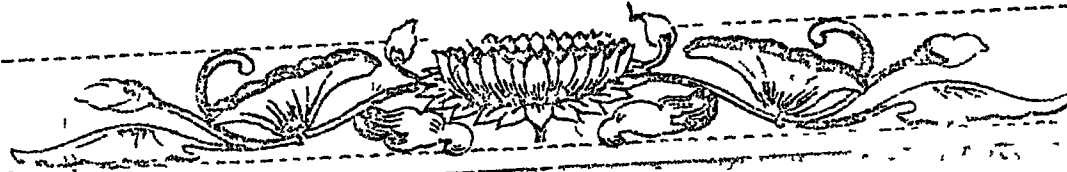
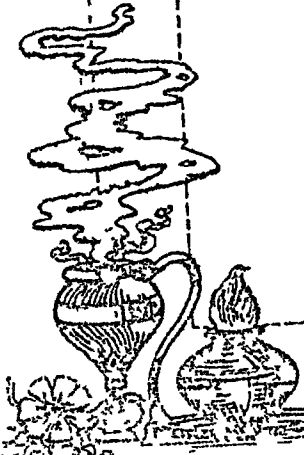
५०



नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं उदारविये नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं मनीषिणे नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं  
विषणाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं धीमते नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं शेमुपीशाय नमः स्वाहा । ८ ।  
ॐ ह्रीं गिरौपनये नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं नैकरूपाय नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं नयोत्तुगाय नमः  
स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं नैकात्मने नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं नैकधर्मकृते नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं  
अविज्ञेयाय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं कृतज्ञाय नमः स्वाहा  
। १६ । ॐ ह्रीं कृतलक्ष्णाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं ज्ञानगर्भाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं  
दयागर्भाय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं प्रमास्वराय नमः स्वाहा  
। २१ । ॐ ह्रीं पद्मगर्भाय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं जगद्गर्भाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं  
ह्रमगर्भाय नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं सुदर्शनाय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं लक्ष्मीवते नमः स्वाहा  
। २६ । ॐ ह्रीं त्रिदशध्वजाय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं द्वीयसे नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं इनाय  
नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं ईशित्रे नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं मनोहराय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं  
मनोज्ञागाय नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं वीराय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं गभीरशासनाय नमः स्वाहा  
। ३४ । ॐ ह्रीं वर्मयूपाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं दयायागाय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं धर्मनेमये  
नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं मुनीश्वराय नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय नमः स्वाहा । ३९ ।  
ॐ ह्रीं देवाय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं कर्मज्ञे नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं वर्मघोषणाय नमः स्वाहा  
। ४२ । ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं

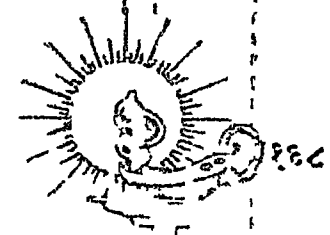


५६७





निर्मलाय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं अमोघशासनाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं मुखपाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं सुभगाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं न्यागिने नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं समयज्ञाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं समाहिताय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं मुस्थिताय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं स्वास्थ्यभाजे नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं स्वस्थाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं नीगजस्त्राय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं निरुद्धवाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं अलेपाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं निष्कलङ्कात्मने नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं गतस्पृहाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं वश्येन्द्रियाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं विमुक्तात्मने नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं निःसपत्नाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं जितेन्द्रियाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं प्रशान्ताय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अनन्तैधामर्षिये नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं मंगलाय नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं मलंग्न नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं अनवाय नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं अनीदृशे नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं उपमाभूताय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं दिष्ट्ये नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं दैवाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं अगोचराय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं अमूर्ताय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं मूर्तिमते नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं एकस्मै नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं नैकस्मै नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं नानैकतत्त्वदृशे



१ म पूजा में इसके दो नाम पृथक् २ हैं । आदि पुराण में एकही नाम रक्खा है, आगे चलकर आ पु. में "मंगल" नाम भी दिया है जो कि स पूजा में नहीं है ।

# सिद्ध चक्र हा

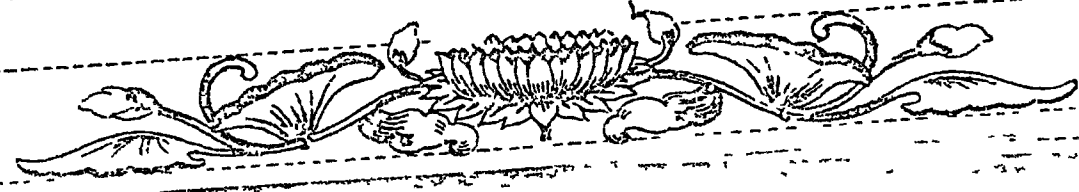
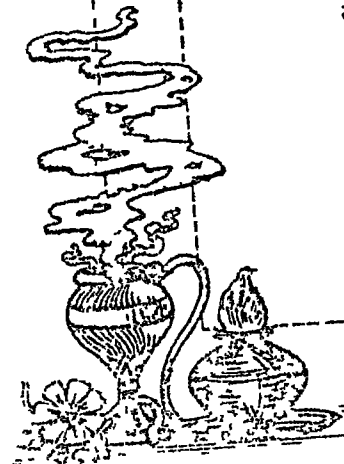
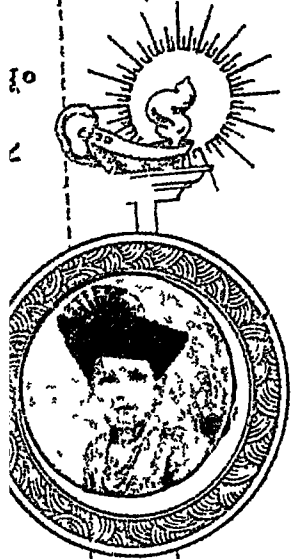
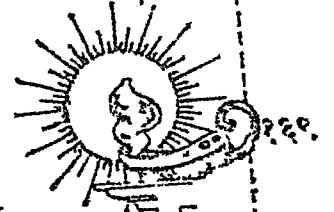
मडल

१०

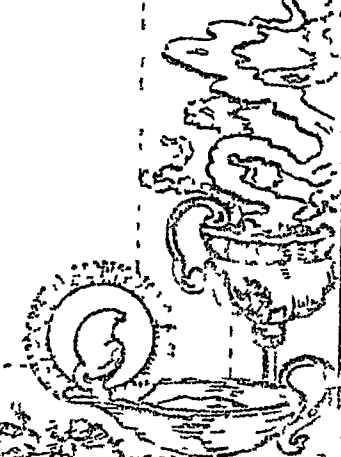
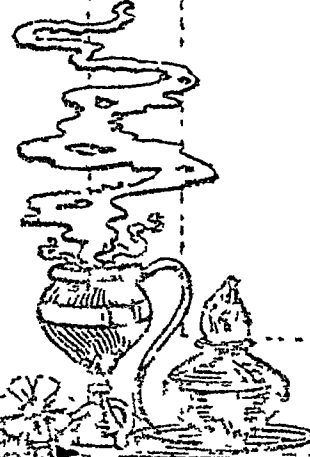
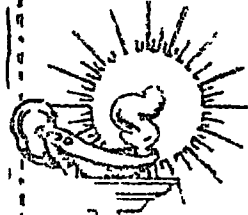
८

नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं अथ्यात्मगम्याय नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं अगम्यात्मने नमः स्वाहा । ८१ ।  
 ॐ ह्रीं योगविदे नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं योगिबन्दिताय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं सर्वत्रगाय नमः  
 स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं सदामाविने नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं त्रिकालविपर्ययदेशे नमः स्वाहा । ८६ ।  
 ॐ ह्रीं शक्राय नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं शवदाय नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं दान्ताय नमः स्वाहा  
 । ८९ । ॐ ह्रीं दमिने नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं क्षान्तिपरायणाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं अधिपाय  
 नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं परमानन्दाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं परात्मज्ञाय नमः स्वाहा । ९४ ।  
 ॐ ह्रीं पगत्पराय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं अभ्यर्च्या  
 नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं त्रिजगत्मगलोदयाय नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं त्रिजगत्पतिपूज्याग्रये नमः स्वाहा  
 । ९९ । ॐ ह्रीं त्रिलोकाप्रशिखामणये नमः स्वाहा । १०० । = ८००

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शिने नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं लोकेशाय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं लोकधामं  
 नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं दृढव्रताय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं सर्वलोकातिगाय नमः स्वाहा । ५ ।  
 ॐ ह्रीं पूज्याय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं सर्वलोकैकसारथये नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं पुराणाय नमः  
 स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं पुरुपाय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं पूर्वस्मै नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं कृतपूर्वाङ्ग-  
 विस्तराय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं आदिदेवाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं पुराणाद्याय नमः स्वाहा  
 । १३ । ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं अधिदेवतायै नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं युगमुख्याय

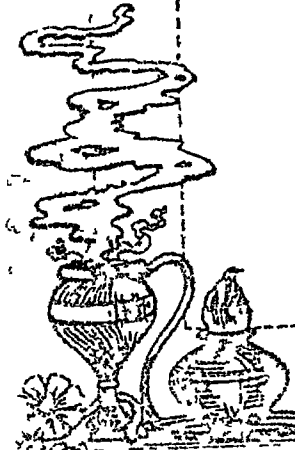


नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं युगज्येष्ठाय नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं युगादिस्थितिदेशकाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं कल्याणवर्णाय नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं कल्याणाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं कल्याय नमः स्वाहा । २१ । ॐ ह्रीं कल्याणलक्षणाय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं दीप्तकल्याणात्मने नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं विकल्पमाय नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं विकलङ्गाय नमः स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं कलातीताय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं कलावराय नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं जगद्वन्ववे नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं जगद्विभवे नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं जगद्धिनैपिणे नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं लोकत्राय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं सर्वगाय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं जगदप्रजाय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं चराचरगुरवे नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं गोप्याय नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं गूढात्मने नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं गूढगोचराय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं सद्योजाताय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं प्रकाशात्मने नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं ज्वलज्वलनसप्रभाय नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं आदित्यवर्णाय नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं मर्माभाय नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं कनकप्रभाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णाय नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं रुक्माभाय नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं मूर्यकोटिसमप्रभाय नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं तपनीयनिभाय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं तुगाय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं बालार्काभाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं अनलप्रभाय नमः स्वाहा । ५५ ।



ॐ ह्रीं सन्ध्याभ्रवभ्रवे नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं हेमाभाय नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं तप्तचामीकरच्छ्रवये नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं निष्टप्रफनकच्छ्रायाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं कनक्काञ्चनसन्निभाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं शान्तकुम्भनिभप्रभाय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं धुम्नाभाय नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं ज्ञानरूपाभाय नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं दीप्तजाम्बूनदद्युतये नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं सुव्रौतफलव्रौतश्रिये नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं हाटकद्युतये नमः स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं पुष्टिदाय नमः स्वाहा । ७१ । ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं स्पष्टाय नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय नमः स्वाहा । ७४ । ॐ ह्रीं क्षमाय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं अमोघाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं प्रशखे नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं शासित्रे नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं स्वभुवे नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं शान्तिनिष्ठाय नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं मुनिज्येष्ठाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं शिवतातये नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं शिवप्रदाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं शान्तिदाय नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं शान्तिकृते नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं शान्तये नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं कान्तिमते नमः स्वाहा । ८९ । ॐ ह्रीं कामितप्रदाय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं श्रेयोनिधये नमः स्वाहा ।

१ मुद्रितादिपुराणेषु “ तप्तचामीकरप्रभ ”, “ तप्तजाम्बूनदद्युति ” इतिपाठ ।



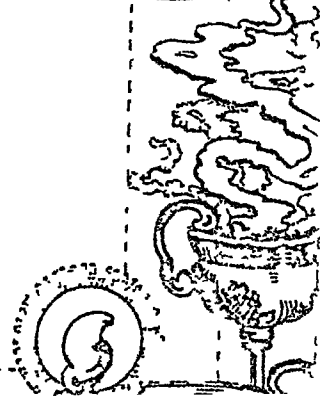
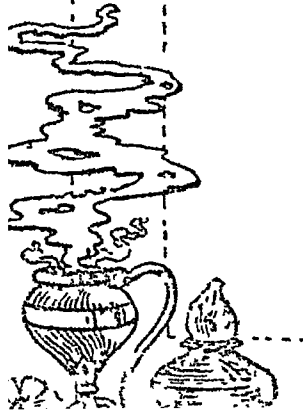
सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडलविधान

। ९१ । ॐ ह्रीं अधिष्ठानाय नमः स्वाहा । ९२ । ॐ ह्रीं अप्रतिष्ठाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं  
प्रतिष्ठिताय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं सुस्थिताय नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं स्थावराय नमः स्वाहा  
। ९६ । ॐ ह्रीं स्थाराणे नमः स्वाहा । ९७ । ॐ ह्रीं प्रथीयमे नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं प्रथिताय  
नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं पृथवे नमः स्वाहा । १०० । = ९००

ॐ ह्रीं दिग्वाससे नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं वातरशनाय नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं निर्प्रन्थेशाय  
नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं निरम्बराय नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं निष्किञ्चनाय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं  
निराशसाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं अमोमुहाय नमः स्वाहा । ८ ।  
ॐ ह्रीं तेजोराशये नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं अनन्तौजसे नमः स्वाहा । १० । ॐ ह्रीं ज्ञानाब्ध्ये नमः  
स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं शीलसागराय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं तेजोमयाय नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं  
अमिनज्योतिषे नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तये नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं तमोपहाय नमः स्वाहा  
। १६ । ॐ ह्रीं जगन्चूडामणये नमः स्वाहा । १७ । ॐ ह्रीं दीप्ताय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं शक्ते  
नमः स्वाहा । १९ । ॐ ह्रीं विघ्नविनायकाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं कलिघ्नाय नमः स्वाहा । २१ ।  
ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नाय नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकाय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं  
अनिन्द्रालवे नमः स्वाहा । २४ । ॐ ह्रीं अतन्द्रालवे नमः स्वाहा । २५ । ॐ ह्रीं जागरूकाय नमः  
स्वाहा । २६ । ॐ ह्रीं प्रामामयाय नमः स्वाहा । २७ । ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये नमः स्वाहा । २८ । ॐ ह्रीं

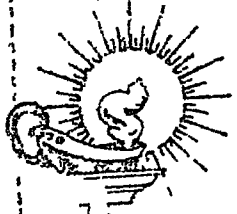


सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान

५०



जगज्ज्योतिषे नमः स्वाहा । २९ । ॐ ह्रीं वर्मराजाय नमः स्वाहा । ३० । ॐ ह्रीं प्रजाहिताय नमः स्वाहा । ३१ । ॐ ह्रीं मुमुक्षवे नमः स्वाहा । ३२ । ॐ ह्रीं बन्धमोक्षज्ञाय नमः स्वाहा । ३३ । ॐ ह्रीं जिताक्षाय नमः स्वाहा । ३४ । ॐ ह्रीं जितमन्मथाय नमः स्वाहा । ३५ । ॐ ह्रीं प्रशान्तरसशैलूपाय नमः स्वाहा । ३६ । ॐ ह्रीं भव्यपेटकनायकाय नमः स्वाहा । ३७ । ॐ ह्रीं मूलकर्त्रे नमः स्वाहा । ३८ । ॐ ह्रीं अखिलज्योतिषे नमः स्वाहा । ३९ । ॐ ह्रीं मलघ्नाय नमः स्वाहा । ४० । ॐ ह्रीं मूलकारणाय नमः स्वाहा । ४१ । ॐ ह्रीं आप्ताय नमः स्वाहा । ४२ । ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः स्वाहा । ४३ । ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः स्वाहा । ४४ । ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये नमः स्वाहा । ४५ । ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे नमः स्वाहा । ४६ । ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे नमः स्वाहा । ४७ । ॐ ह्रीं वचसामीशाय नमः स्वाहा । ४८ । ॐ ह्रीं मारजिते नमः स्वाहा । ४९ । ॐ ह्रीं विश्वभावविदे नमः स्वाहा । ५० । ॐ ह्रीं सुतनवे नमः स्वाहा । ५१ । ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्ताय नमः स्वाहा । ५२ । ॐ ह्रीं सुगताय नमः स्वाहा । ५३ । ॐ ह्रीं हतदुर्नयाय नमः स्वाहा । ५४ । ॐ ह्रीं श्रीशाय नमः स्वाहा । ५५ । ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः स्वाहा । ५६ । ॐ ह्रीं वीतभिये नमः स्वाहा । ५७ । ॐ ह्रीं अभयकराय नमः स्वाहा । ५८ । ॐ ह्रीं उत्सनदोषाय नमः स्वाहा । ५९ । ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः स्वाहा । ६० । ॐ ह्रीं निश्चलाय नमः स्वाहा । ६१ । ॐ ह्रीं लोकवत्सलाय नमः स्वाहा । ६२ । ॐ ह्रीं लोकोत्तराय नमः स्वाहा । ६३ । ॐ ह्रीं लोकपतये नमः स्वाहा । ६४ । ॐ ह्रीं लोकचक्षुषे नमः स्वाहा । ६५ । ॐ ह्रीं अपारधिये नमः स्वाहा । ६६ । ॐ ह्रीं धीरत्रिये नमः स्वाहा । ६७ । ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गाय नमः स्वाहा । ६८ । ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः



सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान

स्वाहा । ६९ । ॐ ह्रीं मन्वृत्तपूतवाचे नमः स्वाहा । ७० । ॐ ह्रीं प्रजापारमिताय नमः स्वाहा । ७१ ।  
ॐ ह्रीं प्राज्ञाय नमः स्वाहा । ७२ । ॐ ह्रीं यतये नमः स्वाहा । ७३ । ॐ ह्रीं नियमितेन्द्रियाय नमः स्वाहा  
। ७४ । ॐ ह्रीं भद्रन्ताय नमः स्वाहा । ७५ । ॐ ह्रीं भद्रकृते नमः स्वाहा । ७६ । ॐ ह्रीं भद्राय नमः  
स्वाहा । ७७ । ॐ ह्रीं कल्पवृक्षाय नमः स्वाहा । ७८ । ॐ ह्रीं वरप्रदाय नमः स्वाहा । ७९ । ॐ ह्रीं  
समुन्मूलितकर्माग्ये नमः स्वाहा । ८० । ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुद्धाग्ये नमः स्वाहा । ८१ । ॐ ह्रीं कर्मण्याय  
नमः स्वाहा । ८२ । ॐ ह्रीं कर्मठाय नमः स्वाहा । ८३ । ॐ ह्रीं प्राशवे नमः स्वाहा । ८४ । ॐ ह्रीं  
हेयादेयविचक्षणाय नमः स्वाहा । ८५ । ॐ ह्रीं अनन्तशक्तये नमः स्वाहा । ८६ । ॐ ह्रीं अच्छेद्याय  
नमः स्वाहा । ८७ । ॐ ह्रीं त्रिपुरारये नमः स्वाहा । ८८ । ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः स्वाहा । ८९ ।  
ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः स्वाहा । ९० । ॐ ह्रीं त्र्यम्बकाय नमः स्वाहा । ९१ । ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय नमः स्वाहा  
। ९२ । ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः स्वाहा । ९३ । ॐ ह्रीं समन्तभद्राय नमः स्वाहा । ९४ । ॐ ह्रीं  
शान्तारये नमः स्वाहा । ९५ । ॐ ह्रीं धर्माचार्याय नमः स्वाहा । ९६ । ॐ ह्रीं दयानिधये नमः स्वाहा  
। ९७ । ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने नमः स्वाहा । ९८ । ॐ ह्रीं जितानङ्गाय नमः स्वाहा । ९९ । ॐ ह्रीं  
कृपालवे नमः स्वाहा । १०० । = १०००

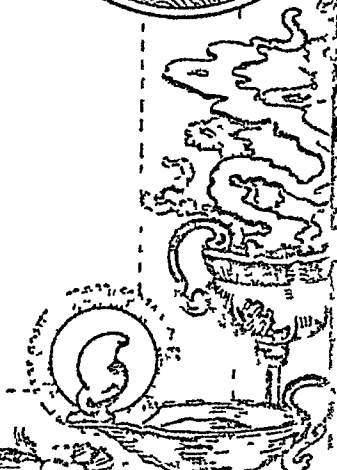
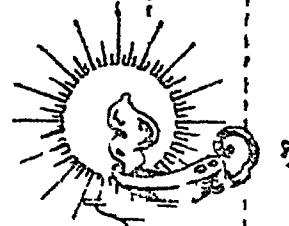
ॐ ह्रीं वर्मदेशकाय नमः स्वाहा । १ । ॐ ह्रीं शुभयवे नमः स्वाहा । २ । ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय  
नमः स्वाहा । ३ । ॐ ह्रीं पुण्यराशये नमः स्वाहा । ४ । ॐ ह्रीं अनामयाय नमः स्वाहा । ५ । ॐ ह्रीं

५०

८



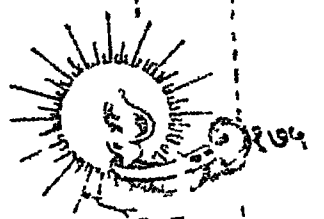
१७४





धर्मपालाय नमः स्वाहा । ६ । ॐ ह्रीं जगत्पालाय नमः स्वाहा । ७ । ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः  
 स्वाहा । ८ । ॐ ह्रीं उदिनोदिनमाहात्म्याय नमः स्वाहा । ९ । ॐ ह्रीं व्यवहारसुपुत्राय नमः स्वाहा । १० ।  
 ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षगुणाय नमः स्वाहा । ११ । ॐ ह्रीं सिद्धिपुरीपान्थाय नमः स्वाहा । १२ । ॐ ह्रीं  
 सहस्रध्वनये नमः स्वाहा । १३ । ॐ ह्रीं योगकिङ्किर्णिलेपनोद्यताय नमः स्वाहा । १४ । ॐ ह्रीं त्रुट्कर्मपाशाय  
 नमः स्वाहा । १५ । ॐ ह्रीं परमनिर्जराय नमः स्वाहा । १६ । ॐ ह्रीं निष्पीतानन्तपर्यायाय नमः स्वाहा  
 । १७ । ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रशालेशाय नमः स्वाहा । १८ । ॐ ह्रीं पचलच्चक्रस्थितये नमः स्वाहा  
 । १९ । ॐ ह्रीं द्रव्यसिद्धाय नमः स्वाहा । २० । ॐ ह्रीं द्वासप्ततिप्रकृत्याशिपे नमः स्वाहा । २१ ।  
 ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकृतिप्रणुते नमः स्वाहा । २२ । ॐ ह्रीं ज्ञाननिर्भराय नमः स्वाहा । २३ । ॐ ह्रीं  
 ज्ञानैकचिर्जावधनाय नमः स्वाहा । २४ । १०२४

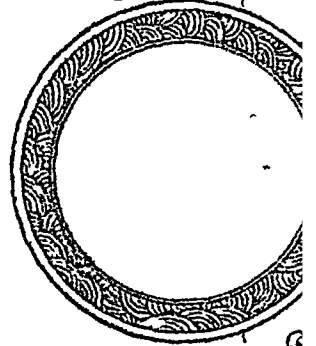
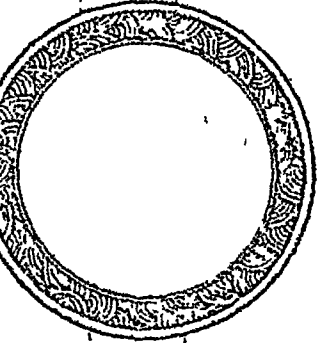
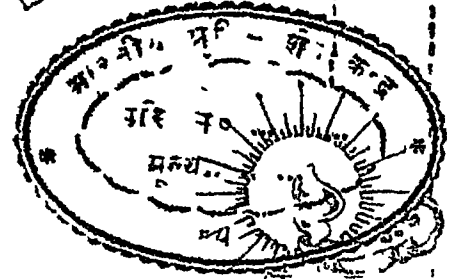
इत्यष्टमदले चतुर्विंशत्युत्तरसहस्रनामपूजा संपूर्णा ।



सिद्ध चक्र

ह्रीं

मंडल विधान



भारतीय श्रुति-दर्शन केन्द्र  
जयपुर

